

कौमी पत्रिका

राष्ट्रीय दैनिक अखबार

R.N.I. No. UP-HIN/2007/21472 सम्पादक - गुरुचर सिंह बख्तर वर्ष 17 अंक 270 qaumipatrikahindi 011-41509689, 23315814, 9312262300 गाजियाबाद संवत् 2077-78, पेज (12) मूल्य 3.00 रुपये (इर्वाई शल्क 50 पैसे अतिरिक्त)

VISIT:
www.qaumipatrika.in
Email: qpatrika@gmail.com

भूखलन पीड़ितों के लिए भारतीयों की एकजुटता जरूरी: राहुल

नई दिल्ली, 4 जुलाई। वायनाड में भूखलन से प्रभावित लोगों की सहायता के लिए शनिवार को लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने कर्नाटक के लोगों और सरकार का धन्यवाद किया। उन्होंने कहा कि भूखलन पीड़ितों के लिए 100 घर बनाने की मुख्यमंत्री की प्रतिबद्धता महत्वपूर्ण है और पुनर्वास प्रयासों की दिशा में अच्छा कदम है। कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया ने घोषणा की कि उनकी सरकार केरल में भूखलन प्रभावित जिले के पीड़ितों के लिए 100 घर बनाएगी। सिद्धारमैया ने एक्स पर पोस्ट में कहा, वायनाड में भूखलन की घटना दुःख है। इस दुःख परिस्थिति में कर्नाटक के साथ एकजुटता से खड़ा है। मैंने केरल के मुख्यमंत्री पिनरयी विजयन को हमारे समर्थन का आश्वासन दिया है और घोषणा की है कि कर्नाटक पीड़ितों के लिए 100 घरों का निर्माण करेगा। सिद्धारमैया की पोस्ट को साझा करते हुए राहुल गांधी ने एक्स पर कहा, मैं वायनाड में इस कठिन समय के दौरान उदार समर्थन के लिए कर्नाटक के लोगों और सरकार का बहुत आभारी हूँ। उन्होंने कहा, भूखलन के पीड़ितों के लिए 100 घर बनाने की आपकी प्रतिबद्धता पुनर्वास प्रयासों की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। कहा कि भारतीयों की करुणा और एकजुटता वह ताकत है जिसकी वायनाड को अभी जरूरत है। कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्ढा ने भी सीएम सिद्धारमैया और कर्नाटक के लोगों को करुणा और मानवता के इस प्रदर्शन के लिए धन्यवाद दिया। राहुल गांधी ने एक्स पर एक अन्य पोस्ट में कहा, मैं कलपेट्टा रेंज के वन अधिकारियों के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने भारी बारिश के बीच कठिन इलाके से गुजरते हुए अपनी जान जोखिम में डाली और संकट में फंसे एक परिवार को सफलतापूर्वक बचाने के लिए 8 घंटे का अथक ऑपरेशन किया। मैं सेना के जवानों, एनडीआरएफ, एसडीआरएफ, वायनाड प्रशासन, पंचायत सदस्यों, पार्टी लाइनरों के कार्यक्रमों और हर उदार स्वयंसेवक को भी तहे दिल से धन्यवाद देता हूँ जो बचाव, राहत और पुनर्वास प्रयासों में लगातार मदद कर रहे हैं।

भाजपा सरकार की जनविरोधी नीतियों से सभी वर्ग परेशान: सुनीता केजरीवाल

सिम्ली कौर बख्तर
सोहना, 4 जुलाई। हरियाणा में आम आदमी की सरकार बनेगी। लोग वर्तमान भाजपा सरकार से त्रस्त हैं और बदलाव के मूड में हैं। भाजपा सरकार की जनविरोधी नीतियों के चलते सभी वर्ग दुखी और परेशान हैं। जिसका खासियाज आगामी चुनावों में भाजपा को उठाना पड़ेगा। यह बात आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक और दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की धर्मपत्नी सुनीता केजरीवाल ने कस्बे में आयोजित बदलाव जनसभा में उपस्थित जनसमूह के समक्ष कही। इस मौके पर पांच गांटी की भी लोगों के समक्ष रखा। रविवार को स्थानीय अनाज मंडी में आम आदमी पार्टी की बदलाव जनसभा का आयोजन किया। जनसभा स्थल पर सुबह से ही लोगों के आने का सिलसिला आरंभ हो गया था। उसम भारी गर्मी के बावजूद भी लोग जनसभा में अंत तक जमे रहे थे। लोगों के मनोरंजन के लिए रागिनी कार्यक्रम का भी आयोजन था। सुरक्षा को लेकर पुलिस के

जवान व पार्टी के कार्यकर्ता मुस्तैद रहे। जनसभा में भारी भीड़ को देखकर आयोजक फूले नहीं समा रहे थे। मंच पर पार्टी के वरिष्ठ नेतागण मौजूद रहे। आयोजकों द्वारा जनसभा में आने वाले सभी लोगों के अरविंद केजरीवाल के नारों से गूंज उठा था। आयोजक धर्मन्द् खटाना ने सुनीता केजरीवाल व आप प्रदेश अध्यक्ष सुशील गुप्ता का स्मृति चिन्ह देकर सम्मान किया। जनसभा में सुनीता केजरीवाल ने अपने भाषण की शुरुआत सभी को राम राम करके की। उन्होंने कहा कि अरविंद केजरीवाल हरियाणा का लाल है। जिसने दिल्ली व पंजाब को बदल कर सभी प्रकार की सुख सुविधाएं उपलब्ध कराई हैं। इसी प्रकार की सुविधाएं आने वाले समय में हरियाणा के लोगों को भी दी जाएंगी। किन्तु इसके लिए प्रदेश में बदलाव अत्यन्त जरूरी है। उन्होंने आप पार्टी की पांच गांटी क्रमशः शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य, फ्री बिजली, महिलाओं को एक हजार रुपये माह मानदेय से अवागत कराया और सरकार बनने पर सभी गांटी को पूरा करके प्रदेश के लोगों को खुशहाल जीवन बिताने का वायदा किया है। सुनीता केजरीवाल ने कहा कि अरविंद केजरीवाल द्वारा किये गए कार्यों से मोदी सरकार जलती है। जिसके कारण केजरीवाल को जेल में डाल दिया गया है।

मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से बांध से पानी छोड़ने पर ध्यान देने का अनुरोध

कोलकाता, 4 जुलाई। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने रविवार को कहा कि उन्होंने झारखंड के सीएम हेमंत सोरेन से बातचीत की है। ममता बनर्जी ने कहा कि बातचीत के दौरान उन्होंने झारखंड के बांधों से पानी छोड़ने को लेकर हस्तक्षेप करने का अनुरोध किया है। ममता बनर्जी ने दावा किया है कि झारखंड के बांधों से छोड़े जाने वाले पानी की वजह से पश्चिम बंगाल में बाढ़ की स्थिति पनप रही है। उधर, झारखंड और पश्चिम बंगाल में विभिन्न हाइड्रो पावर प्रोजेक्ट का संचालन करने वाली कंपनी दामोदर वैली कोर्पोरेशन (डीवीसी) का कहना है कि बारिश झारखंड में इस बार बारिश की कमी देखने को मिली है। डीवीसी का यह भी कहना है कि उसे निचले इलाकों में किसी तरह की बाढ़ का खतरा नजर नहीं आया है। सोशल मीडिया में एक एक्स पर ममता बनर्जी ने लिखा, 'मैंने झारखंड के सीएम हेमंत सोरेन से बात की है। मैंने उनसे बाढ़ के हालातों के बारे में चर्चा की है। बातचीत के दौरान तनुचाट से पानी छोड़ने पर चर्चा की गई, जिस वजह से पश्चिम बंगाल में बाढ़ के हालात पनपे हैं। मैंने उन्हें बताया कि झारखंड द्वारा पानी छोड़ने की वजह से पश्चिम बंगाल में बाढ़ आ गई है।

पंजाब में 43 हजार नौकरियां दी हैं, चाहे फोन कर पूछ लो: मुख्यमंत्री मान कौमी संवाददाता

सोनीपत (हरियाणा), 4 जुलाई। पंजाब के मुख्यमंत्री व आप के वरिष्ठ नेता भगवंत मान ने रविवार को सोनीपत में रेली की। इस दौरान लोगों को संबोधित करते हुए मान ने कहा कि पंजाब की जनता ने पंजाब-अकाली गठबंधन व कांग्रेस को तीन-चार मोंके दिए, लेकिन पंजाब का विकास नहीं हुआ। आप प्रमुख अरविंद केजरीवाल को पंजाब की जनता ने एक मौका दिया। इसी का परिणाम है कि पंजाब के युवाओं को 43 हजार नौकरियां दी हैं। किसी को शक हो तो फोन करके पूछ लो। नौकरी के नाम पर एक्स रुपया भी नहीं लिया गया। भगवंत मान सोनीपत में आयोजित जनसभा को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कांग्रेस व भाजपा पर जमकर जुबानी हमला किया। मान ने कहा कि इन पार्टियों ने देश व प्रदेश को लूटने का काम किया

है। इन पार्टियों की वजह से नेताओं से लोगों का विश्वास उठ गया है। इनसे हाथ मिलाओ तो हाथों की उंगलियां गिननी पड़ती हैं, कहीं उंगली न ले गया हो। हमारी तीन-तीन पीढ़ियां इन पार्टियों ने लूटी हैं, लेकिन अब नहीं लूटना है। एक मौका आम आदमी पार्टी को देकर देखना चाहिए। मान ने कहा अब चुनाव का समय आ गया है, यह लोग कैसे लेकर आएंगे, कैसे से मना मत करना लेकिन वोट झाड़ू के निशान पर देनी है। पहले कोचड में कमल खिल रहा था, लेकिन झाड़ू ने आकर दिल्ली व पंजाब में ऐसी सफाई की है कि कोचड होने ही नहीं दिया और कमल को खिलने का मौका ही नहीं दिया।

मान व तस्करी के शक में बांग्लादेशी महिला गिरफ्तार

अगरतला, 4 जुलाई। पश्चिम मी त्रिपुरा के चरीपारा इलाके से एक बांग्लादेशी महिला को गिरफ्तार किया गया है। शक है कि महिला मान व तस्करी में संलिप्त है। गिरफ्तार महिला को पहचान खेदीजा बेगम (36 वर्षीय) के रूप में हुई है, जो बांग्लादेश के ब्रह्मनवरिया जिले की मूल निवासी है। पुलिस ने बताया कि शनिवार दोपहर को बांग्लादेशी मूल की महिला खेदीजा बेगम को जीआरपी ने बीएसएफ के साथ संयुक्त ऑपरेशन चलाकर त्रिपुरा के चरीपारा इलाके से गिरफ्तार किया है। जीआरपी और बीएसएफ को महिला के बारे में गुप्त सूचना प्राप्त हुई थी, जिसके बाद महिला को गिरफ्तार किया गया। आरोपी महिला को अगरतला रेलवे स्टेशन कोर्ट में पेश किया जाएगा। बीएसएफ ने गुरुवार को स्थानीय कानूनी एजेंसियों के साथ मिलकर एक संयुक्त अभियान चलाया और 10 लोगों को गिरफ्तार किया था। गिरफ्तार किए गए लोगों में से आठ बांग्लादेशी थे। मान व तस्करी के मामले में यह अभियान चलाया गया था। गिरफ्तार किए गए लोग ट्रेन पर सवार होने की तैयारी कर रहे थे।

नौवीं बार रेपो दर स्थिर रख सकता है आरबीआई

नई दिल्ली, 4 जुलाई। भारतीय रिजर्व बैंक लगातार नौवीं बार रेपो दर को यथावत रख सकता है। केंद्रीय बैंक की मौद्रिक नीति समिति (एमपीसी) को बैठक 6 अगस्त से शुरू होगी और 8 अगस्त को इसके निर्णय घोषित होंगे। विश्लेषकों का कहना है कि हाल के महिनों में खाद्य महंगाई के ऊंचे स्तर को लेकर आरबीआई की दिक्कत बढ़ गई है। ऐसे में दरों में कमी को कोई गुंजाइश फिलहाल अस्वीकार नहीं है। विश्लेषकों के मुताबिक, आर्थिक गतिविधियों में तेजी से आरबीआई की मौजूदा स्तर पर दरें बनाए रखने की गुंजाइश आगे भी जारी रहेगी। बैंक ऑफ बड़ोदा की रिपोर्ट के मुताबिक, रेपो दरों में कमी तभी होगी, जब आरबीआई को यह विश्वास हो जाए कि महंगाई का दबाव कम हो रहा है, या आगे कम हो सकता है। रिपोर्ट के मुताबिक, खाद्य मुद्रास्फीति लगातार ऊंची बनी हुई है। जून में खुदरा महंगाई चार महिने के उच्चतम स्तर 5.1 पर पहुंच गई थी। मई में यह 4.8 पर रही थी। इसके साथ ही महंगाई दर लगातार 57वें महिने आरबीआई के चार फीसद के लक्ष्य से ऊपर बनी हुई है। पिछले कुछ महिनों में महंगाई दर में अधिकांश वृद्धि खाद्य मुद्रास्फीति के कारण हुई है। रिपोर्ट में कहा गया है कि सब्जियों और दालों की कीमतों पिछले 8 महिनों और 13 महिनों में 10% से ज्यादा बढ़ी है। ऐसे में मुख्य महंगाई में कमी की उम्मीद पर पानी फिर रहा है। इनके अलावा टमाटर, आलू और प्याज भी लगातार महंगाई पर दबाव बनाए हुए हैं। जुलाई में इनकी कीमतें 50% से ज्यादा तक बढ़ गई थीं। जिससे आने वाले समय में महंगाई से राहत मिलने की कम उम्मीद है।

अंतरिक्ष तकनीक से मलबे में दबे लोगों को ढूंढना संभव नहीं: एस सोमनाथ

सौरभ शर्मा
बंगलूरु, 4 जुलाई। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) प्रमुख एस सोमनाथ ने कहा कि अंतरिक्ष तकनीक से भूखलन के मलबे में दबे लोगों का पता लगाना संभव नहीं है। उन्होंने कहा कि अंतरिक्ष तकनीक से केवल एक निश्चित गहराई तक ही खोजबीन जा सकता है। इसरो प्रमुख सोशल मीडिया पर एक कार्यक्रम के दौरान केरल में भूखलन जैसी प्राकृतिक आपदाओं से जुड़े सवाल का जवाब दे रहे थे, जहां भूखलन के मलबे में कई लोगों के अभी भी दबे होने की आशंका है। इसरो प्रमुख ने कहा कि अंतरिक्ष आधारित सेंसरों की अपनी एक सीमा है और वह मलबे में बहुत गहराई में फंसे सामान या व्यक्ति तक नहीं पहुंच सकते। केरल में इसी तरह की परेशानी का सामना करना पड़ रहा है, जहां भारी मलबे के बीच लोग दबे हुए हैं। इसरो और अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा के बीच हुए समझौते के तहत अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन पर दो भारतीयों को भेजे जाने से जुड़े सवाल पर उन्होंने कहा कि अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन पर जाने की प्रक्रिया ही आपको बहुत

अंतरिक्ष तकनीक से मलबे में दबे लोगों को ढूंढना संभव नहीं: एस सोमनाथ

कुछ सीख देती है। हमारे एक अंतरिक्ष यान को तैयारी की पूरी जमीनी प्रक्रिया में प्रशिक्षित किया जाएगा। वह हमें बताएगा कि कैसे गगनयान मिशन के लिए गगनयानत्री को तैयार करना चाहिए। इसरो प्रमुख ने इसरो की शुरुआती विफलताओं के बारे में भी बात की, जिसने अंततः इसकी सफलताओं का मार्ग प्रशस्त किया। सोमनाथ ने कहा, हमारी असफलताओं का पर्याय हिस्सा रहा है, और वे सभी असफलताएं हमारे पीछे हैं। लेकिन असफलताओं पर नजर डालना और यह समझना विशेष रूप से महत्वपूर्ण है कि वे पहली बार में असफल क्यों हुए। उनके बारे में बोलना भी महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा, हमारे पहले प्रक्षेपणों में से एक, पीएसएलवी विफल रहा। एसएलवी का पहला प्रक्षेपण विफल रहा, हम चंद्रयान 3 के साथ चंद्रमा पर सॉफ्ट लैंडिंग भी नहीं कर सके। वे सभी वास्तविकताएं थीं और जब कोई विफलता होती है, तो विफलता को समझने और उसका विश्लेषण करने के लिए हमारे पास सगठन के भीतर एक बहुत ही ठोस तंत्र है। फिर इसका कारण ढूंढें कि यह विफल क्यों हुआ। उन्होंने कहा, इस तरह इसरो सीखता है कि उन विफलताओं को कैसे कम किया जाए। सोमनाथ ने कहा कि वह 23 अगस्त, 2023 को चंद्रमा के दक्षिणी हिस्से पर चंद्रयान 3 की पेंडिंग लैंडिंग का सम्मान करने के लिए 23 अगस्त को मनाए जाने वाले पहले राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस को लेकर उत्साहित हैं। एक घंटे के सत्र के दौरान, जिसमें लगभग 2,000 लोगों ने लाइन में खड़े हुए। सोमनाथ ने कहा कि कामकाज के बारे में तकनीकी सवालों के भी जवाब दिए।

राजनीतिक प्रतिशोध में लगा रहे झूठे आरोप: अनिल देशमुख

तेजिन्द्र कौर बख्तर
नागपुर, 4 जुलाई। महाराष्ट्र के पूर्व गृहमंत्री और एनसीपी नेता अनिल देशमुख ने महाराष्ट्र के डिप्टी सीएम देवेंद्र फडणवीस पर हमला बोला है। उन्होंने कहा कि फडणवीस राजनीतिक प्रतिशोध में बर्खास्त पूर्व पुलिस अधिकारी सचिन वाजे का इस्तेमाल करके उन पर झूठे आरोप लगावा रहे हैं। देशमुख ने फडणवीस को न्यायमूर्ति चांदीवाल आयोग की रिपोर्ट सार्वजनिक करने के लिए कहा, जिसमें उन्हें क्लीन चिट दी गई है। देशमुख ने कहा कि रिटायर्ड जस्टिस चांदीवाल ने मुंबई के पूर्व कमिश्नर परमवीर सिंह और बर्खास्त पुलिस अधिकारी सचिन वाजे द्वारा मुझ पर लगाए गए आरोपों पर 11 महिने तक जांच की थी। इसमें सामने आया था कि न तो मैंने और न ही मेरे पीए ने उनसे पैसे मांगे थे और न ही उन्हें कोई पैसा दिया था। उन्होंने कहा कि पूर्व कमिश्नर परमवीर सिंह छह सप्ताह जारी होने के बावजूद न्यायमूर्ति चांदीवाल आयोग के समक्ष उपस्थित नहीं हुए। एनसीपी नेता ने कहा कि न्यायमूर्ति चांदीवाल ने दो साल पहले सरकार को रिपोर्ट सौंपी थी। मैंने कई बार पत्र लिखकर फडणवीस को रिपोर्ट के

निष्कर्ष जनता के सामने रखने के लिए कहा था, लेकिन उन्होंने रिपोर्ट को न तो सार्वजनिक किया और न ही विधानमंडल के सामने रखा। वहीं भाजपा प्रवक्ता राम कुलकर्णी ने देशमुख के इस्तीफा दे दिया था क्योंकि मुंबई के तत्कालीन पुलिस आयुक्त परमवीर सिंह ने उनपर आरोप लगाया था कि वह पुलिस को शर के होटल एवं बार मालिकों से वसूली करने को कहते हैं। एनसीपीएसपी की नेता ने समाचार चैनलों से बातचीत में कहा कि (तब विपक्ष में रहे) फडणवीस द्वारा कथित रूप से भेजे गए एक व्यक्ति ने उनसे मुलाकात की थी और उसके पास तत्कालीन मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे, उनके बेटे और कैबिनेट मंत्री आदित्य ठाकरे, तत्कालीन वित्त मंत्री अजित पवार और तत्कालीन परिवहन मंत्री अनिल परब को फंसाने वाले कई हलफनामे थे। पूर्व मंत्री ने दावा किया कि उन व्यक्ति ने उनसे कहा था कि उन्हें खुद को मुकदमेबाजी से बचाने के लिए इन हलफनामों पर दस्तखत करना चाहिए, लेकिन उन्होंने ऐसा करने से मना कर दिया। सचिन वाजे ने कहा था कि जो कुछ भी हुआ, उसका सबूत मौजूद है। पैसा अनिल देशमुख के पीए के माध्यम से जाता था। सीबीआई के पास सबूत हैं और मैंने देवेंद्र फडणवीस को एक चिट्ठी भी लिखी। मैंने सबूत जमा कर दिया है।

सुप्रीम कोर्ट का फैसला आरक्षण को खत्म करने जैसा: मायावती

लखनऊ, 4 जुलाई। बसपा सुप्रीमों मायावती ने लखनऊ में प्रेस वार्ता की। इस प्रेस वार्ता में उन्होंने सुप्रीम कोर्ट के द्वारा अनुसूचित जातियों की उपजातियों में विभाजित करने के फैसले पर सवाल उठाया। मायावती ने कहा कि उनकी पार्टी सुप्रीम कोर्ट द्वारा किए गए एससी जाति में उपजाति विभाजन करने के फैसले से सहमत नहीं है। मायावती ने कहा कि आरक्षण पर नई सूची बनाने से कई तरह की परेशानियां सामने आएंगी। उन्होंने कहा कि पंजाब राज्य के मामले में 20 साल पहले के फैसले पर सुनवाई सही नहीं। साथ ही साथ एससी एसटी के बीच उपजाति का विभाजन करना सही नहीं फैसला नहीं होगा। बसपा सुप्रीमों ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट का फैसला कहीं न कहीं आरक्षण को खत्म करने के प्लान जैसा है। उन्होंने क्रीमोलियर के सुप्रीमों को खत्म करने के प्लान जैसा है। उन्होंने क्रीमोलियर के सुप्रीमों को खत्म करने के प्लान जैसा है। उन्होंने क्रीमोलियर के सुप्रीमों को खत्म करने के प्लान जैसा है। उन्होंने क्रीमोलियर के सुप्रीमों को खत्म करने के प्लान जैसा है।

वायनाड भूखलन में अब तक 300 से अधिक मौतें

नरेश मल्होत्रा
वायनाड (केरल), 4 जुलाई। केरल के वायनाड जिले में 30 जुलाई को मेप्पाडी के पास विभिन्न पहाड़ी इलाकों में आए भूखलन ने भारी तबाही मचा दी थी। इस प्राकृतिक आपदा के कारण अबतक 300 से अधिक लोगों की मौत हो चुकी है, जबकि सैकड़ों घायल हैं। भूखलन प्रभावित क्षेत्रों चूरलमाला और मुंडक्कई में सेना का राहत व बचाव कार्य छठे दिन भी जारी है। अभी भी मलबे में कई लोगों के फंसे होने की आशंका है। वहीं, राज्य के तीन जिलों के लोगों के लिए जीवन रेखा रही चिलियार नदी भूखलन के बाद से विनाश का प्रतीक बन गई है। केरल के पर्यटन मंत्री पीए मोहम्मद रियास का कहना है कि उत्तरी केरल के भूखलन प्रभावित इलाकों में छठे दिन भी बचाव अभियान जारी रहेगा और उन स्थानों पर अधिक बल और उपकरण तैनात किए गए हैं, जहां शवों के बरामद होने की संभावना ज्यादा है। उन्होंने कहा कि वायनाड, मलपपुरम और कोझिकोड जिलों से बहने वाली चिलियार नदी के 40 किलोमीटर के हिस्से में खोज अभियान जारी रहेगा, क्योंकि मलपपुरम में नीलाबुर के पास कई शव और अवशेष बरामद किए गए हैं। भूखलन

से तबाह हुए मुंडक्कई और चूरलमाला इलाकों में बचाव अभियान पिछले कुछ दिनों की तरह ही जारी रहेगा और उन स्थानों पर अधिक बल और उपकरण तैनात किए जाएंगे, जहां शवों के मिलने की संभावना अधिक है। जो लोग प्राकृतिक आपदा से ज़िंदा बच गए हैं, उनके पुनर्वास के बारे में पर्यटन मंत्री ने कहा कि सभी के साथ चर्चा करने की जरूरत है। उन्होंने कहा, शिविरों और अस्पतालों में रह रहे लोगों के विचारों को प्राथमिकता दी जाएगी। मगर अभी चर्चा नहीं की जाएगी। इन सब पर बात तब होगी जब यह लोग बात करने की स्थिति में होंगे। मंत्री ने कहा कि पहचान और अन्य महत्वपूर्ण रिकॉर्ड खो चुके लोगों की मदद के लिए तत्काल हस्तक्षेप किया जाएगा। वहीं, भूखलन प्रभावित क्षेत्रों में बच्चों की शिक्षा किसी भी तरह से बाधित न हो, इसके लिए भी कदम उठाए जाएंगे। राज्य सरकार ने हाल ही में पीड़ितों के पुनर्वास के लिए एक नई टाउनशिप स्थापित करने की योजना की भी घोषणा की है। केरल के वायनाड में खोज और बचाव अभियान छठे दिन भी जारी है। कई लोगों के अभी भी मलबे में फंसे होने की आशंका है। वायनाड जिला कलेक्टर मेघश्री ने रविवार को बताया कि बचाव अभियान कार्यालय ने जानकारी दी है कि चूरलमाला और मुंडक्कई इलाकों में पुलिस की रात्रि गश्त शुरू की गई है। रात में पीड़ितों के घरों या क्षेत्रों में अतिक्रमण करने वालों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। इसमें कहा गया है कि बचाव अभियान के उद्देश्य से पुलिस की अनुमति के बिना रात में कोई भी यहां के घरों और क्षेत्रों में प्रवेश नहीं कर सकता है। वहीं, राज्य स्वास्थ्य मंत्री वीणा जॉर्ज ने कहा कि वायनाड के चूरलमाला और मुंडक्कई में 30 जुलाई को हुए बड़े भूखलन में मरने वालों की संख्या शुक्रवार तक 308 है। नवीनतम अपडेट के अनुसार, 215 शव और 143 शरीर के अंग बरामद किए गए, जिनमें 98 पुरुष, 87 महिलाएं और 30 बच्चे शामिल हैं। उन्होंने आगे बताया कि 212 शवों और 140 शवों के पोस्टमार्टम की प्रक्रिया पूरी कर ली गई है और रिश्तेदारों ने अब तक 148 शवों की पहचान कर ली है। केरल के तीन जिलों के लोगों के लिए जीवन रेखा रही चिलियार नदी 30 जुलाई को वायनाड में हुए भूखलन के बाद विनाश का प्रतीक बन गई है। कई सदियों से 169 किलोमीटर लंबी नदी ने वायनाड, मलपपुरम और कोझिकोड में अपने ढाल के किनारे रहने वालों के जीवन का पोषण किया है।

वायनाड दौरे का वीडियो साझा करना शशि थरूर को पड़ा महंगा

वायनाड (केरल), 4 जुलाई। केरल के वायनाड जिले में 30 जुलाई को मेप्पाडी के पास विभिन्न पहाड़ी इलाकों में आए भूखलन ने भारी तबाही मचा दी थी। इस प्राकृतिक आपदा के कारण अबतक 300 से अधिक लोगों की मौत हो चुकी है, जबकि सैकड़ों घायल हैं। यहां बड़े स्तर पर बचाव अभियान चल रहा है। इस बीच, कांग्रेस नेता शशि थरूर वायनाड पहुंचे और उन्होंने यहां के राहत कार्यों का एक वीडियो साझा किया। उन्होंने आगे बताया कि 212 शवों और 140 शवों के पोस्टमार्टम की प्रक्रिया पूरी कर ली गई है और रिश्तेदारों ने अब तक 148 शवों की पहचान कर ली है। केरल के तीन जिलों के लोगों के लिए जीवन रेखा रही चिलियार नदी 30 जुलाई को वायनाड में हुए भूखलन के बाद विनाश का प्रतीक बन गई है। कई सदियों से 169 किलोमीटर लंबी नदी ने वायनाड, मलपपुरम और कोझिकोड में अपने ढाल के किनारे रहने वालों के जीवन का पोषण किया है।

यादगार दिन की कुछ यादें। इस पोस्ट पर विवाद होने के बाद थरूर ने सफाई देते हुए कहा, सभी ट्रोल्स को बताना चाहता हूँ कि वायनाड का अर्थ है जिसे याद किया जा सके, जो बेहद खास हो, जिससे भूला नहीं जा सके। मेरा बस इतना ही मतलब था। भाजपा नेता अमित मालवीय ने प्रतिक्रिया करते हुए कहा, शशि थरूर के लिए मौतें और आपदाएं यादगार हैं। वीडियो में देखा जा सकता है कि राहत कार्यों का एक वीडियो साझा किया जा रहा है। यह राहत कैम्प में जा रहे हैं और लोगों की मदद कर रहे हैं। कांग्रेस सांसद ने शनिवार को वायनाड में भूखलन के कारण तबाह हुए इलाकों का दौरा किया था, जिसमें 300 से अधिक लोग मारे गए हैं और कई अन्य लातात हैं। सोशल मीडिया पर साझा किए गए एक वीडियो में उन्हें अपने कार्यालय मीडिया पर कई लोगों ने दुःख घटना के द्वारा यादगार शब्द का इस्तेमाल करने पर आपत्तित जताई। भाजपा आईटी सेल के प्रमुख अमित मालवीय उन लोगों में शामिल थे, जिन्होंने थरूर की आलोचना की। शशि थरूर ने वायनाड ने में अपने दौरे का वीडियो साझा करते हुए लिखा था कि वायनाड में

मास ने नया प्रमुख चुनने के लिए परामर्श किया शुरू

एजेंसी
गाजा। हमास ने कहा कि आंदोलन के लिए नया प्रमुख चुनने के लिए उसके नेतृत्व और सलाहकार संस्थानों में व्यापक सलाह मशवरा शुरू हो गया है। हमास ने एक बयान में कहा कि पिछले दशकों में इसके कई नेताओं की हत्याएं देखी गईं। लेकिन समूह ने आंदोलन के नियमों के अनुसार उनके लिए विकल्प चुनने में जल्दबाजी की। बयान में कहा गया है कि आंदोलन के कार्यकारी संस्थान और इसकी मुख्य सलाहकार संस्था शूरा अपना काम जारी रख रही है और यह अपने परामर्श के पूरा होने के बाद उसके परिणामों की घोषणा करेगी। हमास पोलित ब्यूरो प्रमुख इस्माइल हानिया की बुधवार सुबह ईरान की राजधानी तेहरान में उस समय हत्या कर दी गई, जब वह ईरान के नए राष्ट्रपति के उद्घाटन समारोह में शामिल हुए थे।

'मुझसे बकवास करना बंद कीजिए...', ईरान की घटना के बाद बेहद चिढ़े बाइडेन ने नेतन्याहू से कहा

नई दिल्ली। ईरान की राजधानी तेहरान में हमास के राजनीतिक ब्यूरो प्रमुख इस्माइल हानिया की हत्या के बाद, पश्चिमी एशिया में संपर्क बढ़ने की आशंका है। हमास और ईरान दोनों ने टारगेटेड अटैक में हानिया की मौत के लिए इजरायल को जिम्मेदार उतारना है। हालांकि, इजरायल ने न तो इस हमले की जिम्मेदारी ली है और न ही इससे इनकार किया है। इस बीच खबर है कि अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन ने इजरायल के प्रधानमंत्री बेजाकिन नेतन्याहू से अपनी बातचीत में हानिया के मामले को लेकर नाराजगी जताई है। चैनल 12 न्यूज ने बिना किसी आधिकारिक स्रोत का हवाला दिए अपनी रिपोर्ट में कहा है, 'टेलीफोनिक कंवर्सेशन में बाइडेन ने चिढ़कर नेतन्याहू से कहा- आप मुझसे बकवास करना बंद कीजिए', जो बाइडेन की यह टिप्पणी तब आई जब बेजाकिन नेतन्याहू ने उन्हें सूचित किया कि इजरायल हमास के साथ बंधकों के बदले युद्धविराम समझौते पर बातचीत को आगे बढ़ा रहा है और जल्द ही अपना एक प्रतिनिधिमंडल भेजेगा। चैनल 12 न्यूज की रिपोर्ट के अनुसार बाइडेन ने यह कहकर नेतन्याहू के साथ अपनी बातचीत समाप्त की कि वह 'राष्ट्रपति को हल्के में न लें'।

अमेरिकी रक्षा मंत्री ने 9/11 समझौता अचानक रद्द किया

वाशिंगटन। रक्षा सचिव लॉयड ऑस्टिन ने 11 सितंबर, 2001 के हमलों के आरोपी मास्टरमाइंड और दो अन्य प्रतिवादियों के लिए इस सप्ताह के शुरू में हुए याचिका समझौते को रद्द कर दिया, तथा उन्हें मृत्युदंड के मामलों के रूप में बहाल कर दिया। यह कदम क्यूबा के ग्वातानामो ब स्थित सैन्य आयोग द्वारा यह घोषणा किए जाने के दो दिन बाद उठाया गया है कि युद्ध न्यायालय की देखरेख के लिए नियुक्त अधिकारी, सेवानिवृत्त ब्रिगेडियर जनरल सुज़ैन एस्कलियर ने हमलों में खालिद शेख मोहम्मद और उसके दो आरोपी साथियों, वालिद बिन अताश और मुस्ताफा अल-हैसावी के साथ याचिका समझौते को मंजूरी दे दी है। अल-कायदा हमलों में मारे गए लगभग 3,000 लोगों के परिवारों को भेजे गए पत्रों में कहा गया है कि याचिका समझौते में यह शर्त रखी गई थी कि तीनों को अधिकतम आजीवन कारावास की सजा दी जाएगी। ऑस्टिन ने जारी एक आदेश में लिखा कि निर्णय के महत्व को देखते हुए, उन्होंने फैसला किया है कि याचिका समझौतों को स्वीकार करने का निर्णय लेने का अधिकार उनका है। उन्होंने एस्कलियर की स्वीकृति को रद्द कर दिया। हमले के पीछियों के कुछ परिवारों ने पूर्ण परीक्षण और संभावित मृत्यु दंड की किसी भी संभावना को समाप्त करने के लिए इस सौदे की निंदा की। रिपब्लिकन ने इस सौदे के लिए बिडेन प्रशासन को दोषी ठहराया, बलाकित वहादु हाउस ने घोषणा के बाद कहा कि उसे इसके बारे में कोई जानकारी नहीं थी।

गाजा में स्कूल पर इजरायली हमले में 15 फिलिस्तीनियों की मौत

गाजा। गाजा शहर में एक स्कूल पर इजरायली हवाई हमले में कम से कम 15 फिलिस्तीनी मारे गए हैं, दर्जनों अन्य घायल हो गए। फिलिस्तीनी सुरक्षा और चिकित्सा स्रोतों के हवाले से ये जानकारी दी गई है। फिलिस्तीनी सुरक्षा स्रोतों ने सिन्हूआ समाचार एजेंसी को बताया कि इजरायली जेट ने गाजा शहर के उत्तर में शेख रादवान में एक स्कूल पर मिसाइल से हमला किया। यहां स्थितिगत लोंग रह रहे थे। फिलिस्तीनी चिकित्सा स्रोतों के मुताबिक, बमबारी में 15 लोग मारे गए और दर्जनों अन्य घायल हो गए, और पीड़ितों की संख्या बढ़ने की संभावना है। सिन्हूआ समाचार एजेंसी ने बताया कि इजरायल शका बलों ने एक बयान में कहा कि उसने हमास के कमांड और नियंत्रण परिसर को निशाना बनाया है, जिसका इस्तेमाल हथियार बनाने के लिए किया जा रहा था और जिसे पहले गाजा शहर में एक स्कूल के रूप में इस्तेमाल किया जाता था। बयान में कहा गया है कि परिसर का इस्तेमाल हमास आतंकवादियों के लिए छिपने की जगह के रूप में किया जा रहा था। इस परिसर के अंदर इजरायल के खिलाफ आतंकवादी हमले को योजना बनाई गई थी। इसमें कहा गया है कि बुनियादी ढांचे के भीतर से काम करके, नागरिक आबादी और संस्थानों का अपने आतंकवादी गतिविधियों के लिए प्रायत्व खत के रूप में इस्तेमाल कर हमास अंतरराष्ट्रीय कानून का उल्लंघन करता है। इसके अलावा, हमास द्वारा संचालित स्वास्थ्य अधिकारियों ने एक प्रेस बयान में कहा कि 7 अक्टूबर, 2023 से गाजा पट्टी पर चल रहे।

इस वर्ष मॉनसून में अब तक डेढ़ सौ लोगों की मौत, चार हजार परिवार विस्थापित

एजेंसी काठमांडू। इस साल मानसून शुरू होने से लेकर आज शनिवार तक बाद, भूस्खलन और मानसून संबंधी आपदाओं के कारण 150 लोगों की जान गई है। अब तक 149 लोगों के लापता होने की भी खबर है। बाढ़ और भूस्खलन की वजह से अबतक 4,000 से अधिक परिवार विस्थापित हुए हैं।

गृहमंत्रालय द्वारा जारी आंकड़ों के मुताबिक शाम तक बारिश के कारण देश के विभिन्न हिस्सों में बाढ़ और भूस्खलन जैसी विभिन्न आपदाओं में 150 लोगों की मौत हुई है। मंत्रालय के द्वारा जारी आंकड़ों के मुताबिक काठमांडू में 3 लोगों की मौत हुई है। इसी तरह कोशी प्रांत में 25, मधेश प्रांत में 6 और बागमती प्रांत में 29 लोगों की मौत हुई। वहीं आंकड़ों के अनुसार इन

34, लुंबिनी प्रांत में 11, कर्णाली प्रांत में 51 और सुदूर पश्चिम प्रांत में 14 लोगों के घायल होने की भी जानकारी है।

गृह मंत्रालय के आपदा व्यवस्थापन महाशाखा ने बताया है कि इस वर्ष के मॉनसून शुरू होने के बाद अब तक देशभर में 149 लोगों के अब तक लापता होने की जानकारी है। बाढ़ के कारण कुल 384 घर जलमग्न हो गए हैं। 259 घर, 95 शोध, 43 पुल, 2 स्कूल और 2 सरकारी कार्यालय के क्षतिग्रस्त होने की जानकारी भी दी गई है। मंत्रालय ने बताया कि इस दौरान आपदा के कारण 4 हजार 219 परिवार विस्थापित भी हो गए हैं



गंडकी प्रांत में 42, लुंबिनी प्रांत में 27, कर्णाली प्रांत में 8 और सुदूरपश्चिम प्रांत में 10 लोगों की मौत हुई है। इसी तरह कोशी प्रांत में 10, मधेश प्रांत में 10, बागमती प्रांत में 10, गंडकी प्रांत में

आशमां केसी ने जीता मिस नेपाल 2024 का खिताब

एजेंसी काठमांडू। मिस नेपाल 2024 का खिताब आशमां केसी ने जीत लिया है। ललितपुर के गोदावरी सनराइज कन्वेंशन सेंटर में शनिवार की देर शाम संपन्न ग्रैंड फिनले में श्रीचा प्रधान ने उन्हें मिस नेपाल 2024 का ताज पहनाया। 26 वर्षीया मिस नेपाल वलंड आशमां केसी सामाजिक कार्य में सतक की छत्रा हैं। वह काठमांडू की रहने वाली हैं। इस वर्ष के मिस नेपाल प्रतियोगिता में 26 फाइनलिस्ट सुंदरियों ने खिताब के लिए प्रतिस्पर्धा की। आज हुई प्रतियोगिता में सुमना केसी ने मिस नेपाल अर्थ का खिताब जीता। जबकि कृष्णा रावत ने मिस नेपाल इंटरनेशनल का खिताब जीता है। अन्य प्रतियोगियों का खिताब मिस फोटोजेनिक का



खिताब जीता जबकि दीक्षा अवस्थी ने मिस इंटेलेक्चुअल का खिताब जीता है। इसी तरह कृति श्रेष्ठ को युमन विद विंस का खिताब मिला है।

नेपाल के प्रधानमंत्री ओली ने एसिड अटैक पर आधारित फिल्म को अपनी आवाज में की डबिंग

एजेंसी काठमांडू। नेपाल के प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली ने एसिड अटैक पर आधारित एक फिल्म को अपनी आवाज में डबिंग की है। फिल्म में प्रधानमंत्री का किरदार खुद ओली ने निभाया है। अपने अभिनय को अपनी ही आवाज देने की इच्छा प्रकट करने के बाद उनसे डबिंग कराया गया है। नेपाल में हुए एसिड अटैक संबंधी सत्य घटनाओं पर आधारित नेपाली फीचर फिल्म नमेट्टेने घाघ (कभी ना भरने वाला जख्म) में कुछ सीन के लिए प्रधानमंत्री ओली ने अभिनय किया है। इस फिल्म में

प्रधानमंत्री के रूप में ओली द्वारा किए गए अभिनय में उन्होंने अपनी आवाज में डबिंग भी किया है। ओली सरकार के समय एसिड अटैक को लेकर सरकार ने कई कानून बनाए थे। इसलिख उनकी छोटी सी भूमिका है। हुंगाना के मुताबिक ओली ने इस फिल्म में अभिनय के लिए खुद ही इच्छा प्रकट की थी और अभी अपने अभिनय को अपनी आवाज देने के लिए भी उनकी तरफ से ही इच्छा प्रकट की गई। फिल्म के निर्देशक हुंगाना ने बताया कि जब प्रधानमंत्री ओली ने खुद इच्छा प्रकट की तो इससे अच्छी बात और क्या हो सकती है। इस फिल्म में बीरगंज की एक 16 साल की



इस फिल्म के निर्देशक रमित हुंगाना ने बताया कि पिछली बार

तुलकरम पर इजराइली हमले में पांच फिलिस्तीनी मारे गए

एजेंसी रामल्लाह। वेस्ट बैंक पर तुलकरम के उत्तर में स्थित जीता शहर पर इजराइली हमले में हमास के एक कमांडर सहित पांच फिलिस्तीनी मारे गए। यह जानकारी फिलिस्तीनी चिकित्सा स्रोतों ने दी। तुलकरम में थाबेत सरकारी अस्पताल के निर्देशक अमीन खादर ने समाचार एजेंसी सिन्हूआ को बताया कि हमले में मारे गए पांच लोगों में से

चार के शव क्षत विकृत हो गए थे। ऐसे में उनकी पहचान नहीं हो पाई। सिन्हूआ ने खादर के हवाले से बताया कि केवल 25 वर्षीय हेथन ब्लादी की पहचान हो पाई है। फिलिस्तीनी सुरक्षा स्रोतों ने सिन्हूआ को बताया कि एक वाहन में जा रहे पांच फिलिस्तीनियों पर ड्रोन से हमला किया गया। हमले में सभी की मौत हो गई। उन्होंने बताया कि ब्लादी हमास की सराज शाखा अल-कस्साम ब्रिगेड का कमांडर था। इजराइल रक्षा बलों (आईडीएफ) ने एक बयान में कहा कि आईडीएफ के एक विमान ने तुलकरम के इलाके में एक वाहन में जा रहे आतंकवादियों पर हमला किया। रामल्लाह स्थित फिलिस्तीनी स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार पिछले साल सत अक्टूबर के बाद से वेस्ट बैंक में इजराइली हमले में अब तक 590 से अधिक फिलिस्तीनी मारे गए हैं।

जेलेस्की ने कहा- वेनेजुएला में रूसी सैनिकों की तैनाती चिंताजनक

एजेंसी हमास। यूक्रेनी राष्ट्रपति वोलोदिमिर जेलेस्की ने कहा है कि वेनगनर समूह के रूसी सैनिकों की वेनेजुएला में उपस्थिति चिंताजनक है। उन्होंने कहा कि यह दर्शाता है कि किस तरह रूस यह अन्य देशों के मामलों में दखल देता है। ये हत्यारे जहां जाते हैं अराजकता फैलाते हैं। एक्स पर ट्वीट करते हुए, जेलेस्की ने कहा, वेनेजुएला में सरकारी बलों के साथ रूसी वेनगनर भाड़ों के सैनिकों को देखे जाना चिंताजनक है। ये टा जहां भी जाते हैं, मौत और अस्थिरता लाते हैं। यह अन्य देशों के मामलों में रूस की बेशर्मी से दखलंदाजी का एक स्पष्ट उदाहरण है, साथ ही दुनिया भर में अराजकता फैलाने की उसकी रणनीति भी है। जेलेस्की बोले- ये हत्यारे जहां जाते हैं, अराजकता फैलाते हैं। इसके अलावा



है, न कि हत्यारों को भेजकर स्थिति को और खराब करना है। जेलेस्की ने एक्स पर कहा कि हम देख रहे हैं कि वेनेजुएला के लोग बहुत कठिन समय से गुजर रहे हैं। इससे उबरने का एकमात्र रास्ता शांतिपूर्ण और लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं के माध्यम से है, न कि हत्यारों को भेजकर स्थिति को और खराब करने के लिए है।

टोक्यो के पास अमेरिकी सैन्य हेलीकॉप्टर की इमरजेंसी लैंडिंग, किसी के हाताहत होने की खबर नहीं

एजेंसी टोक्यो। जापान की राजधानी टोक्यो के पास एक अमेरिकी सैन्य हेलीकॉप्टर को इमरजेंसी लैंडिंग करनी पड़ी। अभी तक किसी के भी हाताहत होने की खबर नहीं है। जापान के एनएनएन न्यूज चैनल पर प्रसारित इस हेलीकॉप्टर की लैंडिंग के वीडियो फुटेज को प्रमुख समाचार पत्र द जापान टाइम्स ने अपनी रिपोर्ट में अपलोड किया है। द जापान टाइम्स का कहना है कि इस वीडियो फुटेज के अनुसार एक अमेरिकी सैन्य हेलीकॉप्टर ने शनिवार सुबह कानागावा प्रान्त के एबिना में चावल के खेत में आपातकालीन लैंडिंग की। स्थानीय अग्निशमन विभाग का हवाला देते हुए कहा गया कि लैंडिंग में कोई घायल नहीं हुआ। हेलिकॉप्टर ने दोपहर करीब 12:40 बजे अमेरिकी सेना के अस्तुगी एयर बेस



आपातकालीन लैंडिंग की वजह क्या है लेकिन विमान से धुआं या आग की लपटें नहीं देखी गईं। जापान टुडे समाचार पत्र के अनुसार पुलिस को सुबह लगभग 10:55 बजे एक आपातकालीन कॉल मिली, जिसमें कहा गया कि नेवी लेबल वाला एक हेलीकॉप्टर कानागावा प्रान्त के एबिना में मैदान पर उतरा है। यह स्थान अस्तुगी में अमेरिकी बेस से ज्यादा दूर नहीं है। अग्निशमन विभाग के अनुसार 12 लोगों को ले जा रहे हेलीकॉप्टर को रास्ते में इंसानों में समस्या का सामना करना पड़ा।

हिजबुल्लाह का दावा- इस्राइल पर दागे 50 रॉकेट

एजेंसी हमास। पश्चिम एशिया में तनाव लगातार बढ़ता जा रहा है। हाल ही में हमास नेता इस्माइल हानिया की मौत के बाद हिजबुल्ला और इस्राइल के बीच टकराव तेज हो गया है। हिजबुल्ला ने दावा किया है कि उसने दक्षिणी लेबनान से इस्राइल की ओर लगभग 50 रॉकेट दागे हैं। वहीं, इस्राइली मीडिया द्वारा जारी की गई वीडियो में इस्राइल की आयरन डोम रक्षा प्रणाली को क्षेत्र में सक्रिय होते हुए दिखाया गया है। हालांकि, इन हमलों में किसी के हाताहत होने की खबर अभी तक सामने नहीं आई है। इससे पहले इस्राइल ने गाजा में विस्थापित लोगों को आश्रय देने वाले एक स्कूल पर हवाई हमले किए, जिसमें 15 फलस्तीनियों की मौत हो गई। हमास के दावे के अनुसार, इस्राइल ने हमास के कब्जे वाले वेस्ट बैंक पर भी दो हमले किए, जिसमें एक स्थानीय कमांडर सहित नौ आतंकवादियों मारे गए। हिजबुल्ला ने एक बयान में कहा कि उसने नई इस्राइली बस्ती बीट हिलेल पर रॉकेट से हमला किया। यह

गाजा में फलस्तीनी गांवों पर इस्राइल के हमलों के जवाब में है, जिससे नागरिकों को चोट पहुंची है। हिजबुल्ला फलस्तीनी लोगों और उनके प्रतिरक्षा का समर्थन कर रहा है।

इसका बयान में, हिजबुल्ला ने कहा, 'गाजा पट्टी में हमारे फलस्तीनी लोगों के समर्थन और दक्षिणी गांवों में इस्राइली दुश्मन के हमलों के जवाब में, विशेष रूप से उन हमलों के जवाब में काफ़र किला और दीर सिरियान के गांवों को निशाना बनाया और नागरिकों को घायल कर दिया, इस्लामिक प्रतिरोध ने बीट हिलेल की नई बस्ती पर पहली बार दर्जनों कत्लिया रॉकेटों से बमबारी की। हालांकि, इस्राइल ने अभी तक इस घटना पर कोई टिप्पणी नहीं की है। बल्कि कि सात अक्टूबर 2023 को हमास ने इस्राइल पर हमला किया था। इस हमले में 1,200 लोग मारे गए थे और 250 लोगों का अपहरण कर लिया गया था। जिसके बाद इस्राइल ने गाजा में जवाबी कार्रवाई की। गाजा पट्टी के स्वास्थ्य अधिकारियों का कहना है कि गाजा में इस्राइल के सैन्य अभियानों में अब तक कम से कम 39,550 फलस्तीनी मारे गए हैं।

इजराइल पर ईरान आक्रमण की तैयारी में, अमेरिका चौकन्ना

एजेंसी तेहरान/वाशिंगटन। इजराइल के ईरान में घुसकर अपने सबसे कट्टर दुश्मन हमास के शीर्ष नेता इस्माइल हानिया की मौत के घाट उतारने से समूचे पश्चिम एशिया में तनाव उत्पन्न हो रहा है। हानिया की मौत से ईरान तमनमाया हुआ है। वह इजराइल पर बड़े आक्रमण की तैयारी में है। इस घटनाक्रम से अमेरिका चौकन्ना हो गया है। पेंटागन ने पश्चिम एशिया में मौजूद अपने युद्धपोत यूएसएस थियोडोर रूजवेल्ट की जगह लेने के लिए अपने युद्धपोत यूएसएस अब्राहम लिंकन को भेजा है। इस युद्धपोत के साथ ही लड़ाकू विमानों से सुसज्जित स्ट्राइक ग्रुप को भी पश्चिम एशिया में भेजा है। अमेरिका ने यह कदम ऐसे वक्त बढ़ाया है, जब ईरान ने इजराइल पर हमलों की धमकी दी है। अमेरिका के रक्षा विभाग पेंटागन की उप सचिव सरबाना सिंह ने बयान में कहा है, 'रक्षा विभाग लगातार ऐसे कदम उठाता रहेगा, जिससे ईरान और उसके सहयोगियों के क्षेत्रीय तनाव बढ़ाने की संभावना को कम किया जा सके।' उन्होंने कहा, '7 अक्टूबर के हमास के हमले के बाद से रक्षा सचिव ने बार-बार कहा है कि अमेरिका पश्चिम एशिया में अपने हितों की सुरक्षा करना और साथ ही इजराइल की सुरक्षा का अपना पक्का वादा भी निभाएगा।' इस बीच, अमेरिका के रक्षा सचिव लॉयड ऑस्टिन ने बैलिस्टिक मिसाइल से लैस करूजर और विध्वंसक जहाज भी यूरोपीय कमांड के अंतर्गत पश्चिम एशिया में भेजने का आदेश दिया है। साथ ही लड़ाकू विमानों के एक स्क्वाड्रन को रवाना किया गया है। उल्लेखनीय है कि पिछले दिनों इजराइल के गोलन हॉस्टिस में हुए हिजबुल्लाह रॉकेट हमले में फुटबॉल खेल रहे 12 इजराइली किशोरों और बच्चों की मौत हो गई थी। इसके जवाब में इजराइल ने बेरुत में हमला कर हिजबुल्ला के कमांडर फुआद शुकर को डेर कर दिया था। इसके कुछ ही घंटों बाद ईरान में एक इमारत को निशाना बनाकर किए गए हमले में हमास के शीर्ष नेता इस्माइल हानिया की मौत हो गई। हानिया की मौत पर ईरान के आक्रामक रुख से

हिजबुल्लाह ने भी इजराइल से बदला लेने की तैयारी शुरू कर दी है। ईरान ने दौड़क कहा है कि वह अपनी भरती पर इस्माइल हानिया की हत्या का बदला इजराइल से जरूर लेगा। दावा किया जा रहा है कि ईरान हमला कर सकता है। ईरान को लेबनान में हिजबुल्लाह, सीरिया और इराक के मिलिशिया और यमन में हूती विद्रोहियों से मदद मिल सकती है। इस साल अप्रैल में भी ईरान, इजराइल पर मिसाइल और ड्रोन हमला कर चुका है। हालांकि इन मिसाइलों को रोकने में इजराइल कामयाब रहा था, क्योंकि उसे अमेरिका के साथ जॉर्डन का भी साथ मिला था। यूएई और अरब ने इजराइल के खिलाफ उठते वाले ईरान के कदमों भी भनक से अमेरिका को अवागत करा दिया था। ईरान के इजराइल पर हमला करने की वजह भी थी। दरअसल, इजराइल ने सीरिया में ईरान के वाणिज्य दूतावास पर हमला करके ईरान के शीर्ष कमांडर को मारा था। तब ईरान ने 300 से ज्यादा मिसाइलें और किलर ड्रोन इजराइल के ऊपर दागे थे।

एजेंसी मोगादिशु। सोमालिया की राजधानी मोगादिशु में समुद्र तट के निकट एक होटल में एक आत्मघाती हमले और गोलीबारी में कम से कम 32 लोगों की मौत हो गई और 63 लोग घायल हो गए। पुलिस और चरमदीद लोगों के मुताबिक आत्मघाती हमलावर ने लीडो बीच पर बम विस्फोट किया, जिसके बाद बंदूकधारी हमलावरों ने इलाके में गोलीबारी शुरू कर दी। यह समुद्र तट व्यापारियों और अन्य लोगों के बीच काफी लोकप्रिय है। यहां पहले भी हमले हो चुके हैं। पुलिस के अनुसार इनमें से कई घायलों की हालत अत्यंत गंभीर है। वीडियो फुटेज में मोगादिशु के अब्दियाजीज जिले में कई शव और घायल लोग दिखाई दे रहे हैं। चरमदीद लोगों के मुताबिक वे काफी दहशत में थे, क्योंकि विस्फोट के तुरंत बाद गोलीबारी शुरू हो गई। कुछ लोगों ने किसी तरह अपनी जान बचाने की कोशिश की जबकि अन्य ने वहां से भागने की कोशिश की। एक चरमदीद ने बताया कि उसने समुद्र तट पर घायल लोगों को देखा। लोग दहशत में चिल्ला रहे थे और यह पता लगाना मुश्किल था कि कौन मर चुका है और कौन अभी भी जीवित है। हमले में कम-से-कम पांच लोग शामिल थे, क्योंकि एक हमलावर ने खुद को उड़ल लिया जबकि तीन अन्य मारे गए। पुलिस प्रवक्ता ने मोगादिशु में पत्रकारों को बताया कि एक हमलावर को जिंदा पकड़ लिया गया। स्थानीय मीडिया का कहना है कि यह हमला अल-शबाब आतंकवादियों द्वारा किया गया था, जिन्होंने दक्षिणी और मध्य सोमालिया के बड़े हिस्से को नियंत्रित किया था।



वे सोमालियाई कर्मचारियों और अधिकारियों को निशाना बना रहे थे। यूएस अफ्रीका कमांड ने पिछले साल कहा था कि अल-शबाब दुनिया का सबसे बड़ा और सबसे सक्रिय अल-कायदा टुकड़ा है। इसे 2008 में अमेरिका द्वारा और 2010 में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद समिति द्वारा आतंकवादी समूह के रूप में नामित किया गया था। युगांडा के अधिकारियों के अनुसार पिछले साल इसने सोमालिया में अफ्रीकी सैन्य के एक सैन्य अड्डे पर घातक हमला किया था, जिसमें युगांडा के कम से कम 54 सैनिक मारे गए थे।

डेथ वैली में जुलाई रहा अब तक का सबसे गर्म महीना

एजेंसी लॉस एंजिल्स। दुनिया के सबसे गर्म स्थानों में से एक अमेरिका के डेथ वैली पार्क में इस साल जुलाई अब तक का सबसे गर्म महीना रहा। यहां 24 घंटे का औसत तापमान 108.5 डिग्री फारेनहाइट (42.5 डिग्री सेल्सियस) रहा। यह जानकारी डेथ वैली नेशनल पार्क के अधिकारियों ने दी। समाचार एजेंसी के मुताबिक पार्क के अधिकारियों ने एक समाचार विज्ञापन में बताया कि इसके पहले 2018 में पार्क में रिकॉर्ड 108.1 डिग्री फारेनहाइट (42.3 डिग्री सेल्सियस) तापमान दर्ज किया गया था। जुलाई में यहां का औसत उच्च तापमान 121.9 डिग्री फारेनहाइट (49.9 डिग्री सेल्सियस) था। पार्क में नौ दिन 125 डिग्री फारेनहाइट (51.7 डिग्री सेल्सियस) या उससे ज्यादा तापमान रहा। समाचार विज्ञापन के अनुसार, सबसे ज्यादा तापमान सात जुलाई को दर्ज किया गया। इस दिन पार्क के फर्नेस क्रोक क्षेत्र में 129.2 डिग्री फारेनहाइट (54 डिग्री सेल्सियस) तापमान दर्ज किया गया। पार्क के अधिकारियों ने बताया कि इस दौरान रात का औसत तापमान 95.2 डिग्री फारेनहाइट (35.1 डिग्री सेल्सियस) रहा। डेथ वैली नेशनल पार्क के अधीक्षक माइक रॉल्डस ने कहा, 'हमने अभी-अभी पृथ्वी के सबसे गर्म जगह पर इतिहास के सबसे गर्म महीने का अनुभव किया है। पिछले 10 वर्षों में छह बार गर्मी के महीने में रिकॉर्ड तापमान दर्ज किया गया, जो हमारे लिए एक चेतावनी है।' उन्होंने कहा, ग्लोबल वार्मिंग को देखते हुए अब इस तरह के रिकॉर्ड तोड़ने वाले महीने आम हो सकते हैं। डेथ वैली नेशनल पार्क के रेंजर्स ने जुलाई में कई बार जानलेवा गर्मी का सामना किया है। इस दौरान एक की मौत हो गई। एक अन्य घटना में एक व्यक्ति को रेत के टीलों से बचाया गया। रेंजर्स ने गर्मी के महीने में डेथ वैली नेशनल पार्क आने वाले यात्रियों से आग्रह किया है कि वे अपने वातानुकूलित वाहन से 10 मिनट की पैदल दूरी पर ही रहें, खूब पानी पीएं, नमकीन स्नेक्स खाएं, टोपी पहनें और सन स्क्रीन का इस्तेमाल करें। डेथ वैली, अमेरिका के कैलिफोर्निया और नेवादा राज्यों के बीच स्थित है। यह अमेरिका का सबसे गर्म और सबसे सूखा स्थान है। अमेरिकी राष्ट्रीय उद्यान सेवा के अनुसार, 10 जुलाई, 1913 को फर्नेस क्रोक में दुनिया का सबसे अधिक तापमान 134 डिग्री फारेनहाइट (56.7 डिग्री सेल्सियस) दर्ज किया गया था।

अमेरिकी राष्ट्रपति पद की उम्मीदवार बनने पर कमला हैरिस ने कहा, बस 95 दिन और

एजेंसी न्यूयॉर्क। जो बाइडेन के अमेरिकी राष्ट्रपति पद की रेस से पीछे हटने के बाद उपराष्ट्रपति कमला हैरिस डेमोक्रेटिक पार्टी की आधिकारिक रूप से उम्मीदवार बन गईं हैं। कमला हैरिस ने इस पर खुशी जताई है और कहा है कि बस 95 दिन

और (उन्होंने कहा, मैं संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति पद के लिए डेमोक्रेटिक पार्टी की उम्मीदवार बनने पर सम्मानित महसूस कर रही हूँ। मैं अगले सप्ताह आधिकारिक तौर पर नामांकन स्वीकार करूँगी।) कमला हैरिस ने एक बयान में कहा, 'मैं सभी दौड़ों और डेमोक्रेटिक नेशनल कमेटी को

धन्यवाद देना चाहती हूँ। आपके भविष्य के राष्ट्रपति के रूप में मुझे पता है कि हम इस लड़ाई के लिए तैयार हैं। इस लड़ाई को जब हम लड़ेंगे तो हर कोई एक ही स्वर में कहना कि हम जीतेंगे। आप सभी का धन्यवाद।' मिशिकागोन में आपसे मिलने का और इंतजार नहीं कर सकता। उपराष्ट्रपति कमला हैरिस

याचिका समिति आशा किरण आश्रय गृह की जांच रिपोर्ट विधानसभा के स्पीकर को सौंपेगी : कुलदीप कुमार एजेंसी

नई दिल्ली। दिल्ली विधानसभा की याचिका समिति ने आशा किरण आश्रय गृह का दौरा कर वहां कई लोगों को हई मौत की जांच की। इस दौरान कमेटी के चेयरमैन कुलदीप कुमार के साथ सदस्य अखिलेशपति त्रिपाठी, जय भगवान उपकार और विशेष आमंत्रित सदस्य महेंद्र गोयल भी मौजूद रहे। कुलदीप कुमार ने बताया कि समिति ने आश्रय गृह में रह रहे लोगों से बात कर उनकी वीडियो रिकॉर्ड की, जिसे जल्द ही जारी किया जाएगा। आशा किरण आश्रय गृह में रहे रहे लोगों ने बताया कि उनके पौष्टिक भोजन और उचित उपचार नहीं मिल रहा था। इतनी अख्यवस्था और मौतों के बाद भी उपराज्यपाल ने अभी तक आश्रय गृह के प्रशासक राहुल अग्रवाल को सस्पेंड नहीं किया है। समिति जांच रिपोर्ट विधानसभा के स्पीकर को सौंपेगी। आश्रय गृह का दौरा करने के बाद याचिका समिति के चेयरमैन कुलदीप कुमार ने कहा कि दिल्ली के एलजी से पूछना चाहते हैं कि आशा किरण आश्रय गृह में इतनी अख्यवस्था और मौतें होने के बाद भी अभी तक होम के प्रशासक राहुल अग्रवाल को सस्पेंड क्यों नहीं किया गया। उस विभाग के सचिव पर अब तक कोई कार्रवाई नहीं की गई। हमारी मांग है कि ऐसे अधिकारियों पर जल्द से जल्द कार्रवाई की जाए।

एमटीएनएल से रिटायर्ड शख्स की चाकू घोंपकर हत्या

नई दिल्ली। पूर्वी दिल्ली के न्यू अशोक नगर इलाके में बदमाशों ने एमटीएनएल से रिटायर्ड शख्स की उनके घर में चाकू मारकर हत्या कर दी। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। मामले में पुलिस ने हत्या का मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस फरार हत्यारे की तलाश के लिए आसपास लगे सीसीटीवी फुटेज को खंगाल रही है। पूर्वी जिले की डीसीपी अर्पूवा गुप्ता ने बताया कि शनिवार सुबह करीब 6.39 बजे पुलिस स्टेशन न्यू अशोक नगर में एक पीसीआर कॉल आई। कॉलर ने बताया कि किसी ने घर में घुसकर उनके पिता की हत्या कर दी है। इस सूचना पर न्यू अशोक नगर पुलिस घटना स्थल पर पहुंची। इस दौरान घर में पहली मंजिल पर एक कमरे में एक व्यक्ति जिसकी पहचान गौतम ठाकुर के रूप में हुई, बिस्तर पर मृत पाए गए। उनकी उम्र लगभग 72 वर्ष थी। उनके पेट में चाकू मारा गया था। पीसीआर कॉल उनके बड़े बेटे मुकेश ठाकुर ने की थी। क्राइम और फॉरेंसिक टीम को मौके पर बुलाया गया। घटना स्थल का निरीक्षण किया गया है। डीसीपी ने बताया कि मृतक गौतम ठाकुर एमटीएनएल से वर्ष 2012 में मैकेनिक के पद से सेवानिवृत्त हुए थे। इस मामले की पहली मंजिल पर अपने दो बेटों और उनके परिवारों के साथ रहते थे। डीसीपी अर्पूवा गुप्ता ने बताया कि शव को एलबीएस अस्पताल की पोर्चरी में पोस्टमार्टम के लिए रखवाया गया है। शुरुआती जांच में पीड़ित परिवार ने बताया कि दो बदमाशों ने घुसकर बुजुर्ग की चाकू मार करके हत्या की है। आसपास लगे सीसीटीवी फुटेज को खंगाला जा रहा है, ताकि हत्यारे की पहचान की जा सके।

मौज-मस्ती के लिए छात्र ने किया था ई-मेल, पुलिस ने हिरासत में लिया

नई दिल्ली। दक्षिण जिले के ग्रेटर कलाश स्थित समर फील्ड स्कूल में बम रखे होने की सूचना देने के आरोप में पुलिस ने स्कूल के ही नौवीं कक्षा के छात्र को हिरासत में लिया है। मौज-मस्ती के लिए स्कूल की छुट्टी कराने के लिए छात्र ने ईमेल कर पुलिस व स्कूल प्रशासन के होश उड़ा दिए थे। स्कूल की तलाशी लेने के बाद जब वहां कुछ नहीं मिला तो ईमेल को हॉक्स करार दे दिया गया। बाद में साइबर थाना पुलिस ने इस संबंध में केस दर्ज कर खानबीन शुरू की। जांच हुई तो 15 वर्षीय छात्र का पता चला। उसे सीआर पार्क से दबोच लिया गया। पूछताछ के दौरान छात्र ने अपना अपराध भी कबूल कर लिया है। पुलिस ने छात्र के पास से वास्तुगत में इस्तेमाल मोबाइल फोन बरामद कर लिया है। परिजनों और कारंसेलर को मौजूदगी में छात्र ने बताया है कि उसने पिछले दिनों स्कूल, अस्पतालों और दूसरे भवनों बम की झूठी सूचना की खबर को देखा था। यही उसे आइडिया लेकर उसने अपने स्कूल को ईमेल करने की योजना बनाकर वास्तुगत को अंजाम दिया। दक्षिण जिले के डीसीपी अंकित चौहान ने बताया कि शुक्रवार को ग्रेटर कलाश थाने को समर फील्ड स्कूल की ओर से कॉल कर एक सूचना दी गई थी। स्कूल प्रशासन ने बताया कि उनके ऑफिशियल ईमेल आईडी पर किसी ने ईमेल किया हुआ है। उसमें स्कूल में बम रखा होने की बात की गई है।

एनडीएमसी ने शिकायत निवारण सुविधा शिविर का किया आयोजन

नई दिल्ली। नई दिल्ली नगरपालिका परिषद (एनडीएमसी) ने अपने क्षेत्र के लोगों और सेवा उपभोक्ताओं को सूचना, सुविधा और शिकायत निवारण प्रदान करने के लिए आज सुबह एनडीएमसी कन्वेंशन सेंटर में सुविधा शिविर का आयोजन किया। शिविर में कुल 115 शिकायतें प्राप्त कीं। निवासियों की अधिकांश शिकायतें कार्मिक, सिविल इंजीनियरिंग, बागवानी, सार्वजनिक स्वास्थ्य, प्रदूषण, वाणिज्यिक, कर और संपदा विभागों से संबंधित हैं। इसके अलावा सैकड़ों स्थानीय निवासियों और सेवा उपभोक्ताओं ने नागरिक सेवाओं के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए सुविधा शिविर का दौरा किया। पालिका परिषद द्वारा शिकायतों के शीघ्र समाधान के लिए विभिन्न विभागों से संबंधित अधिकारियों ने जनता से उनकी जन शिकायतों पर आमने-सामने चर्चा की और उनका समाधान किया गया।

सांसद संजय सिंह ने ट्रेनों में महिला यात्रियों की सुरक्षा पर उठाए सवाल

नई दिल्ली। भारतीय रेलवे में महिला सुरक्षा कर्मियों की भारी कमी है। महिला सुरक्षा कर्मियों की यह कमी ट्रेनों में सफर करने वाली महिलाओं की सुरक्षा पर गंभीर सवाल खड़े कर रहा है। इस संबंध में आम आदमी पार्टी के सांसद संजय सिंह द्वारा रेल मंत्रालय से कई सवाल पूछे गए थे, जिनका मंत्रालय ने जवाब दिया है। संजय सिंह के अनुसार मंत्रालय से मिले जवाब के मुताबिक ट्रेनों के आरक्षित डिब्बों में रोजाना सफर कर रही 66 लाख महिलाओं की सुरक्षा में 'मेरी सहेली' स्कीम के तहत मात्र 700 महिला सुरक्षा कर्मी ही तैनात हैं। जबकि रेलवे में करीब 63 हजार सेवा कर्मी तैनात हैं और इसमें मात्र 9.36 फीसद यानी 5900 महिला सुरक्षा कर्मी तैनात हैं। संसद के मनीसून सत्र में आम आदमी पार्टी के राज्यसभा सांसद संजय सिंह द्वारा भारतीय रेल में महिला यात्रियों की सुरक्षा के संबंध में पूछे गए अंतराधिक प्रश्न का जवाब रेल मंत्रालय द्वारा 25 जुलाई 2024 को दिया गया।

Name Change
I, SHIPRA DUTTA W/O RAVI DUTTA residing at B-9/6253, VAS-ANT KUNJ, DELHI-110070 have changed my minor son name from SCHWAAS TO SCHWAAS DUTTA for all future purposes.

Name Change
I, KAPIL KUMAR JUNEJA / KAPIL JUNEJA S/O BALDEV RAI residing at 14/444 ASHOKA SOCIETY SEC-TOR-14 VASUNDHARA GHAZIABAD UP-201012 have changed my name to KAPIL KUMAR for all future purposes.

Name Change
I, hitherto known as Ramesh Balli alias Ramesh Chander Balli S/O Brahm Nath R/O-19/284, Block-19, Sarabasti, Sara-Rohilla, Delhi-110035, have changed my name and shall hereafter be known as Ramesh Chander Balli.

Name Change
I, ANAMIKA S Daughter of No. 15230380V Rank-RHM Name-REJUJ KUMAR S Presently residing at NANDANAM, MARANADU, BHARATHANNOOR, PANGODE, THIRUVANANTHAPURAM, KERALA-695609 have changed my name from ANAMIKA S to ANAMIKA REEJUJ S for all future purposes vide Affidavit Dated 03/08/2024 before Notary Public, Delhi.

Name Change
I, PRIYANKA BANSAL W/O KUNAL BANSAL Residing H.No. 1/9 J, Medical Campus, PGIMS, Rohtak -124001 have changed my name from PRIYANKA BANSAL to PRIYANKA RAI for all future purposes.

Name Change
I, hitherto known as NIRUPAMA PRADHAN D/O FAKIRA PRADHAN R/O PARMANENT ADDRESS VIL-LAGE-MASEDKIPANGANAJU, PO-RAIKKA, DIST- KANDHAMAL ODISHA-762101 PRESENT ADDRESS A-5,GALI NO. 3 A-BLOCK HARIT VIHAR BURARI DELHI-110084 have changed my name and shall hereafter be known as TILOTAMA PRADHAN.

राज्य एक दूसरे की सर्वोत्तम प्रथाओं और अनुभव से सीख कर आगे बढ़ें: मुर्मु

एजेंसी नई दिल्ली।राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने कहा कि देश का विकास राज्यों के समावेशी एवं त्वरित विकास पर निर्भर करता है इसलिए सभी राज्यों को एक-दूसरे की सर्वोत्तम प्रथाओं और अनुभवों से सीखकर आगे बढ़ना चाहिए।

राज्यपालों का दो दिवसीय सम्मेलन के आज राष्ट्रपति के सम्मान भाषण के साथ संपन्न हुआ। उन्होंने सम्मेलन में परस्पर सीख की भावना से व्यापक चर्चा करने के लिए राज्यपालों के सामूहिक प्रयासों की सराहना की। उन्होंने इस बात की सराहना की कि राज्यपालों के विभिन्न समूह अपने कार्यालय के कामकाज में सुधार के साथ-साथ लोगों के कल्याण के लिए अपने मूल्यवान विचार और सुझाव लेकर आए, और विश्वास व्यक्त किया कि इन सुझावों को लागू किया जाएगा। सम्मेलन का दूसरा दिन राज्यपालों के छह समूहों द्वारा अपने विचार-विमर्श के आधार पर प्रस्तुतियाँ देने और राष्ट्रपति के



उपराष्ट्रपति ने कहा कि दो दिवसीय सम्मेलन ने सभी प्रतिभागियों के मन पर एक अमिट छाप छोड़ी है, जिन्होंने महत्वपूर्ण मुद्दों पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा कि राज्यपालों को प्रभावी कामकाज के लिए संबंधित राज्य सरकारों के साथ राज्याधीन मांगों और निरंतर संचार बनाए रखने में संकोच नहीं करना चाहिए।

प्रधानमंत्री ने राज्यपालों से राजभवनों में शासन का एक आदर्श मॉडल विकसित करने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि राजभवनों के प्रभावी संचालन के लिए कर्मचारियों को प्रशिक्षित करने का लगातार प्रयास किया जाना चाहिए। उन्होंने राज्यपालों से अपने कामकाज में प्रौद्योगिकी को अपनाने और डिजिटलीकरण को बढ़ावा देने का भी आग्रह किया। प्रधान मंत्री ने विशेष रूप से शैक्षणिक संस्थानों के पूर्व छात्र नेटवर्क की ताकत का दोहन करने का आह्वान किया और उनसे शैक्षणिक परिसरों को नशीली दवाओं से मुक्त बनाने के लिए एक जन अभियान विकसित करने की अपील की। उन्होंने गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत द्वारा सुझाए गए प्राकृतिक खेती का भी उल्लेख किया और अन्य राज्यपालों से अन्य राजभवनों में प्राकृतिक खेती के मॉडल का अनुकरण करने और अपने परिसरों को रसायनों से मुक्त बनाने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि राजभवनों को दूसरों के लिए प्रेरणा

राहुल को गिरफ्तार करने की सोचना भी नहीं: सिधवी



एजेंसी नई दिल्ली कांग्रेस नेता अभिषेक मनु सिंघवी ने भारतीय जनता पार्टी को चेतावनी दी है कि यदि लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी को गिरफ्तार किया गया तो देश की जनता उसके (भाजपा) ताबूत में आखिरी कोल ठेक देगी। उन्होंने हिदायत देते हुए कहा कि प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) इस बारे में अगर सोचता भी है तो यह भाजपा की बड़ी गलती होगी, इसलिए श्री गांधी को गिरफ्तार करने के बारे में कभी सोचना भी नहीं। श्री सिंघवी ने ट्वीट कर कहा कि गिरफ्तार करने के बारे में सोचना भी है, तो देश की जनता भाजपा का ताबूत में आखिरी कोल ठेक देगी।

राष्ट्र निर्माण में सामूहिक योगदान देना होगा: कोविंद

एजेंसी नई दिल्ली। पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने कहा कि देश अमृत काल के प्रारंभ से गुजर रहा है और भारत को एक बार फिर विश्व गुरु बनाने के लिए सभी को राष्ट्र निर्माण में सामूहिक रूप से योगदान देना होगा।

श्री कोविंद ने यहां सेठ आनंदराम जैपुरिया रूफ ऑफ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट्स द्वारा विजय गुरु के रूप में भारत का उदय नया युग, नयी उचाइयाँ विषय पर आयोजित पांचवें डॉ. राजाराम जैपुरिया मेमोरियल लेक्चर में भारत की समृद्ध आध्यात्मिक और वैज्ञानिक विरासत को झूठे हुए, भारत



के गौरवशाली अतीत के बारे में विस्तार से बात की। उन्होंने दुनिया के रेखांकित किया।

उन्होंने कहा, भारत ने दुनिया को अतिरिक्त कार्यक्रम सर्वश्रेष्ठ में से एक है। हम चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर पहुंच गए हैं, मंगल ग्रह पर एक ऑर्बिटर भेजा है और मिशन आदित्य एल। के माध्यम से सूर्य का अध्ययन कर रहे हैं। हमारे पास एक संपन्न डिजिटल अर्थव्यवस्था है। सेठ आनंदराम जैपुरिया रूफ ऑफ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट्स में स्वागत भाषण में कहा, हमारा देश इस समय एक निर्णायक मोड़ पर है। हम अमृत काल में भारत को विकसित भारत बनाने के लिए सामाजिक-आर्थिक

विकास और मजबूत राजनीतिक इच्छाशक्ति देख रहे हैं। देश के विकास को आगे बढ़ाने के लिए भारतीय युवाओं को सशक्त बनाने में शिक्षा एक बड़ा उपकरण होगा। इसे उद्योग की तेजी से बदलती जरूरतों के साथ जोड़ना होगा। ध्यान मानने योग्य परिणामों के साथ परिणाम-आधारित शिक्षा पर होना चाहिए ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि छात्र वास्तविक दुनिया के परिदृश्यों में लागू प्रसांगिक कौशल और ज्ञान प्राप्त करें। हमें अकादमिक अनुसंधान और नवाचार की संस्कृति का निर्माण और रखरखाव करना होगा।

सरकार का जैविक कृषि उपज के निर्यात पर जोर

एजेंसी नई दिल्ली। सरकार ने भारतीय जैविक कृषि उपज का निर्यात बाजार में हिस्सेदारी बढ़ाने के लिए पांच महत्वपूर्ण बिंदुओं पर जोर दिया, जिसमें लेबलिंग, पैकेजिंग, ब्रांडिंग, लाइसेंसिंग, प्रमाणीकरण और परीक्षण शामिल हैं। केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय में सचिव सुनील बर्थवाल ने ग्रेटर नोएडा के इंडिया एक्सपो मार्ट में आयोजित तीन दिवसीय जैविक, प्राकृतिक और बाजरा उत्पादों की प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए कहा कि हल ही में बजट में गुणवत्ता जांच और खाद्य गुणवत्ता के लिए 100 प्रयोगशालाएं स्थापित करने के लिए आवंटन किया गया है, जिससे उद्योग को वैश्विक मानकों को पूरा करने में मदद मिलेगी। प्रदर्शनी 'बीयोफाक इंडिया 2024, नैचुरल एक्सपो इंडिया' एवं मिलेट्स इंडिया का आयोजन



सबसे बड़े लोकतंत्र और सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्था के रूप में भारत की विशाल क्षमता को भी शून्य और दशमलव की अवधारणा दी है। प्राचीन काल के कई महान भारतीय विचारकों ने दुनिया भर में

वर्ष 2023-24 में भारत का जैविक खाद्य निर्यात लगभग 49 अरब 48 करोड़ डॉलर तक बढ़ चुका है। एपीड के अध्यक्ष अभिषेक देव ने कहा कि भारत की विशाल कृषि विविधता और स्वास्थ्य के प्रति बढ़ती जागरूकता के चलते भारतीय जैविक उत्पादों में अंतर्राष्ट्रीय बाजार में अपार संभावनाएं हैं।

आतिशी को आशा किरण आश्रय गृह की दुर्भाग्यपूर्ण मौतों की नैतिक जिम्मेदारी लेनी चाहिए : वीरेंद्र सचदेवा

दयनीय स्थितियों के सबूत हैं। हम इसे मजिस्ट्रियल जांच में प्रस्तुत करेंगे। दिल्ली भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि 14 अगस्त 2023 की राजपर



अभिप्रेक्षा के अनुसार आतिशी को 14 विभागों का नाम देकर आवंटित किया गया है और उनके 14वें विभाग के नाम के साथ वहां उल्लेख किया गया है, सतकंता और अन्य सभी विभाग जो किसी अन्य मंत्री के विशेष रूप से आवंटित नहीं हैं। सचदेवा ने कहा कि आतिशी को आशा किरण आश्रय गृह की

दुर्भाग्यपूर्ण मौतों के लिए दिल्लीवासियों से माफ़ी मांगनी चाहिए। यह चौंकाने वाली बात है कि आतिशी के जिम्मेदारी से पलायन के कारण दिल्ली के पास समाज कल्याण विभाग जैसे महत्वपूर्ण विभागों के लिए एफआईसी मंत्री नहीं हैं। आतिशी को दिल्लीवासियों को बताना चाहिए कि उन्होंने एससी कल्याण और समाज कल्याण विभाग के अधिकारियों के साथ कितनी बैठकों की हैं या आशा किरण आश्रय गृह जैसे कल्याण केंद्रों का कितनी बार दौरा किया है।

Name Change
I, AJAY SINGH Son of Shri RAJBHADUR SINGH, Residing at VPO: Mokhra Kheri (102), Rohtak - 124022 have use my Given name as AJAY and Surname as SINGH for all purpose

Name Change
I, NO-15433021V Rank-NK Name-SHUNJ LAL PM legal father of DHANVI R/O POYIL, MEETHAL, KAYANA PO-MATTANOODE, DIST-TKZHOKKODE, KERALA-673527 have changed my minor daughter's name from DHANVI TO DHANVI S for all future purposes vide affidavit dated 03/08/2024 before Notary Public, Delhi.

Name Change
I, NO-16124242Y Rank-SPR Name-LONDHE VAIBHAV BAJARANG S/O LONDHE BAJARANG BABU R/O VPO-BAMAL, TAL-BHUDARGAD, DIST-KOLHAPUR, MAHARASHTRA-416209 have changed my minor daughter's name from GURUSHRI to GURUSHRI VAIBHAV LONDHE for all future purposes vide Affidavit dated 03/08/2024 before Notary Public, Delhi.

Name Change
I, CHAITANYA KATOCH, B-502, AVINASH KATOCH, R/O, B-502, RANJIT VIHAR-1, SECTOR-22, MANISH GLOBAL MALL, DWARKA, NEW DELHI-110077, have changed my name from CHAITANYA KATOCH to CHAITANYA SINGH KATOCH for all future purpose.

Name Change
I, SOBHA Wife of No. 15320380V Rank-RHM Name-REJUJ KUMAR S Presently residing at NANDANAM, MARANADU, BHARATHANNOOR, PANGODE, THIRUVANANTHAPURAM, KERALA-695609 have changed my name from SOBHA to SOBHA C for all future purposes vide Affidavit Dated 03/08/2024 before Notary Public, Delhi.

Name Change
I, UPKAR SINGH S/O AMRIS SINGH R/O M-108,3RD FLOOR, HARI NAGAR, MAYA PURI, SOUTH WEST DELHI, DELHI-110064 have changed the name of my minor daughter HARMANJEET KAUR alias HARMAN JEET KAUR RANDHAWA aged 14 years and she shall hereafter be known as HARMAN JEET KAUR RANDHAWA.

Name Change
I, SHAKUNAT MALIK W/O MOHD SABIR MALIK R/O M-54/A ABUL FAZAL ENCALVE-1 THOKER NO-02, SECTOR-7, DWARKA, NEW DELHI-110075 have changed my name to SHAKUNAT MALIK FOR ALL PURPOSE.

खोया पाया
मैं धमंडे पोद्दार पुत्र हल नरवण पोद्दार पता। पी-4/125, मौलीपुरी दिल्ली-110083 ने मेरा-आंशुसोहीसोहीसो वैंक-आंशुसोही काई नंबर 2405170 खो दिया है। अगर किसी को यह हल मिले तो कृपया मुझे लौटा दें, तब तक न तो बैंक और न ही मैं इसके लिए जिम्मेदार हूँ। एफआईआर नंबर: 1979005/2024, मोबाइल:922644481.

DATE OF BIRTH CHANGE
I, SUNDARESAN Father of NO. 15703167N Rank-HAV Name-RAJESH D S residing at VILL-DHARAPADAVEUDU, PO-KATPADI, TEH-KATPADI, DIST- VELLORE, TAMIL NADU-632007, have changed my name from LILLY KUTTY TO LILLYKUTTY DOMINIC for all future purposes, in my son's service record my date of birth wrongly mentioned as 01/07/1962 instead of my correct date of birth as 05/01/1965 vide affidavit dated 03/08/2024 before Notary Public, Delhi.

Name Change
I, LILLY KUTTY mother of No. 16115031P Rank-LINK Name-JOBIN T R/O THENAMAKKAL, CHAP-PAKADAVU, PAYAVOOR, KANNUR, KERALA-670833 have changed my name from LILLY KUTTY TO LILLYKUTTY DOMINIC for all future purposes, in my son's service record my date of birth wrongly mentioned as 01/07/1962 instead of my correct date of birth as 05/01/1965 vide Affidavit dated 03/08/2024 before Notary Public, Delhi.

Name Change
I, MAHESHWARI M Wife of No. 14857476H Rank-HAV Name-MARIMUTHU S Presently residing at 4/13, EAST STREET, NAGALA-PURAM, INJAVUR, VIRUDHUNAGAR, TAMIL NADU-626124 have changed my name from MAHESHWARI M to MAHESHWARI S for all future purposes vide Affidavit Dated 03/08/2024 before Notary Public, Delhi.

Name Change
I, T T GEORGE father of No. 16115031P Rank-LINK Name-JOBIN T R/O THENAMAKKAL, CHAP-PAKADAVU, PAYAVOOR, PO-CHANDANAKAMPARA, DIST-KANNUR, KERALA-670833 have changed my name from T T GEORGE to GEORGE THOMAS for all future purposes, in my son's service record my date of birth wrongly mentioned as 01/07/1962 instead of my correct date of birth as 25/05/1964 vide Affidavit dated 03/08/2024 before Notary Public, Delhi.

Name Change
I, MOOHD AKIL S/O SAVDAR residing at HOUSE NO E 14/G24 G BLOCK NEW SEELAMPUR DELHI-110053 have changed my name to MOHD ALIK S/O SAVDAR all future purpose

Name Change
I, SABIR MALIK S/O SIDDIQ R/O M-54/A ABUL FAZAL ENCALVE-1 THOKER NO-5, JAMIA NAGAR OKHLA DELHI-110025 HAVE CHANGE MY NAME TO MOHD SABIR MALIK FOR ALL PURPOSE.

NAME CHANGE
I, S KUMARI mother of NO-15703167N Rank-HAV Name-RAJESH D R S residing at VILL-DHARAPADAVEUDU, PO-KATPADI, TEH-KATPADI, DIST- VELLORE, TAMIL NADU-632007, have changed my name from S KUMARI to RAJAKUMARI for all future purposes, in my son's service record my date of birth wrongly mentioned as 01/07/1959 instead of my correct date of birth as 01/06/1958 vide affidavit dated 03/08/2024 before Notary Public, Delhi.

Name Change
I, KUSHUM DEVI Mother of No. 15691095A Rank-HAV, Name-DILIP KUMAR SINGH R/O VPO-DULLAH-PUR, TEH-SIMRI, DIST-BUXAR, BIHAR-802118 have changed my name from KUSHUM DEVI TO KUSUMA DEVI for all future purposes and in my son's service record my date of birth wrongly mentioned as 01/07/1953 instead of my correct date of birth as 05/08/1950 vide Affidavit dated 03/08/2024 before Notary Public, Delhi.

Name Change
I, SITA RAM SINGH Father of No. 15691095A Rank-HAV, Name-DILIP KUMAR SINGH R/O VPO-DULLAH-PUR, TEH-SIMRI, DIST-BUXAR, BIHAR-802118 have changed my name from SITA RAM SINGH TO SITARAM SINGH for all future purposes and in my son's service record my date of birth wrongly mentioned as 01/07/1948 instead of my correct date of birth as 13/08/1942 vide Affidavit dated 03/08/2024 before Notary Public, Delhi.

कौमी पत्रिका

संपादक-गुनचन सिंह बब्बर स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक, गुनचन सिंह बब्बर ने कौमी पत्रिका प्रिंटिंग प्रेस, सेक्टर-ए-4/ए-144 इस्टडीवेल एरिया ट्रांकिफा सिटी लोनी (गाँवयाबाद), उत्तर प्रदेश से छापकर प्रकाशित किया।
Corporate Office:
5, Bahadurshah Zafar Marg ITO, New Delhi-110002
फोन : 011-41509689, 23315814
मोबाइल नंबर : 9312262300
E-mail address :
qpatrika@gmail.com
Website: www.gunpatrika.in
R.N.I. No. UP-HIN/2007/21472
Legal Advisors:
Advocate Mohd. Sajid Advocate Dr. A. P. Singh Advocate Manish Sharma Advocate Pooja Bhatkar Sharma

जीएसटी रजिस्टर्ड व्यापारी को दुर्घटना होने पर पांच लाख रुपये देते हैं : राजीव जैन

एजेंसी
सोनीपत। मुख्यमंत्री के पूर्व मिडिया सलाहकार राजीव जैन ने कहा कि सरकार व्यापारी कल्याण बोर्ड के माध्यम से जीएसटी रजिस्टर्ड व्यापारी को दुर्घटना होने पर पांच लाख रुपये का व्यक्तिगत तथा किसी भी आपदा से होने वाले नुकसान की दशा में पांच लाख रुपये तक के स्टॉक का बीमा करने की योजना शुरू कर रही है। इसके लिए व्यापारी द्वारा व्यापारी कल्याण बोर्ड में रजिस्ट्रेशन करवाना जरूरी है। छोटे राम चौक पर स्थित मनु कार एसेसरीज के तीन मंजिला शो रूम में सुबह बिजली के शॉर्ट सर्किट के कारण आग लग गई जिससे लाखों रुपये का सामान जल कर खाक हो गया। फायर ब्रिगेड की गाड़ियों ने पहुंचकर आग पर काबू किया और पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी। घटना की सूचना मिलते ही भाजपा नेता राजीव जैन मंडल महामंत्री राजकुमार शर्मा के साथ दुकान मालिक नवीन कुमार के प्रतिपत्न्य पर पहुंचे और घटना की जानकारी ली। नवीन ने बताया कि अभी दो दिन पहले ही मैंने काफी सामान खरीदकर दुकान में भरा था और अब सब कुछ नष्ट हो गया है जिसके कारण मैं पूरी तरह से बर्बाद हो गया। राजीव जैन ने दुकानदार को सांत्वना देते हुए आश्वासन दिया कि वह प्रशासन एवं सरकार से मदददिलवाने का प्रयास करेंगे।

पंजाब के बाद हरियाणा के मतदाता बना चुके हैं बदलाव का मन : संजय सिंह

जौद। आप के राज्यसभा सांसद संजय सिंह ने कहा कि आम आदमी पार्टी दिल्ली, पंजाब के बाद हरियाणा में बदलाव करेंगी। हरियाणा में आज स्वास्थ्य सेवाओं को बुरा हाल है। शिक्षा की तरफ कोई ध्यान नहीं है। प्रदेश में बेरोजगारी बढ़ रही है। दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल की पांच गारंटी जो है उन गारंटियों को सत्ता में आने के बाद पूरा करने का काम करेंगे। आप के राज्यसभा सांसद संजय सिंह उजाना की कपास मंडी आम आदमी पार्टी की बदलाव रैली को संबोधित कर रहे थे। रैली में आप नेता अनुराग ढंडा मुख्य रूप से पहुंचे। दिल्ली सीएम अरविंद केजरीवाल की पत्नी सुनीता केजरीवाल को जनसभा में आना था लेकिन वो किसी कारणवश नहीं पहुंच सकी। संजय सिंह ने कहा कि अरविंद केजरीवाल की बढ़ती लोकप्रियता से भाजपा बौखला चुकी है। जो-जो वायदे आम ने किए हैं उन वायदों को पूरा करने का काम आप सत्ता में आने के बाद करती है। दिल्ली में लगातार आप पर वह के लोग विश्वास जता रहे हैं तो पंजाब में भी प्रचंड बहुमत से आप सत्ता में आई है। अब हरियाणा की बारी है। हरियाणा के बेटे के साथ जो बीजेपी ने किया है उसका बदला हरियाणा के मतदाता वोट की चोट से लेंगे। प्रदेश में आप की सरकार बनेगी।

जर्मनी के साथ स्वास्थ्य सेवाओं व ऑटोमोबाइल में उद्योग बढ़ाएगा हरियाणा

चंडीगढ़। हरियाणा एवं जर्मनी आने वाले समय में स्वास्थ्य सेवाओं व ऑटोमोबाइल के क्षेत्र में औद्योगिक विकास को बढ़ावा देगा। हरियाणा व जर्मनी के उद्योगपतियों को जल्द ही एक मंच पर बिठया जाएगा। इसी उद्देश्य के साथ जर्मनी के फ्रैंकफर्ट सिटी के सांसद राहुल कुमार कंबोज के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल ने मुख्यमंत्री नायब सैनी से मुलाकात की। राहुल कुमार मूल रूप से हरियाणा के यमुनानगर जिले के रहने वाले हैं और जर्मनी में भारतीय मूल के लोगों की कई संस्थाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। राहुल के साथ जर्मनी से यहां आए हरियाणवी मूल के सौरभ भगत, कपिल कुमार, श्रवण कुमार ने मुख्यमंत्री के साथ स्वास्थ्य तथा ऑटोमोबाइल क्षेत्र में व्यापारिक समझ को बढ़ाने पर चर्चा की। राहुल कुमार कंबोज ने बताया कि हरियाणा इन दोनों क्षेत्रों में तेजी से आगे बढ़ रहा है। जर्मनी के बहुत से उद्यम इस क्षेत्र में भारत में पूंजी निवेश करके अपने उकर्म लगाना चाहते हैं। इसी उद्देश्य के साथ अक्टूबर के दौरान उद्योगपतियों का एक शिष्टमंडल भारत दौर पर चंडीगढ़ आएगा। हरियाणा में रेल व एयर कनेक्टिविटी वाले शहरों में औद्योगिक विकास को प्रबल संभावनाएं हैं। मुख्यमंत्री ने जर्मन प्रतिनिधियों से बातचीत के बाद कहा कि राहुल कुमार ने जर्मनी में हरियाणा का नाम रोशन किया है। हरियाणा सरकार विदेशी पूंजी निवेश को बढ़ावा देने के लिए कई तरह की योजनाओं पर काम कर रही है।

डॉ. दिव्या सेठी भाजपा महिला मोर्चा की प्रदेश सचिव नियुक्त

हिसार। भाजपा महिला मोर्चा की प्रदेश अध्यक्ष उषा प्रियदर्शि ने मोर्चा की प्रदेश कार्यकारिणी का विस्तार किया है। कार्यकारिणी का विस्तार करते हुए हिसार की डॉ. दिव्या सेठी को पार्टी के प्रति उनकी निष्ठा और कार्यप्रणाली को देखते हुए प्रदेश सचिव नियुक्त किया है। डॉ. दिव्या सेठी ने अपनी नियुक्ति पर मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी, पार्टी प्रदेश अध्यक्ष मोहन लाल कौशिक, प्रदेश प्रभारी सतीश पूनिया, महिला मोर्चा प्रदेश अध्यक्ष उषा प्रियदर्शि सहित सभी वरिष्ठ नेताओं का आभार जताया। उन्होंने कहा कि पार्टी संगठन ने उन पर जो विश्वास जताया है वो उस पर खरा उतरते हुए पार्टी संगठन को मजबूत बनाने के लिए कार्य करेंगी और पार्टी व सरकार की नीतियों का प्रचार करते हुए महिलाओं को भाजपा से जोड़ने का काम करेंगी।



मनोहर लाल खट्टर ने साधा कांग्रेस नेता राहुल गांधी पर निशाना

एजेंसी
करनाल। बीजेपी के वरिष्ठ नेता व केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल खट्टर ने कांग्रेस नेता राहुल गांधी पर निशाना साधा है। उन्होंने कहा कि इतना बड़ा है, जिसके मन में पाप होता है। अगर उनके मन में पाप है, तो वह बाहर निकलेगी। खट्टर ने दीपेंद्र हुड्डा और कुमारी शैलजा पर भी हमला किया। केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल खट्टर करनाल पहुंचे। यहां उन्होंने कार्यकर्ताओं से मुलाकात की और उनके काम पूछे। उन्होंने कहा, 12 अगस्त तक लोकसभा का सेशन चल रहा है। व्यस्तता के बीच मैंने कार्यकर्ताओं के लिए समय निकाला है, ताकि उनसे मिलना जुलना हो जाए। पानीपत व करनाल में भी लोगों



से मिला और उनकी समस्याएं जानीं। उन्होंने ओलंपिक में हरियाणा और भारत के शानदार प्रदर्शन पर कहा,

है। बाकी जो खेल बचे हैं, उसमें भी भारत के मेडल आएंगे। राहुल गांधी द्वारा ईडी की रैड मारने की बात पर

मनोहर लाल ने कहा कि इसे कहते हैं चोर की दाढ़ी में तिनका, डरता वही है, जिसके मन में पाप होता है।

ऊर्जा मंत्री ने विभिन्न गांवों का दौरा कर सुनी आमजन की समस्याएं, अधिकारियों को दिए जल्द समाधान के निर्देश

एजेंसी
सिरसा। हरियाणा के ऊर्जा मंत्री रणजीत सिंह ने जिला सिरसा के गांव मल्लेवाला, बुढ़ाभाणा, किराड़कोट, नेजाडोला खुर्द का दौरा किया। इस दौरान ग्रामीणों ने ऊर्जा मंत्री का फूल मालाओं से जोरदार स्वागत किया। दौरे के दौरान ग्रामीणों ने ऊर्जा मंत्री के समक्ष अपनी समस्याएं भी रखीं। जिनमें से कुछ समस्याओं का उन्होंने मौके पर ही निवारण किया। कई अन्य समस्याओं के समाधान के लिए उन्होंने अधिकारियों को दिशा निर्देश दिए। ऊर्जा मंत्री ने ग्रामीणों को



संबोधित करते हुए कहा कि प्रदेश सरकार हर वर्ग के हितों को ध्यान में रखकर अनेकों योजनाएं लागू कर

रही है। योजनाओं के सही क्रियान्वयन के चलते आज कमरे वर्ग को सीधा लाभ पहुंच रहा है।

कुरुक्षेत्र की पावन धरा से बजेगा हरियाणा विधानसभा चुनावों का बिगुल - सुभाष सुधा

एजेंसी
चंडीगढ़। हरियाणा के शहरी स्थानीय निकाय राज्यमंत्री एवं जनसभा के संयोजक सुभाष सुधा ने कहा कि धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र की पावन धरा से हरियाणा विधानसभा चुनावों का बिगुल 4 अगस्त को बजने जा रहा है। इस पवन धरा पर 4 अगस्त को सुबह 10 बजे थानेसर अनाज मंडी में 90 हलकों की पहली थानेसर विधानसभा क्षेत्र की जनसभा होने जा रही है। इस जनसभा को मुख्यमंत्री नायब सिंह के साथ-साथ केंद्रीय मंत्री एवं चुनाव प्रभारी धर्मेन्द्र प्रधान, केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल, एवं सांसद एवं सह प्रभारी विप्लव देव, भाजपा प्रदेशाध्यक्ष मोहनलाल बड़ौला, हरियाणा भाजपा प्रभारी डॉ. सतीश पूनिया, सह प्रभारी सुरेंद्र नागर के साथ-साथ केंद्रीय मंत्री और विधायकगण भी शामिल होंगे। राज्य मंत्री सुभाष सुधा सर्किट हाउस में थानेसर विधानसभा रैली को लेकर पत्रकारों से बातचीत कर रहे थे। राज्यमंत्री ने थानेसर विधानसभा रैली के लिए कुरुक्षेत्र वासियों को

निमंत्रण देते हुए केंद्रीय संगठन का धन्यवाद किया कि थानेसर विधानसभा क्षेत्र से हरियाणा विधानसभा चुनावों का बिगुल बजने जा रहा है। इस चुनावी रैली के बाद



प्रदेश की सभी 90 विधानसभाओं में रैलियों का आयोजन किया जाएगा। इस जनसभा को लेकर कुरुक्षेत्र का जगजगत् में जोश और उत्साह देखने को मिल रहा है। इससे स्पष्ट प्रतीत हो रहा है कि प्रदेश में तीसरी बार भाजपा की सरकार बनेगी और मुख्यमंत्री नायब सिंह देवारा प्रदेश के मुख्यमंत्री की बागडोर संभालेंगे।

उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री नायब सिंह ने हमेशा गीता स्थली ज्योतिषर में भगवान श्रीकृष्ण का आशीर्वाद

लेकर अपने हर नेक कार्य का शुभारंभ किया। इसलिए विधानसभा चुनावों की शुरुआत करने के लिए मुख्यमंत्री नायब सिंह भगवान श्रीकृष्ण का आशीर्वाद लेकर एकर बार फिर से सच की जीत के लिए बिगुल बजाएंगे। इस जनसभा को लेकर भारतीय जनता पार्टी की तरफ से सभी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं और एक-एक कार्यकर्ता जी-जान और पूरे उत्साह के साथ तैयारियों में लगा हुआ है। इस जनसभा को ऐतिहासिक और यादगार बनाने के लिए कार्यकर्ताओं ने कोई कसर नहीं छोड़ी है और 4 अगस्त को सुबह 10 बजे थानेसर अनाज मंडी में हजारों की संख्या में लोग पहुंचेंगे और भाजपा को मजबूत करेंगे। इस मौके पर पूर्व सांसद संजय भाटिया, पूर्व मंत्री कृष्ण कुमार बेदी, भाजपा के जिला अध्यक्ष सुशील राणा, मुख्यमंत्री के मीडिया प्रभारी अशोक छाबड़ा, भाजपा के पूर्व, जिला मीडिया प्रभारी शैलेश वत्स, विनोद कान्ना, भाजपा के सह मीडिया प्रमुख दिवाकर कुमार आदि उपस्थित थे।

मतदाता सूचियों का किया जा रहा द्वितीय विशेष पुनरीक्षण - पंकज अग्रवाल

एजेंसी
चण्डीगढ़। भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार 1 जुलाई 2024 को निर्धारित तिथि मानकर राज्य की सभी विधानसभा क्षेत्रों की मतदाता सूचियों का द्वितीय विशेष पुनरीक्षण कार्य किया जा रहा है। इस कार्यक्रम के अनुसार 02 अगस्त 2024 को राज्य के 90 विधान सभा क्षेत्र के सभी मतदाता केंद्रों पर मतदाता सूचियों का प्रारम्भिक प्रकाशन संबंधित निविचन पंजीयन अधिकारी द्वारा किया गया है।

इस संबंध में मुख्य निर्वाचन अधिकारी, हरियाणा पंकज अग्रवाल ने बताया कि मतदाता सूचियों का द्वितीय विशेष पुनरीक्षण कार्यक्रम के अनुसार पात्र व्यक्तियों से 16 अगस्त तक नए वोट बनाने के लिए दावे तथा अपितियों दर्ज किये जाएंगे। इस दौरान कोई भी पात्र व्यक्ति अपने नए वोट बनवाने के फार्म सम्बन्धित बूथ पर बी.एल.ओ. को जमा करवा सकते हैं। इसके अलावा 3 व 4 अगस्त तथा 10 व 11 अगस्त 2024 शनिवार व रविवार को भी विशेष अभियान चलाया

सेवा संघ ने मनाया स्थापना दिवस, शुरू किया फिजियोथैरेपी सेंटर

एजेंसी
कैथल। सेवा संघ संस्था ने अपना 45 वां स्थापना दिवस सेवा संघ कार्यालय में मनाया। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की हजुरी में मनाए गए स्थापना दिवस पर श्री सुखमणि साहिब का पाठ का आयोजन हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विधायक लीला राम ने संस्था कार्यालय में स्व. वेद प्रकाश सेट मेमोरियल फिजियोथैरेपी केंद्र का उद्घाटन किया। उद्घाटन पर सेंटर के प्रायोजक समाजसेवी सतीश सेठ व उनके परिवार के सदस्य तथा सेवा संघ के संस्थापक एवं प्रधान डा. शिव शंकर पाहवा उपस्थित थे। विधायक लीला राम ने कहा कि

पिछले 44 सालों में सेवा संघ ने जिस तरह से पीड़ित मानवता की सेवा में पूरी शिदत के साथ काम किया है। उससे संस्था ने नगर में एक उदाहरण प्रस्तुत कर दिया है। इस दौरान कई अवसर ऐसे आए जब सेवा संघ के सभी सदस्यों ने रक्तदान और देहदान जैसे संकल्प पर भ्रमरकर एक नेक काम को शुरुआत दी।

सेवा संघ के कुछ आश्रम, कन्याओं के सामूहिक विवाह जैसे कार्यक्रम इस संस्था को दूसरों से अलग बनाते हैं। विधायक ने सेवा संघ संस्था को सेवा कर्मों के लिए एक लाख हजार रुपये देने की घोषणा की।

जाएगा। इन दिनों में बीएलओ संबंधित बूथ पर उपस्थित रहकर नए वोट बनाने एवं जूटियां दूर करने के लिए फार्म लेने का कार्य करेंगे।

उन्होंने बताया कि मतदाता सूचियों में नाम शामिल करने के लिए पात्र



व्यक्ति फार्म नंबर 6 आवश्यक दस्तावेजों के साथ भर सकता है। फार्म नंबर 08 के माध्यम से कोई भी पात्र व्यक्ति पहले दर्ज उसके विवरण में संशोधन करवा सकता है तथा रहियशी पता बदलने पर मतदाता सूची में भी अपात्र पता बदलवा सकता है। किसी भी अपात्र व्यक्ति का नाम मतदाता सूची से हटवाने के लिए उसी मतदान

केंद्र के मतदाता द्वारा फार्म नंबर 07 में आपत्ति दर्ज की जा सकती है।

अंतिम मतदाता सूचियों का प्रकाशन 27 अगस्त, 2024

मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि निर्धारित तिथि तक प्राप्त दावे एवं अपितियों का निपटारा संबंधित निर्वाचन पंजीयन अधिकारियों के माध्यम से 26 अगस्त तक किया जाएगा। इसके बाद अंतिम मतदाता सूचियों का प्रकाशन 27 अगस्त, 2024 को होगा। उन्होंने बताया कि कोई भी पात्र व्यक्ति वोटर पोर्टल या वोटर हेल्पलाइन एप के माध्यम से भी ऑनलाइन फार्म भर कर नागरिक अपना वोट बनवा सकते हैं। इसके अलावा, वोटर हेल्पलाइन नंबर-1950 पर कॉल करके वोट बनवाने बारे जानकारी हासिल की जा सकती है। उन्होंने बताया कि वोट प्रकाशन के लिए मतदाता सूची में नाम होना जरूरी है, इसलिए युवक-युवतियां जिनकी आयु एक जुलाई 2024 को 18 वर्ष या इससे अधिक हो गई है अपना नाम मतदाता सूची में अवश्य दर्ज करवाएं।

सरकार गरीब को मजबूत करने का काम कर रही है : मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी

एजेंसी
झरझर। हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह ने कहा कि डबल इंजन की सरकार लगातार ऐतिहासिक निर्णय लेते हुए समान विकास के कार्य कर रही है। यह सरकार गरीब को मजबूत करने का काम कर रही है। हाल ही में इस दिशा में अनेकों निर्णय लिए गए हैं, जिससे गरीब परिवारों को योजनाओं का सीधा लाभ पहुंचा है।

पंचायती जमीन उपलब्ध नहीं है, वहां पर ऐसे गरीब परिवारों को प्लाट के लिए एक-एक लाख रुपए सीधे परिवारों के खाते में भेजने का काम किया।

एक क्लिक में भेजी 80 करोड़ रुपए की राशि
मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि वे पूर्व में जब श्रम एवं रोजगार राज्य मंत्री रहे उस दौरान श्रमिकों के हित में अनेक कार्यक्रमों के माध्यम से लाभ पहुंचाने का काम किया था। गत दिवस एक राज्य स्तरीय कार्यक्रम में एक क्लिक से 80 करोड़ की राशि इन गरीब

परिवारों के खाते में भेजने का काम किया।

सोलर पैनल
नायब सैनी ने कहा कि प्रधानमंत्री सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना के तहत गरीब परिवारों के घर पर सोलर पैनल लगाए जाएंगे। इसके लिए अधिकारियों को तेजी कार्य करने बारे निर्देशित किया गया है। उन्होंने कहा कि इसे नेट मीटर से जोड़ा जाएगा। इससे खपत के बाद जो बिजली बचती है और वह विभाग को जाती है उसका चार्ज विभाग को देना पड़ेगा। इस योजना से लोगों को

बड़ी राहत मिलेगी।

संविधान के अनुरूप देश बढ़ रहा आगे
मुख्यमंत्री ने कहा कि देश प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में संविधान के अनुरूप आगे बढ़ रहा है। जो लोग संविधान को हथ में लेकर बात करते हैं, उनकी पीढ़ियों ने सदा ही संविधान की मूल भावना के साथ खिलवाड़ करने का काम किया है। संविधान को लेकर झूट फैलाया गया।

मंत्री डॉ. कमल गुप्ता ने दिए दिल्ली रोड के चौड़ीकरण के विकल्प ढूंढने के निर्देश

एजेंसी
हिसार। कैबिनेट मंत्री डॉ. कमल गुप्ता ने पीडब्ल्यूडी और नगर निगम अधिकारियों को दिल्ली रोड के चौड़ीकरण के विकल्प ढूंढने के निर्देश दिए हैं। डॉ. कमल गुप्ता ने निर्देश दिए कि लक्ष्मीबाई चौक से जिनदल पुल तक रोड को चौड़ा करने का प्रस्ताव तैयार किया जाए। इसके साथ ही कैबिनेट मंत्री ने लोक निर्माण विभाग के नवनिर्मित विभाग के निर्माण कार्य का जायजा लेकर अधिकारियों को दिशा निर्देश दिए। इस दौरान उपायुक्त प्रदीप दहिया उपस्थित रहे।

शिक्षा के साथ-साथ बच्चों में देश प्रेम की भावना विकसित करना स्कूलों का मुख्य लक्ष्य - सीमा खिवा

एजेंसी
चण्डीगढ़। हरियाणा की शिक्षा मंत्री सीमा खिवा ने कहा कि प्रदेश सरकार द्वारा शिक्षा के स्तर में और अधिक सुधार करने तथा विद्यार्थियों को बेहतर संसाधन एवं अन्य सुविधाएं प्रदान करने के उद्देश्य से निरंतर कार्य किया जा रहा है। स्कूलों में विद्यार्थी संस्कारमय शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं और सरकार का प्रयास है कि सभी विद्यार्थियों को उत्तम शिक्षा देकर उनका सर्वांगीण विकास किया जाए और उनके भविष्य को संवारा जाए। सीमा खिवा चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय, सिरसा में जिला स्तरीय विद्यालय प्रबंधन समिति प्रशिक्षण सह-सम्मेलन को संबोधित कर रही थीं। उन्होंने मां सरस्वती की मूर्ति के समक्ष दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का विधिवत शुभारंभ किया। शिक्षा मंत्री व अन्य अतिथियों ने कार्यक्रम स्थल पर लगाई गई प्रदर्शनी का अवलोकन किया और विभाग के नवनिर्मित विभाग के निर्माण कार्य का जायजा लेकर अधिकारियों को दिशा निर्देश दिए। उन्होंने बेहतर निरंतर प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों सम्मानित भी किया। शिक्षा

ही चार मंजिला इमारत के निचले फ्लोर से धुआं निकलने लगा और आग भड़क उठी। आग की सूचना मिलते ही फायर ब्रिगेड की टीम घटनास्थल पर पहुंची। दुकानदार और आसपास के लोगों ने भी अपने स्तर पर आग बुझाने की कोशिश की, लेकिन धुएं की अधिकता के कारण वे असफल रहे। आग पर काबू पाया। आग से दुकान में रखा लगभग सारा सामान जल गया।

मंत्री ने स्कूल प्रबंधन समितियों (एसएमसी) के प्रधानों से सीधा संवाद किया और उनके सुझाव भी आमंत्रित किए। शिक्षा मंत्री ने कहा कि स्कूलों में विद्यार्थी संस्कारमय शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं और सरकार का प्रयास है कि सभी विद्यार्थियों को उत्तम शिक्षा देकर उनका सर्वांगीण विकास किया जाए और उनके भविष्य को संवारा जाए। सीमा खिवा चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय, सिरसा में जिला स्तरीय विद्यालय प्रबंधन समिति प्रशिक्षण सह-सम्मेलन को संबोधित कर रही थीं। उन्होंने मां सरस्वती की मूर्ति के समक्ष दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का विधिवत शुभारंभ किया। शिक्षा मंत्री व अन्य अतिथियों ने कार्यक्रम स्थल पर लगाई गई प्रदर्शनी का अवलोकन किया और विभाग के नवनिर्मित विभाग के निर्माण कार्य का जायजा लेकर अधिकारियों को दिशा निर्देश दिए। इस दौरान उपायुक्त प्रदीप दहिया उपस्थित रहे।

निरंतर अनेकों योजनाएं लागू कर रही हैं, जिसका लाभ हर जरूरतमंद व्यक्ति को मिल रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी लोगों की भलाई के लिए दिन-रात कार्य कर रहे हैं। उन्होंने अध्यापकों से आह्वान करते हुए कहा कि हमें बच्चों में राष्ट्र प्रेम का जन्म जलाना होगा। इसके लिए बच्चों को बेहतर वातावरण उपलब्ध करवाएं। स्कूलों में सहर्द पर खड़े जवानों को राष्ट्र भक्ति की भावना देने के लिए हरियाणा के सरकारी स्कूलों बच्चे गुड मॉर्निंग बोलने की बजाए जय हिंद बोलेंगे तो इससे बच्चों में राष्ट्र प्रेम की भावना विकसित होगी। शिक्षा विभाग का यह कदम राष्ट्र प्रेम के लिए समर्पित होगा। शिक्षा मंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 'एक पेड़ मां के नाम' योजना के तहत हर स्कूल व आसपास के खुले क्षेत्र में पौधारोपण करने का देशवासियों से आह्वान किया है। उन्होंने कहा कि पौधारोपण अभियान में सभी सहभाग्यी बनें। उन्होंने कहा कि एक पेड़ मां के नाम के अलावा आमजन से निवेदन है कि वह पौधारोपण संरक्षण में सहभागी बनें वह एक पेड़ बच्चों के नाम भी लगाए।

बिजली निगम सरचार्ज माफी योजना के तहत बकाया बिलों पर देगा योजना का लाभ

एजेंसी
हिसार। दक्षिण हरियाणा बिजली विवरण निगम ने उपभोक्ताओं के लिए सरचार्ज माफी की स्क्रीम लागू की है, जो कि आगामी 31 अक्टूबर तक जारी रहेगी। स्कूल के तहत 31 दिसंबर 2023 तक के बकाया बिलों व

लगातार बकाया पर उपभोक्ताओं को सरचार्ज का भुगतान नहीं करना होगा। बिजली निगम के अधीक्षक अभियंता ओमवीर ने बताया कि 31 दिसंबर 2023 तक के बकाया बिलों व लगातार बकाया पर उपभोक्ताओं के लिए लागू इस स्क्रीम के तहत इस बिल

की मूल राशि को 6/3 मासिक/द्विमासिक किस्तों में जमा करवाया जा सकता है। इसके साथ उपभोक्ताओं को वर्तमान के 6/3 मासिक/द्विमासिक बिलों को नियमित रूप से भुगतान होगा। ऐसा न करने पर उपभोक्ता का सरचार्ज माफ नहीं होगा

और माफी की स्क्रीम से भी बाहर माना जाएगा। यह योजना सभी प्रकार की अतिरिक्त छूट का लाभ भी मिलेगा। फीज किया हुआ ब्याज किस्तों में माफ किया जाएगा। उन्होंने उपभोक्ता इस योजना में शामिल होने पर बकाया बिल तीन किस्तों में या

अपना बकाया बिल एकमुश्त जमा करवाने पर पांच प्रतिशत तक की अतिरिक्त छूट का लाभ भी मिलेगा। फीज किया हुआ ब्याज किस्तों में माफ किया जाएगा। उन्होंने उपभोक्ता इस योजना में शामिल होने पर बकाया बिल तीन किस्तों में या

एकमुश्त जमा नहीं करवाता व अगले छह बिल लगातार नहीं भरता तो उपभोक्ता से सारा ब्याज लिया जाएगा व उसे इस योजना से बाहर कर दिया जाएगा। उन्होंने बताया कि निम्न उपभोक्ताओं के माध्यम से वर्तमान में किसी भी न्यायिक फोरम में

बिलिंग विवादों के कारण लंबित है इस योजना के तहत कवर नहीं किए जाएंगे, हालांकि यदि उपभोक्ता मामले को वापस ले लेता है तो वह योजना का लाभ लेने के लिए पात्र होगा। यदि किसी उपभोक्ता का बिल गलत है

Name Change
I hitherto known as SUKHBIR GOWALA. Since CHINKUWAR, employed as MTS (CN No. 65589-F) at 267 Signal Unit, C/o Air Force Station, (Tezpur), District- Sonitpur, Plate-Assam in Indian Air Force, (R/o Chamanpura(1-N), Jhajjar, Haryana-124102, have changed my name and shall hereafter be known as SUKHBIR SINGH YADAV.

भारत में जुलाई में नियुक्तियां 12 प्रतिशत बढ़ीं, सभी क्षेत्रों में मजबूत वृद्धि

एजेंसी नई दिल्ली। भारत में नियुक्तियों में पिछले साल के इसी महीने की तुलना में जुलाई में 12 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई, क्योंकि अधिकांश क्षेत्रों में फार्मा/बायोटेक और एफएमसीजी के साथ स्वास्थ्य दोहरे अंकों की वृद्धि दर्ज की, जैसा कि शुक्रवार को एक रिपोर्ट में दिखाया गया है। नौकरी जांबसपीक इंटेक्स के मुताबिक, जून की तुलना में हायरिंग में (तिमाही-दर-तिमाही) 11 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है। फार्मा/बायोटेक सेक्टर में साल-दर-साल 26 फीसदी की उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई, जिसमें बड़ीदा (61 फीसदी) और हैदराबाद (39 फीसदी) ने बहुत हासिल की। इसी तरह, एफएमसीजी सेक्टर में नियुक्तियां 26 फीसदी बढ़ीं, जिसमें बंगलूर (52 फीसदी) और कोलकाता (43 फीसदी) शामिल रहे। आंकड़ों से पता चलता है कि दिल्ली-एनसीआर और हैदराबाद की बंदौलत रियल एस्टेट सेक्टर ने भी नियुक्तियों में 23 प्रतिशत की मजबूत वृद्धि दर्ज की है। पिछले साल की तुलना में जुलाई में आईटी क्षेत्र में 17 प्रतिशत की अच्छी वृद्धि दर्ज की गई। नौकरी के मुख्य व्यवसाय अधिकारी डॉ. पवन गोयल ने कहा, इस साल यह पहला महीना है जब हमने सकारात्मक वृद्धि देखी है, और यह तथ्य कि यह सभी क्षेत्रों और भौगोलिक क्षेत्रों में फैल रहा है, इसे वास्तव में आशाजनक बनाता है। उन्होंने कहा, यह व्यापक आधार वाला, सकारात्मक बदलाव संभावित रूप से भारतीय सफेदपेशा नौकरी बाजार में एक उत्थान की शुरुआत हो सकता है।

नौवीं बार रेपो दर स्थिर रख सकता है आरबीआई; नैट्रिक नीति समिति की बैठक 6 से, नतीजा 8 अगस्त को

नई दिल्ली। भारतीय रिजर्व बैंक लगातार नौवीं बार रेपो दर को यथावत रख सकता है। केंद्रीय बैंक की नैट्रिक नीति समिति (एफपीसी) की बैठक 6 अगस्त से शुरू होगी और 8 अगस्त को इसके निर्णय घोषित होंगे। विश्लेषकों का कहना है कि हाल के महीनों में खाद्य महंगाई के ऊंचे स्तर को लेकर आरबीआई की दृष्टिकोण बड़ा है। ऐसे में दरों में कमी की कोई गुंजाइश फिलहाल अनुभव तक नहीं है। विश्लेषकों के मुताबिक, आर्थिक गतिविधियों में तेजी से आरबीआई की मौजूदा स्तर पर दरें बनाए रखने की गुंजाइश आगे भी जारी रहेगी। बैंक ऑफ इंडिया की रिपोर्ट के मुताबिक, रेपो दरों में कमी तभी होगी, जब आरबीआई को यह विश्वास हो जाए कि महंगाई का दबाव कम हो रहा है, या आगे कम हो सकता है। रिपोर्ट के मुताबिक, खाद्य मुद्रास्फीति लगातार ऊंची बनी हुई है। जून में खुदरा महंगाई चार महीने के उच्चतम स्तर 5.1 फीसदी पर पहुंच गई थी। मई में यह 4.8 फीसदी पर रही थी। इसके साथ ही महंगाई दर लगातार 57वें महीने आरबीआई के चार फीसदी के लक्ष्य से ऊपर बनी हुई है।

भारत को अमेरिका की प्रति व्यक्ति आय के चौथे हिस्से तक पहुंचने में लगभग 75 साल, विश्व बैंक का दावा

नई दिल्ली। विश्व बैंक की 'विश्व विकास रिपोर्ट 2024: द मिडिल इनकम ट्रेप' के अनुसार, चीन को प्रति व्यक्ति अमेरिकी आय के एक-चौथाई तक पहुंचने में 10 वर्षों से अधिक का समय लगेगा। इस उपलब्धि को हासिल करने में इंडोनेशिया को लगभग 70 साल लगेगे। विश्व बैंक की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि अपने कुछ दशकों में भारत समेत 100 से ज्यादा देशों को उच्च आय वाला देश बनने में गंभीर बाधाओं का सामना करना पड़ेगा। इस रिपोर्ट के अनुसार भारत को प्रति व्यक्ति अमेरिकी आय की एक चौथाई तक ही पहुंचने में करीब 75 साल लग सकते हैं। विश्व विकास रिपोर्ट 2024: द मिडिल इनकम ट्रेप के अनुसार, चीन को प्रति व्यक्ति अमेरिकी आय के एक-चौथाई तक पहुंचने में 10 साल से अधिक का समय लगेगा। जबकि इंडोनेशिया को यह उपलब्धि हासिल करने में लगभग 70 साल लगेगे। पिछले 50 साल के अनुभव के आधार पर रिपोर्ट में कहा गया है कि देश जैसे-जैसे अमीर होते जाते हैं, वे आमतौर पर प्रति व्यक्ति सालाना अमेरिकी जीडीपी के करीब 10 फीसदी पर 'एक जाल' में फंस जाते हैं, जो कि वर्तमान समय में करीब 8,000 डॉलर के बराबर है। विश्व बैंक मध्यम आय वाले देशों को जिस राशि के आधार पर वर्गीकृत करता है, यह उसके ठीक मध्य की राशि है।

छोटे और मझोले 300 बैंकों पर साइबर अटैक से 1000 करोड़ का कारोबार हुआ प्रभावित

नई दिल्ली। पिछले दो-तीन दिनों में देश भर के लगभग छोटे और मध्यम दर्जे के 300 बैंकों के ग्राहक एटीएम से पैसे निकालने और यूपीआई से भुगतान सेवाओं का इस्तेमाल नहीं कर पा रहे हैं। इसकी बड़ी वजह सी-एज टेक्नोलॉजी पर रैनसमवेयर का हमला है। यानी साइबर अटैक की वजह से यह सभी सेवाएं प्रभावित हुई हैं। नेशनल पेमेंट कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया (एनपीसीआई) सी-एज टेक्नोलॉजी के साथ इन सेवाओं को प्रदान करता है। इसका अवर छोटे और मध्यम (एएमएसएमई) दर्जे के कारोबार पर देखने को मिल रहा है। जिसकी वजह से उनके कारोबार में करोड़ का नुकसान उठाना पड़ रहा है। रोजाना मुंबई में एएमएसएमई का 1000 करोड़ रुपये का कारोबार होता है जिस पर अवर उछा है। पिछले तीन दिनों में करोड़ों रुपये का नुकसान कारोबारियों को उठाना पड़ रहा है। एनपीसीआई का कहना है कि वह सी-एज टेक्नोलॉजी के साथ मिलकर समस्या को हल करने के लिए युद्धस्तर पर काम कर रहा है और आवश्यक सिक्वर्टी रिस्को भी किया जा रहा है। प्रभावित बैंकों की कनेक्टिविटी जल्द ही बहाल की जाएगी। सी-एज टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल करने वाले छोटे आकार के लगभग 300 बैंक हैं।

जकार्ता में एआईटीआईजीए की 5वीं संयुक्त समिति की हुई बैठक

एजेंसी नई दिल्ली। आसियान-भारत वस्तु व्यापार समझौता (एआईटीआईजीए) संयुक्त समिति की 5वीं बैठक 29 जुलाई से एक अगस्त, 2024 तक इंडोनेशिया के जकार्ता में हुई। इस बैठक की सह-अध्यक्षता भारत के वाणिज्य विभाग के अतिरिक्त सचिव राजेश अग्रवाल और मलेशिया के निवेश, व्यापार और उद्योग मंत्रालय के उप महासचिव (व्यापार) मस्रुरा अहमद मुस्तफा ने की। इसमें सभी दस आसियान देशों और भारत के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।



इंडोनेशिया के जकार्ता में एआईटीआईजीए की 5वीं संयुक्त

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय ने समिति की बैठक आयोजित की गई। यह बैठक में आसियान और भारत के बीच आर्थिक सहयोग बढ़ाने में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हुई, जिसमें आसियान-भारत व्यापार संबंधों को आगे बढ़ाया गया। इसकी समीक्षा से व्यापार वृद्धि के लिए नए रास्ते खुलने की उम्मीद है। एआईटीआईजीए संयुक्त समिति की अगली बैठक 19-22 नवंबर 2024 को भारत में होगी। उल्लेखनीय है कि आसियान भारत के लिए एक महत्वपूर्ण व्यापार भागीदार बना हुआ है, जो भारत के वैश्विक व्यापार का लगभग 11 फीसदी है। आसियान-भारत सेवा प्रसंस्करण समझौते पर सभी पक्षों ने 13 नवंबर, 2014 को हस्ताक्षर किए थे। ये समझौता एक जुलाई 2015 को लागू हुआ था।

विश्व खाद्य भारत 2024 का आयोजन 19 से 22 सितंबर तक भारत मंडपम, नई दिल्ली में किया जाएगा

एजेंसी नई दिल्ली। केंद्रीय खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्री श्री चिराग पासवान ने आज बिहार के पटना में खाद्य एवं संबद्ध क्षेत्रों के उद्योग जगत के नेताओं और सूक्ष्म उद्यमियों के साथ उद्योग गोलेमज बैठक की अध्यक्षता की। अपने संबोधन में श्री चिराग पासवान ने कहा कि वे हमेशा किसानों के उत्थान के लिए काम करते रहेंगे। उन्होंने कहा कि वे खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र को अपने गृह राज्य में भी ले जाना चाहेंगे। श्री पासवान ने खाद्य प्रसंस्करण एक प्रमुख कार्यक्रम में बात की और बताया कि कैसे यह क्षेत्र भारत की आर्थिक स्थिति को ऊपर उठाने में मदद कर सकता है। उन्होंने बिहार के अफसर का उल्लेख करते हुए कहा कि बिहार एक ऐसा राज्य है जहां सबसे

कोल इंडिया ने आशीष योजना के तहत 1645 बच्चों को दी छात्रवृत्ति

एजेंसी नई दिल्ली। कोल इंडिया लिमिटेड ने समाज की सेवा करने की अपनी प्रतिबद्धता को जारी रखते हुए कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) पहल के तहत सीआईएल आशीष (आयुष्मान शिक्षा सहायता) योजना शुरू की है। सीआईएल ने इस योजना के तहत 1645 बच्चों को छात्रवृत्ति दी, जबकि अनुकंपा नियुक्ति के तहत 424 लाभार्थियों को नियुक्ति पत्र भी वितरित किए हैं। कोयला मंत्रालय ने जारी एक बयान में बताया कि सुप्रीम कोर्ट के 75 साल पूरा होने के अवसर पर यहां आयोजित एक कार्यक्रम के



उपलब्ध अभिलेखों के आधार पर की गई है। इस कार्यक्रम में न्यायाधीश, रजिस्ट्री के अधिकारी, वरिष्ठ अधिकारियों और न्यायालय के

अधिकारियों, अधिवक्ता, कोयला मंत्रालय और कानून और न्याय मंत्रालय के प्रतिनिधि, सीआईएल और उसकी सहायक कंपनियों के वरिष्ठ प्रबंधन शामिल हुए। कार्यक्रम के दौरान समुदाय की सेवा में कोल इंडिया लिमिटेड के योगदान की बहुत सराहना की गई। मंत्रालय ने बताया कि इस योजना के तहत जिन 1645 बच्चों को छात्रवृत्ति प्रदान की गई है, उन्हें कोरोना महामारी की वजह से अपने माता-पिता को खो दिया और अपनी पढ़ाई जारी रखने में असमर्थ थे। कोल इंडिया ने अनुकंपा नियुक्ति के तहत 424 लाभार्थियों को नियुक्ति पत्र जारी किए हैं, जिन्होंने सेवा के दौरान अपने परिवार

खंडेलवाल ने फिक्की कैस्केड ऑटो रैली को हरी झंडी दिखाकर किया खाना

एजेंसी नई दिल्ली। सांसद प्रवीण खंडेलवाल ने फिक्की कैस्केड ऑटो रैली को हरी झंडी दिखाकर खाना किया। खंडेलवाल ने लोगों से तस्करों के खिलाफ मुहिम में शामिल होने की अपील भी की। उन्होंने कहा कि नकली और तस्करों के बारे में जागरूकता फैलाना जरूरी है। इस अवसर पर फिक्की कैस्केड के चेयरमैन अनिल राजपूत भी मौजूद रहे।



प्रवीण खंडेलवाल ने यहां भारतीय वाणिज्य एवं उद्योग महासंघ (फिक्की) के कैस्केड ऑटो रैली को खाना करने के अवसर पर कहा कि तस्करों का हमारी अर्थव्यवस्था पर बुरा प्रभाव पड़ता है। उन्होंने बताया कि कई अंधे हुए खिलाड़ी उन स्रोतों से मिलने वाले धन का उपयोग आतंकवाद के वित्त पोषण को बढ़ाने के लिए करते हैं। खंडेलवाल ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी आतंकी गतिविधियों की नींव उखाड़ दी है।

से खरीदेंगे और उन पर निर्धारित करों का भुगतान करेंगे, तो हमारा देश तेजी मार्ग, मंडी हाउस, बाराखंबा रोड, आउटर सर्किल कर्नॉट प्लेस और बाराखंबा रोड से होते हुए फिक्की हाउस में समाप्त हुई। दरअसल पिछले पिछले दशक में एफएमसीजी पैकेज्ड फूड सेगमेंट में अवेध व्यापार बाजार का आकार लगभग 600 फीसदी बढ़ा है, इसके बाद शराब, एफएमसीजी, व्यक्तिगत सामान और तंबाकू का स्थान है, जो क्रमशः 317 फीसदी, 270 फीसदी और 155 फीसदी है।

उल्लेखनीय है कि भारतीय वाणिज्य एवं उद्योग महासंघ (फिक्की) ने 18 जनवरी, 2011 को नई दिल्ली स्थित फिक्की फेडरेशन हाउस में %अर्थव्यवस्था को नष्ट करने वाली तस्करों और जालसाजी गतिविधियों के विरुद्ध समिति' (कैस्केड) की स्थापना की थी। इस समिति का मकसद पूरे भारत में तस्करों, प्रतिबंधित और नकली उत्पादों के इस्तेमाल के अस्तर को लेकर लोगों को जागरूक करना है।

सरकारी बीमा कंपनियों को वायनाड भूखलन पीड़ितों के दावों का तुरंत निपटाने का निर्देश

एजेंसी नई दिल्ली। सरकार ने केरल के वायनाड में दुर्भाग्यपूर्ण भूखलन की घटना और भारी बारिश के मद्देनजर सार्वजनिक क्षेत्र की बीमा कंपनियों को आपदा पीड़ितों को इतना संभव मदद मुहैया कराने का निर्देश दिया है, ताकि बीमा दावों का तेजी से निपटान और भुगतान किया जा सके। वित्त मंत्रालय ने 'एक्स' पोस्ट पर जारी एक बयान में बताया कि सार्वजनिक क्षेत्र की बीमा कंपनियों (पीएसआईसी) भारतीय जीवन बीमा निगम (एलआईसी), नेशनल इश्योरेंस, न्यू इंडिया एश्योरेंस, ओरिएंटल इश्योरेंस और युनाइटेड इंडिया इश्योरेंस को यह निर्देश दिया गया है। सरकार ने पीएसआईसी को आपदा के पीड़ितों को इतना संभव सहायता प्रदान करने का निर्देश दिया है, ताकि बीमा दावों को शीघ्रता से संसाधित और भुगतान किया जा सके। मंत्रालय ने कहा कि बीमा कंपनियों ने केरल के वायनाड, पलक्कड, कोझीकोड, मलपूरम और त्रिपूर जिलों में सहायता के लिए



पाॅलिसीधारकों के संबंध में दावा राशि का शीघ्र वितरण करने के लिए कहा गया है। वहीं, दावों की प्रसंस्करण के लिए आवश्यक दस्तावेजों को तुरंत प्रदान करने के लिए विभिन्न चैनलों (स्थानीय समाचार पत्र, सोशल मीडिया, कंपनी की वेबसाइट, एसएमएस, आदि) के माध्यम से अपने पाॅलिसीधारकों तक पहुंचने के प्रयास शुरू किए हैं, जहां बड़ी संख्या में दावे दर्ज किए जा रहे हैं। केंद्र सरकार और वित्त मंत्रालय इस आरंभ के पीड़ितों की सहायता करने और यह सुनिश्चित किया जा सके कि दावों का प्रसंस्करण और भुगतान शीघ्रता से हो और सभी बीमा कंपनियों के लिए एक पोर्टल होस्ट किया जाएगा, जिसमें प्रतिदिन दावे की स्थिति की रिपोर्ट की जाएगी।

स्टेट बैंक को पहली तिमाही में 17035 करोड़ रुपये का हटा मुनाफा

एजेंसी नई दिल्ली। देश के सबसे बड़े बैंक स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (एसबीआई) ने चालू वित्त वर्ष 2024-25 की पहली तिमाही (अप्रैल-जून) में नतीजा का ऐलान कर दिया है। अप्रैल-जून तिमाही में एसबीआई का मुनाफा सालाना आधार पर एक फीसदी उल्लंघन 17,035.16 करोड़ रुपये रहा। पिछले वित्त वर्ष की समान तिमाही में बैंक को 16,884 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ हुआ था।

एसबीआई ने शेयर बाजार को दी जानकारी में बताया कि 30 जून, 2024 को समाप्त अप्रैल-जून तिमाही में एकल आधार पर उसका शुद्ध लाभ 17,035 करोड़ रुपये रहा है। पिछले वित्त वर्ष की समान तिमाही में बैंक को 16,884 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ हुआ था। बैंक के मुताबिक उसका कुल आमदनी जून तिमाही में बढ़कर 1,22,688 करोड़ रुपये हो गई है, जो पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि में 1,08,039 करोड़ रुपये रही थी। सार्वजनिक क्षेत्र

के बैंक एसबीआई ने बताया कि पहली तिमाही में बैंक की ब्याज से आमदनी बढ़कर 1,11,526 करोड़ रुपये हो गई है, जो पिछले वित्त वर्ष 2023-24 की समान तिमाही में 95,975 करोड़ रुपये थी। बैंक की सकल गैर-निष्पादित परिसंपत्तियां

(एनपीए) कुल अग्रिमों में से पहली तिमाही में घटकर 2.21 फीसदी रह गई, जो पिछले साल जून के अंत में 2.76 फीसदी थी। इसी तरह एसबीआई का शुद्ध एनपीए भी जून, 2024 में घटकर 0.57 फीसदी रह गया, जो एक साल पहले 0.71 फीसदी था।

राष्ट्रीय नागरिक सुरक्षा संस्कृति पर दूसरी राउंड टेबल कॉन्फ्रेंस का आयोजन

नई दिल्ली। सेंट्रल एसोसिएशन ऑफ प्राइवेट सिक्योरिटी इंडस्ट्री (केएसपी) ने राष्ट्रीय नागरिक सुरक्षा संस्कृति पर दूसरी राउंड टेबल कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया गया है। संस्था ने आज यहां जारी गणान में कहा कि 15 मार्च, 2024 को आयोजित की गई पहली राउंड टेबल में रक्षा, पुलिस, कॉर्पोरेट सिक्योरिटी क्षेत्र, शिक्षा जगत, और सिविल सोसायटी द्वारा सक्रिय हिस्सा लिए जाने के बाद हम इन वार्ताओं को आगे बढ़ाने के लिए उत्साहित हैं। पहली कॉन्फ्रेंस के दौरान विकसित की गई विस्तृत योजना को गृह मंत्रालय (एमएचए) से महत्वपूर्ण स्वीकृति मिल चुकी है।



देश भर में 113 शैक्षणिक संस्थानों में सेमीकंडक्टर चिप डिजाइन में 85,000 उद्योग हेतु तैयार कार्यबल को प्रशिक्षित किया जा रहा है; पूर्वोत्तर में ऐसे नौ संस्थान

एजेंसी नई दिल्ली। भारत में अत्याधुनिक सेमीकंडक्टर विनिर्माण संबंधी इकोसिस्टम बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए, असम में टाटा की उम्मीद है। एआईटीआईजीए संयुक्त समिति की अगली बैठक 19-22 नवंबर 2024 को भारत में होगी। उल्लेखनीय है कि आसियान भारत के लिए एक महत्वपूर्ण व्यापार भागीदार बना हुआ है, जो भारत के वैश्विक व्यापार का लगभग 11 फीसदी है। आसियान-भारत सेवा प्रसंस्करण समझौते पर सभी पक्षों ने 13 नवंबर, 2014 को हस्ताक्षर किए थे। ये समझौता एक जुलाई 2015 को लागू हुआ था।



को 29 फरवरी, 2024 को केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा अनुमोदित किया गया था। भारत में सेमीकंडक्टर और डिस्प्ले मैन्यूफैक्चरिंग इकोसिस्टम के

विकास के लिए कार्यक्रम 21.12.2021 को 76,000 करोड़ रुपये के कुल परिचय के साथ अधिसूचित किया गया था। जून, 2023 में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने नेतृत्व में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने गुजरात के साणंद में एक सेमीकंडक्टर इकाई स्थापित करने के लिए माइक्रोन के प्रस्ताव को मंजूरी दी थी, जिसका निर्माण तेजी से चल रहा है। सेमीकंडक्टर इकाई के बारे में केंद्रीय मंत्री ने बताया कि 27 हजार करोड़ रुपये के निवेश से यह इकाई स्थापित की जाएगी और इससे 15 हजार प्रत्यक्ष और 11-13 हजार अप्रत्यक्ष रोजगार सृजित होने की उम्मीद है। उन्होंने सेमीकंडक्टर उद्योग के महत्व पर जोर देते हुए कहा कि यह एक आधारभूत उद्योग है और

इससे विभिन्न अपस्ट्रीम और डाउनस्ट्रीम उद्योगों में रोजगार के अवसर पैदा होंगे। इस इकाई की प्रस्तावित क्षमता प्रतिदिन 4.83 करोड़ सेमीकंडक्टर चिप है। उन्होंने यह भी बताया कि यह इकाई स्वदेशी उन्नत सेमीकंडक्टर पैकेजिंग प्रौद्योगिकियों के विकास के लिए माइक्रोन के प्रस्ताव को मंजूरी दी थी, जिसमें वायर बॉन्ड, फ्लिप चिप और आई-एसआईपी (पैकेज में एकीकृत प्रणाली) प्रौद्योगिकियां शामिल हैं। और इस संयंत्र में तैनात की जाने वाली ये तीनों प्रमुख प्रौद्योगिकियां भारत में विकसित की जा रही हैं। ये प्रौद्योगिकियां ऑटोमोटिव (विशेष रूप से इलेक्ट्रिक वाहन), संचार, नेटवर्क इन्फ्रास्ट्रक्चर और अन्य जैसे प्रमुख अनुप्रयोगों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

आरईसी लिमिटेड, गुरुग्राम में विद्युत मंत्रालय एवं इसके नियंत्रणाधीन कार्यालयों का अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन आयोजित किया गया

एजेंसी नई दिल्ली। भारत सरकार के विद्युत मंत्रालय के तत्वावधान में विद्युत मंत्रालय तथा इसके नियंत्रणाधीन कार्यालयों के राजभाषा अधिकारियों के अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया। यह आयोजन आरईसी निगम कार्यालय, गुरुग्राम के सभागार में किया गया। इस वंदना के साथ हुआ। सम्मेलन के मुख्य अतिथि श्री श्रीपाद येसो नाइक, माननीय राज्य मंत्री, विद्युत तथा नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा द्वारा की गई। सम्मेलन में विद्युत मंत्रालय के सचिव श्री पंकज अग्रवाल, आरईसी लिमिटेड के सी.एम.डी. श्री जवाहर कुमार देवांगन, विद्युत मंत्रालय के मुख्य माननीय श्री श्रीपाद येसो नाइक, राज्यमंत्री विद्युत

नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा ने कहा कि हमारे विशाल राष्ट्र में अनेक प्रांत हैं। उनकी अलग-अलग भाषाएं और बोलियां हैं, लेकिन हिंदी एक ऐसी सर्वसामान्य भाषा है जो विशाल भारत के बहुत बड़े हिस्से में बोली जाने के कारण जनसामान्य की संपर्क भाषा रही है। भारत की एकता और अखंडता में हिंदी का महत्वपूर्ण योगदान है। देश के नीति निर्धारकों ने हिंदी को व्यापकता, स्वच्छता, सरलता और लिंगी की वैश्विकता को ध्यान में रखते हुए इसे संघ की राजभाषा का गौरव प्रदान किया है। उन्होंने कहा कि हमारा मंत्रालय अग्रणीय उद्योगों और विभागों में संघ की राजभाषा के रूप में हिंदी के विकास के नित नए सोपान सृजित कर रहा है।

छोटा-मोटा काम करने पर भी होती है थकावट, तो नेचुरली Stamina बढ़ाने के लिए खाएं 8 सुपरफूड्स



दिनभर में हमें कई सारे काम और जिम्मेदारियों को पूरा करना होता है। हालांकि कई बार थोड़ा सा काम करने पर ही थकान महसूस होने लगती है जिसकी वजह से अक्सर अपने कामों को पूरा करना मुश्किल होता है। थोड़ी-थोड़ी देर में होने वाली यह थकान Low Stamina का संकेत होता है। ऐसे में आप कुछ फूड्स की मदद से अपना स्टैमिना बढ़ा सकते हैं।

आर और थोड़ा सा काम करके ही थक जाते हैं और आपको हर वक्त कमजोरी महसूस होती है, तो ऐसा स्टैमिना की कमी के कारण हो सकता है। शरीर को हमेशा फिट रखने के लिए स्टैमिना काफ़ी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह हमारे शरीर को वह शक्ति देता है, जो हमारे शरीर में दिनभर की गतिविधियों को करने के लिए क्षमता विकसित करती है, जिसे हम एनर्जी कहते हैं।

एसे में आर और थोड़ा थकान महसूस करते हैं, तो आपको अपने काम को करने की क्षमता में बढ़ोतरी करने के लिए अपना स्टैमिना बढ़ाने की जरूरत है और स्टैमिना बढ़ाने के लिए आपको हेल्दी डाइट को जरूरत होती है। आइए जानते हैं कुछ सुपरफूड्स के बारे में, जो नेचुरली आपका स्टैमिना बढ़ाने में मदद करते हैं।

दलिया
दलिया में अनेक प्रकार के पोषक तत्व और फाइबर की भारी मात्रा पाई जाती है, जो जल्दी एनर्जी हासिल करने में आपकी मदद करते हैं। एसे में आप अपने दिन को शुरूआत इससे कर सकते हैं।

विटामिन सी युक्त फल
विटामिन सी, कैल्शियम और फाइबर से भरपूर खट्टे फल जैसे आंवला, संतरा और नींबू भी नेचुरली स्टैमिना बढ़ाने में मदद करते हैं।

केला
केले में ढेर सारा विटामिन, फाइबर और पोटैशियम पाया जाता है, जो एनर्जी बूस्टर को तरह काम करते हैं। एसे में इसे भी अपनी डाइट प्लान में जरूर शामिल करें।

चुकंदर
चुकंदर में मौजूद नाइट्रेट्स, ब्लड प्रेशर को बनाए रखने में सहायक होता है। एसे में इसे डाइट में शामिल करने से एनर्जी और स्टैमिना दोनों में ही बढ़ोतरी होती है।

पालक
आयरन, मैग्नीशियम और विटामिन से भरपूर पालक रेड ब्लड सेल्स को बढ़ाने में मददगार होते हैं और ब्लड सर्कुलेशन में भी सुधार करता है। इससे एनर्जी मिलती है और स्टैमिना भी बढ़ता है।

बादाम
प्रोटीन और फाइबर से भरपूर वाले बादाम में हेल्दी फैट की अच्छी खासी मात्रा पाई जाती है, जो दिनभर के कामों के लिए आपको एनर्जी देता है। एसे ये स्टैमिना को बढ़ाने में भी सहायक होते हैं।

चिया सीड्स
एंटी-ऑक्सिडेंट, प्रोटीन, फाइबर, कैल्शियम और हेल्दी फैट से भरपूर चिया सीड्स लंबे समय तक चलने वाली एनर्जी देने में मदद करते हैं।

लौन प्रोटीन
टोफू, अंडे, मछली और लौन मीट जैसे प्रोटीन से भरपूर फूड्स मसल्स को रिपेयर करने और स्टैमिना को बढ़ाने का काम करते हैं।

बिना पैसे की खेती के काम की अच्छी परंपरा

आज जब दुनिया में प्राकृतिक संसाधनों का संकट बढ़ते जा रहा है। टिकाऊ जीवन पद्धति, टिकाऊ खेती और कम ऊर्जा की खपत इत्यादि के बारे में रुझान बढ़ रहा है। आदिवासियों का प्रकृति से एक विशेष लगाव रहा है और उन्होंने उसका संरक्षण भी किया है। जलवायु बदलाव में भी उनका कोई योगदान नहीं है। प्रकृति को नुकसान पहुंचाए बिना यह पीढ़ियों से रहते आ रहे हैं। वे खुद को प्रकृति का हिस्सा समझते हैं, उससे ऊपर नहीं। हाल ही में मुझे छत्तीसगढ़ के आदिवासियों के बीच जाने और उन्हें करीब से देखने-समझने का मौका मिला। उनकी कुछ अच्छी परंपराओं में से एक है एक-दूसरे की मदद करना। उनका जीवन अब भी कुछ हद तक अमौद्रिक तरीके से चलता है और वह जंगल पर निर्भर है। आपसी लेन-देन और एक-दूसरे की मदद उसमें शामिल है। आज के स्तंभ में इस पर चर्चा करना उचित होगा। जशपुर जिले के एक गांव में मुझे कुछ दिन रहने का मौका मिला। यह उरांव आदिवासियों का गांव है। जिस घर में हम रुके थे, वह कच्चा मिट्टी का था, लेकिन सीमेंट व कांक्रिट के पक्के घरों से अपेक्षाकृत ठंडा था। वहां हर कुछी सुघड़ता से रखी हुई थी। गोबर व काली मिट्टी से लिपा-पुता यह घर साफ-सुथरा था और अपना सौंदर्य बिखेर रहा था। ऊं ची दीवारों वाले खपरैल से ढंके इस हवादार घर के आगे-पीछे काफी खुली जगह थी। बच्चों के खेलने-कूदने और उठने-बैठने के हिसाब से पर्याप्त जगह थी।

इस गांव के अधिकांश घर मिट्टी के बने हैं, जिन्हें आदिवासी परिवारों ने खुद बनाया है। इन घरों की उम्र डेढ़ दो सौ साल की बताई जाती है। हर साल घर की थोड़ी बहुत मरम्मत व खपरैल की अदला-बदली करने की जरूरत होती है। इन घरों बिजली-पंखे के बिना भी रहा जा सकता है। हालांकि अब ज्यादातर घरों में बिजली है। अंग्रेजों के यु आकार के बने इस घर के पीछे बड़ी बाड़ी थी, जहां से हरी सब्जियां व फलदार पेड़ लगाए गए हैं। सब्जियों में पानी देने के लिए कुआं होता है, जिसमें बांस की लकड़ी के एक सिरे पर बाल्टी बंधी रहती है और दूसरे सिरे पर पत्थर। बिल्कुल रेलवे गेट की तरह। इस लकड़ी के एक सिरे को पकड़कर ऊपर-नीचे करने से पानी खींचा जा सकता है। इसे स्थानीय भाषा में टेड़ा कहा जाता है। इसमें ट्यूबवेल व मोटर पंप की तरह पानी की बर्बादी नहीं होती। हालांकि अब यह टेड़ा पद्धति कम हो रही है। जबकि पहले छत्तीसगढ़ के कई इलाकों में इसी टेड़ा पद्धति से सिंचाई की जाती थी, जो कुछ जगह अब भी होती है। वहां बाड़ियों में लगे हरे-भरे कटहल के पेड़ों को फलों से लदा देखकर कोई भी मोहित हो सकता है। इस गांव में आम का



बगीचा है। अगर कोई मेहमान आता है तो उसे कटहल की सब्जी से उसका स्वागत होता है।

इन दिनों कोसम के फल पक रहे हैं। बच्चों की टेलियां कोसम खाने के लिए पेड़ों के आसपास घूमती रहती हैं। कोसम के पेड़ों में लाख होती है, जिसे बच्चे बीनते हैं और बेचकर उनका जेब खर्च निकालते हैं। जामुन भी खाने को मिलती है, जो अब खत्म होने लगी है। गांव की महिलाएं जंगल जाती हैं, और खुखड़ी (मशरूम) बीनकर लाती हैं, जिसकी सब्जी बहुत स्वादिष्ट होती है साथ में हरी पत्तीदार भाजियां भी तोड़कर लाती हैं। ये कई तरह के औषधीय पौधों को भी जानती हैं, जिनसे वे छोटी-मोटी बीमारियों को इलाज कर लेती हैं। इन दिनों बांस करील भी एक अच्छी सब्जी आ रही है। कुछ नौजवान आसपास के नालों, तालाबों और नदी में मछली पकड़ने जाते हैं और पकाकर खाते हैं।

इसके अलावा, चार (चिरौजी) के जंगल में जाकर पेड़ों से पके चार को खाने का एक अलग ही मजा है। बरगद के फल, इमली, आंवला, इमली की पत्ती तोड़-तोड़कर बच्चे खाते रहते हैं। कुछ युवाओं ने बताया कि जंगल में सदेव ही कुछ न कुछ खाने को मिलता है। मौसमी फल, फूल, पत्ती, मशरूम मिलते ही रहते हैं। वहां की साफ हवा, साफ आसमान और हरियाली का आनंद ही अनूठा है।

गांव के छोटे बच्चे जंगल के पेड़ों के नाम, जंगली जानवरों व फल-फूलों के नाम और पहाड़ों के बारे में ढेरों बातें जानते हैं, जिसे सुनकर सुखद आश्चर्य होता है। इसी प्रकार यहां के बुजुर्गों से बात कर जंगलों में मौजूद सैकड़ों जड़ी-बूटियों के बारे में जाना जा सकता है। भूख के दिनों में काम आने-वाले कंद-मूल, फल-फूलों के बारे में वे सहज ही बता देते हैं, जो यहां के जंगल और पहाड़ मेमौजूद हैं।

यहां उरांव आदिवासी हैं। महिलाएं पुरुषों से अधिक काम करती हैं। लेकिन महिलाओं पर उतनी पाबंदी नहीं है, जितनी अन्य जगहों में होती है। यहां की लड़कियां साइकिल चलाती हैं, जो उनकी आजादी की प्रतीक बन गई है। वे साइकिल पर सवार होकर स्कूल जाती हैं। खेत और हाट-बाजार जाती हैं। वे गांव से दूसरे गांव अकेले ही साइकिल से जा सकती हैं। यहां का जीवन हमें कठिन लग सकता है, पर यहां के लोगों के लिए सहज है। यहां बहुत जल्दी 4 बजे सुबह लोग जाग जाते हैं। हमारी तरह 8 बजे तक सोना इनकी आदत में नहीं है। सबसे पहले मुंह हाथ धोकर उनकी दिनचर्या शुरू हो जाती है। महिलाएं साफ-सफाई का काम करती हैं। पानी भरती हैं, हैंडपंप नजदीक नहीं होने के कारण कई महिलाओं को दूर-दूर से पिर पर पानी भर बर्तन ढोना पड़ता है। झाड़ू लगाना भी बड़ी मशकत का काम है। यहां शहरों की

तरह एक-दो चिकने कमरों की सफाई नहीं करनी पड़ती बल्कि अपने घरों की सफाई के साथ मवेशियों को बांधने की लंबी-चौड़ी जगह भी बनाते हैं। कुल पड़ता है। वहां के कचरे को उठाकर बाहर फेंकना पड़ता है। दोपहर में छींद के पत्तों से चटाई बनाने और झाड़ू बनाने जैसे काम करते हैं। महिलाओं की तरह भी पुरुष भी हाड़ोड़ मेहनत करते हैं। खेत-खलिफत से लेकर जंगल से वनोपज संग्रह के काम में लगातार करते रहते हैं। इन दिनों खेतों की जुताई हो रही है। खेती के औजार भी आदिवासी खुद ही बनाते हैं। कुल मिलाकर, यहां की ग्रामीण जीवनशैली काफी हद तक अमौद्रिक है, यानी बिना पैसे के काफी जरूरत पूरी हो जाती है। इसके साथ ही एक दूसरे से मदद व सहायता है। इसी तरह, यहां की शादियां में उपहार स्वरूप कीमती वस्तुएं देने का चलन ज्यादा नहीं है, बल्कि उनकी जगह दाल, चावल, सब्जियां देते हैं। मुझे एक परिवार के मुखिया ने बताया कि उनके बेटे की शादी में काफी चावल एकत्र हो गया था, जिससे शादी तो अच्छे से हो गई, बल्कि उसमें से तीन बोरा चावल बच गया, जिससे उनकी महीनों तक भोजन की जरूरत पूरी हो जाएगी। महंगी व खर्चीली शायियों का चलन नहीं है, सादगी अब देखी जा सकती है। इसी प्रकार, यहां खेती के कामों में भी बारी-बारी से एक दूसरे की मदद करने की परंपरा है। एक किसान के खेत में पड़ोसी जुताई करने जाते हैं, तो काम खत्म होने के बाद वह किसान पड़ोसी के खेत में काम करने में मदद करेगा। कई बार काम के बदले भोजन कराया जाता है, नकद पैसे देने की जरूरत नहीं होती। इसे संगत व सहयोग भी कहते हैं। जबकि छत्तीसगढ़ के दूसरे इलाकों में बैठिया परंपरा है, वह भी इसी तरह होती है। जिसमें खेती-किसानी, मकान निर्माण व मरम्मत, शादी-विवाह में एक दूसरे की मदद की जाती है, और उसके बदले नकद पैसे नहीं लिए जाते। हालांकि यह परंपरा समय के साथ कुछ कमजोर हुई है, पर अब भी किसी न किसी रूप में कायम है।

यहां दूर-दूर मकानों में रहने वाले लोगों में एक-दूसरे के साथ बहुत नजदीक रिश्ता है। सामूहिकता है, आपसी भाईचारा, आत्मीय रिश्ता और पारंपरिक मेल-जोल है। उन्हें उनकी संस्कृति आपस में सब को जोड़े हुए है। जोड़ने वाली संस्कृति के कई उदाहरण देखे जा सकते हैं। आज जब दुनिया में प्राकृतिक संसाधनों का संकट बढ़ते जा रहा है। टिकाऊ जीवन पद्धति, टिकाऊ खेती और कम ऊर्जा की खपत इत्यादि के बारे में रुझान बढ़ रहा है। आदिवासियों का प्रकृति से एक विशेष लगाव रहा है और उन्होंने उसका संरक्षण भी किया है। जलवायु बदलाव में भी उनका कोई योगदान नहीं है। प्रकृति को नुकसान पहुंचाए बिना यह पीढ़ियों से रहते आ रहे हैं। वे खुद को प्रकृति का हिस्सा समझते हैं, उससे ऊपर नहीं। क्या उनकी अच्छी परंपराओं से हम कुछ सीख सकते हैं। लेकिन इस दिशा में आगे बढ़ने को तैयार हैं?

संपादकीय

करों का मानवीय पक्ष

खरी-खरी कहने के लिये चर्चित केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने जीवन और चिकित्सा बीमा प्रीमियम पर लगाए जा रहे 18 फीसदी जीएसटी को खत्म करने की तार्किक मांग की है। इस प्रासंगिक मुद्दे को उठाकर गडकरी ने करों के मानवीय पक्ष को ही उजागर किया है। निस्संदेह, जीएसटी को कम करना एक मानवीय पहल होगी। वह भी उस देश में जहां 73 फीसदी लोगों के पास चिकित्सा बीमा नहीं है।

एसे में बीमा प्रीमियम पर 18 फीसदी जीएसटी लगाया क्या न्यायसंगत होगा? दरअसल, महंगे प्रीमियम व उस पर लगने वाले करों के चलते करीब पच्चीस से तीस फीसदी लोग हर साल अपने चिकित्सा बीमा का नवीनीकरण नहीं कर पाते। निस्संदेह, केंद्रीय मंत्री गडकरी ने बीमा धारकों की दुखती रग पर हाथ रखा है। यह विडंबना ही है कि भविष्य में जीवन की अनिश्चितताओं से मुक्ति व अपने तथा परिवार की स्वास्थ्य सुरक्षा चाहने वाले व्यक्ति पर करों का अनुचित बोझ डाला जाता है। जाहिर है कि करों का

अधिक बोझ बीमा विस्तार से जुड़ी नीतियों को प्रोत्साहित करने की सोच के विरुद्ध है। यह तथ्य किसी से छिपा नहीं है कि कोई व्यक्ति जीवन की तमाम अनिश्चितताओं के चलते अपनी व परिवार की सुरक्षा हेतु चिकित्सा बीमा प्रीमियम का भुगतान करता है। दूसरे शब्दों में कहें तो जीवन व सेहत बीमा के प्रीमियम पर टैक्स लगाना जीवन की अनिश्चितताओं पर टैक्स लगाने जैसा ही है। वैसे भी जीवन के उत्तरार्ध में तमाम चिकित्सा समस्याओं से जूझने वाले बुजुर्गों के लिये यह जीएसटी चुकाना एक अन्याय जैसा ही है क्योंकि इनमें से अधिकांश की यह सेवानिवृत्ति की उम्र होती है। इस उम्र तक आते-आते उसके आय के स्रोत सिकुड़ने लगते हैं। वह अपने बच्चों पर आश्रित होता है। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि जीवन के जोखिम के लिये बीमा कराने वाले व्यक्ति के प्रीमियम पर अधिक कर लगाना एक तरह से बेबात का जमाना वसूलना जैसा है। खासकर समाज में कमजोर वर्ग के लोगों के लिये तो यह कर बेहद परेशान करने वाला ही है, जो जैसे-तैसे प्रीमियम के लिये पैसा जुटाने का

उपक्रम करते हैं। यह भी एक हकीकत है कि ज्यादा कर लगाने से बीमा उत्पादों का दायरा बढ़ाने के तमाम प्रयास निरर्थक ही सिद्ध होते हैं। यही वजह है कि देश का बीमा उद्योग लंबे समय से अपने उत्पादों की अपील बढ़ाने के लिये जीएसटी में कटौती की वकालत करता रहा है। यह बात स्पष्ट है कि सेहत व जीवन बीमा प्रीमियम पर जीएसटी की दर कम करने से न केवल बीमा करवाना अधिक किफायती हो जाएगा, बल्कि इसके प्रसार को भी अपेक्षित बढ़ावा मिलेगा। सही मायनों में इससे व्यापक वित्तीय सुरक्षा और स्वास्थ्य कवरेज के विस्तार में मदद मिलेगी। जिससे नये उपभोक्ता बीमे के दायरे में लाये जा सकेंगे।

बीमा कंपनियों जीएसटी कम होने पर नये उपभोक्ताओं को आकर्षित कर सकती हैं। दरअसल, भारतीय बीमा नियामक और विकास प्राधिकरण यानी आईआरडीएआई के वर्ष 2022-23 के लिए जारी आंकड़ों के अनुसार भारत के सकल घरेलू उत्पाद में जीवन बीमा की भागीदारी महज 3.2 फीसदी व

स्वास्थ्य बीमा की भागीदारी 0.94 फीसदी है। लोकतंत्र में सरकार की प्राथमिकता होती है कि सामाजिक कल्याण के साथ नागरिकों की आर्थिक स्थिरता को बढ़ावा दे। लेकिन वर्तमान कराधान नीति सामाजिक कल्याण की कसौटी पर खरी नहीं उतरती। एसे में बीमा प्रीमियम पर जीएसटी हटाने सरकार यह सुनिश्चित कर सकती है।

कि अधिक नागरिकों को अतिरिक्त वित्तीय तनाव के बिना जीवन की अनिश्चितताओं में सुरक्षा मिल सके। निस्संदेह, केंद्र सरकार को नितिन गडकरी के सुझाव पर न केवल गंभीरता से विचार करना चाहिए बल्कि इस दिशा में शीघ्र कदम भी उठाना चाहिए। जीवन और चिकित्सा बीमा प्रीमियम पर जीएसटी हटाना सिर्फ राजकोषीय नीति का मामला भर नहीं है, बल्कि देश के लोगों के स्वास्थ्य और कल्याण की सुरक्षा के लिये प्रतिबद्धता भी दर्शाता है। सरकार यदि बीमा प्रीमियम पर जीएसटी को हटाने व आयकर में छूट में वृद्धि करे तो देश के लोगों में जीवन व सेहत बीमा लेने का उत्साह बढ़ेगा।

राजनीतिक तापमान कम करने का समय आ गया है



से गंगा साफ नहीं होगी, अपितु इसके प्रदूषण के मूलभूत कारणों को जानकर उन्हें समाप्त करने के प्रयास ईमानदारी से करने एवं कवाने होंगे।

अभी हाल ही में %उत्तरप्रदेश प्रदूषण नियंत्रण मंडल% की रिपोर्ट देखकर %राष्ट्रीय हरित प्राधिकरण% (एनजीटी) की प्रधान खंडपीठ ने कहा है

कि प्रयागराज में ही गंगा का पानी पीने एवं आचमन के योग्य नहीं है। %केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण मंडल% के अनुसार अध्ययन की गई 521 नदियों में से 351 प्रदूषित पाई गई। इन नदियों के प्रदूषण-स्तर की गणना कर उस हिसाब से बजट में पैसा दिया जाना था। एक करोड़ किसानों को प्राकृतिक खेती के संदर्भ में सिंचाई के लिए जल एवं भूमि की उर्वरता पर ध्यान देना होगा। प्राकृतिक खेती में यदि प्रदूषित पानी से सिंचाई की गई तो फिर वह कितनी प्राकृतिक रहेगी? %राष्ट्रीय पर्यावरण अभियांत्रिकी संस्थान (नीरी),% नागपुर ने दो वर्ष पूर्व अध्ययन कर बताया था कि देश की लगभग 30 प्रतिशत भूमि में उत्पादकता समाप्त हो गई है। बाढ़-नियंत्रण एवं सिंचाई हेतु आबंटित 11.500 करोड़ रुपये भी कम ही लगते हैं, क्योंकि बाढ़ से हानि काफी अधिक होती है। शहर एवं बाहरी क्षेत्रों में बाढ़ नियंत्रण हेतु हरियाली विशेषकर पेड़ बचाना जरूरी है, परंतु पेड़ शहर एवं जंगल दोनों जगह कम हो रहे हैं। शहरों में विकास के नाम पर तो जंगलों में विद्युत, रेल, सड़क, बांध एवं खनन कार्य की परियोजनाओं के नाम पर काटे जा रहे हैं।

23 जुलाई को केन्द्रीय वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण में देश का 2024-25 का 48.21 लाख करोड़ रूपयों का बजट पेश किया था। बजट के जो नौ आधार कृषि, कौशल-विकास, मानव-संसाधन विकास, मेन्यूफैक्चरिंग सेवाएं, इंफ्रास्ट्रक्चर, शहरी-विकास, नवाचार शोध व विकास, ऊर्जा-सुरक्षा एवं आर्थिक सुधार बताये गये, उनमें पर्यावरण की समस्याएं एवं सुधार कहीं नजर नहीं आया। %केन्द्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय% को दिया गया 3330.37 करोड़ रूपयों का आबंटन देश के विंगडे पर्यावरण के हालातों के मद्देनजर काफी कम है। संगठन %आयक्यूएआर% ने इसी वर्ष के प्रारंभ में अपनी रिपोर्ट में बताया था कि विश्व के 10 सबसे प्रदूषित शहरों में 09 हमारे देश के हैं तथा सबसे ज्यादा प्रदूषित 10 देशों में हमारा देश तीसरे स्थान पर है। देश की 96 प्रतिशत आबादी प्रदूषित वायु में सांस ले रही है। वर्ष 2019 में देश के 138 शहरों में शुरू किये गये %राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम% के तहत तय किया गया था कि वर्ष 2024-25 तक %वायु गुणवत्ता सूचकांक% (एक्यूआय) घटाकर 50 के लगभग लाया जाएगा। इसी संदर्भ में मार्च 2022 में संसदीय समिति की रिपोर्ट में कहा गया था कि ज्यादातर शहरों में वायु गुणवत्ता में सुधार काफी कम हुआ है, अतः बजट बढ़ाया जाए, कार्य में पारदर्शिता लाए तथा समाज की भागीदारी बढ़ाई जाए। 30 लाख से ज्यादा आबादी वाले 14 शहरों को विकास हेतु 11.11 लाख करोड़ रूपए आबंटित किये गए हैं। ये शहर पर्यावरण को महत्व देकर वायु एवं जल प्रदूषण, नियंत्रण, जलस्रोतों के संरक्षण, हरियाली विस्तार एवं वर्षा-जल पुनर्भरण पर ध्यान दें तो आदर्श शहर बन सकते हैं। जलस्रोत एवं नदियों के विकास के तहत गंगा सफाई हेतु 30033.83 करोड़ रुपये आबंटित किये गए हैं। बजट में पैसे देने



आ गया है मानसून। मतलब खूब सारी बारिश और टर्-टर् करते मेंढक, मम्मी के हाथ का बना गर्म सूप और कागज की नाव तैराने का समय। ऊपर से सोने पर सुहागा यह कि स्कूल भी अभी बंद ही हैं, इसलिए तुम्हारे तो वारे-न्यारे हो गए हैं। तुम तो इस मौसम में खूब मस्ती करते हो, ये हमें पता है, पर क्या तुम्हें पता है कि जानवर-पक्षी क्या करते हैं? वो कैसे मजे करते हैं। चलो आज जरा घर से बाहर निकलें और इनकी दुनिया में चलें...

सिंग ट्रेक पर हवा से बातें करती कार दौड़ाने की बात हो या आर्मी द्वारा वार फील्ड में गोलियों की तड़तड़ बौछार करने वाले मुकाबले की, वीडियो गेम की दुनिया में पलक झपकते ऐसे रोमांचक दृश्य पैदा किए जा सकते हैं। यदि यह कल्पना ज्यादा बेहतरीन और सच के करीब हो तो! इस बार के गेम एक्सपो यानी ई-3 में आपको इसी खातिर को पूरा करने की कामयाब कोशिश की गई। इस रोचक मेले में हर बड़ी कंपनी ने नए गेम, नए कंसोल पेश किए। उन्होंने दावा किया

कि उनके ये नए उपकरण पुरानी सीमाओं को तोड़ देंगे। यहां हजारों खरीदारों ने शिरकत की। एक से बढ़कर एक वीडियो गेम और इससे जुड़ी टेक्नोलॉजी की प्रदर्शनी लगाई गई। गेम के दीवानों की भीड़ के बीच वीडियो गेम के लेटेस्ट ट्रेड पर भी चर्चा हुई...

एक्सबॉक्स की धूम

जापानी गेम कंपनी निंटेंडो अपने फैंस को लुभाने के लिए हमेशा कुछ न कुछ नया करती रहती है। यही वजह है कि गेम एक्सपो में भी लोगों ने निंटेंडो को हाथोंहाथ लिया। इसकी पुरानी लोकप्रियता बरकरार रही। बदले में निंटेंडो ने अपने चाहने वालों को कुछ खास तरह के गेम उपहार में दिए, जैसे- 'लिटिल ऑफ जेल्डा', 'स्प्लान' आदि। इसके अलावा, कैप्टन टोड ट्रेजर

ट्रेजर कुछ ऐसे गेम हैं, जिन्हें खेलने का अनुभव पहले से कहीं ज्यादा मजेदार है। इसी तरह, एमीबो लाइन, एक ऐसा गेम है, जो रियल वर्ल्ड के खिलौने मारियो से कनेक्ट करता है और इसे कहीं ज्यादा बेहतरीन बनाता है।

जलवा निंटेंडो का

जापानी गेम कंपनी निंटेंडो अपने फैंस को लुभाने के लिए हमेशा कुछ न कुछ नया करती रहती है। यही वजह है कि गेम एक्सपो में भी लोगों ने निंटेंडो को हाथोंहाथ लिया। इसकी पुरानी लोकप्रियता बरकरार रही। बदले में निंटेंडो ने अपने चाहने वालों को कुछ खास तरह के गेम उपहार में दिए, जैसे- 'लिटिल ऑफ जेल्डा', 'स्प्लान' आदि। इसके अलावा, कैप्टन टोड ट्रेजर

ऑक्विलस है बेस्ट

ई 3 में सबसे अधिक चर्चा हुई उस हेडसेट की, जिसे

आपने बहुत से पौधों के बारे में देखा और सुना होगा। कुछ पौधे ऐसे होते हैं जिन्हें अगर देखें तो व्यक्ति देखता ही रह जाए, वहीं कुछ पौधे इतने भयावह होते हैं कि उनके पास जाने की कल्पना भी मनुष्य नहीं कर सकता। लेकिन क्या आपने कभी किसी ऐसे पौधे के बारे में सुना है जो बिल्कुल बॉल की तरह दिखता हो। जी हां, साउथ अफ्रीका में यूफोर्बिया ओबेसा नामक पौधा पाया जाता है, जिसे दूर से देखने पर आभास होता है कि मानो कोई बेसबॉल हो। यूफोर्बिया ओबेसा सिर्फ साउथ अफ्रीका के उत्तरी केप प्रांत के जंगलों में ही पाया जाता है। इस प्लांट को खोजने का श्रेय समरसेट पूर्व में स्थित गिल कॉलेज के वनस्पतिशास्त्री पीटर मेकोवेन को जाता है। उन्होंने पहली बार इसे 1897 में ग्राफ रैनेट के पास पाया। इसके आकार के कारण ही इसे बेसबॉल प्लांट नाम से जाना जाता है। यह दक्षिण अफ्रीका के सबसे रसीले पौधों में से एक है। इसका विकास काफी धीमी गति से होता है। इसके फली पर केवल 2-3 ही बीज होते हैं। इसकी सुंदरता हर किसी का मन मोह लेती है। इसकी बाहरी सतह पर लगभग आठ लकीरें उभरी हुई नजर आती हैं, जिससे इसकी सुंदरता में चार-चांद लग जाते हैं। यह देखने पर हरे रंग का प्रतीत होता है परंतु जब यह सीधे तौर पर धूप के संपर्क में आता है तो इसके लाल और बैंगनी क्षेत्र भी साफ तौर पर दिखाई देते हैं। बेसबॉल प्लांट का ऊपरी सिरा नहीं होता। इसके ऊपरी सिरे के स्थान पर छोटे-छोटे फूल होते हैं। हालांकि इसमें कांटे नहीं होते लेकिन इससे निकलने वाला दूधिया पदार्थ विषैला होता है। बेसबॉल प्लांट का डायमीटर अर्थात् व्यास 6से लेकर 15 सेंटीमीटर तक होता है। इसका व्यास इसकी उम्र पर आधारित होता है। युवावस्था में

मानसून

में ये भी गाते गुनगुनाते नहाते हैं..

कानों पर लगाते ही आप श्रद्धा वरुचुअल रियलिटी की दुनिया में खो जाते हैं। बेस्ट हेडसेट की इस होड़ में सोनी ने अपने लेटेस्ट प्रोजेक्ट मॉरफ़ीयस डिवाइस का डेमो भी दिया। यह ऐसा प्रोजेक्ट है, जिसमें हेडसेट को अत्याधुनिक बनाने का प्रयास किया गया है। पर इससे भी बेहतर साबित हुआ ऑक्विलस हेडसेट, जो वरुचुअल रियलिटी को कहीं ज्यादा सच के करीब ले जाता है। इसकी मदद से 'एलियन : आइसोलेशन', अ मारियो स्टाइल गेम 'लकीज टेल' जैसे गेम को सबसे ज्यादा पसंद किया गया।



बैटलफील्ड हार्डलाइन, स्पलाटून और जस्ट डांस नाउ को ज्यादा पसंद किया गया।

खेलें सीटिंग पोजिशन में

कुछ साल पहले तक मोशन-डिटेक्टिंग गेम डिवाइस हमें अपनी जगह से उठकर इधर-उधर मूव करने पर मजबूर कर देता था। पर निंटेंडो का शुक्रिया अदा करना होगा कि इससे इस परेशानी से निजात दिला दी। निंटेंडो का वाई (6 और माइक्रोसॉफ्ट का काइनेक्ट (Xbox 360) बैटकर खेलने की सुविधा देता है। हां, बिना काइनेक्ट के एक्सबॉक्स वन के जरिए आप एक जगह बैटकर कहीं ज्यादा आरामदायक तरीके से खेल एनर्जॉय कर सकते हैं। इस तरह, ई-3 में सीटिंग गेम को सपोर्ट करने वाली टेक्नोलॉजी को मूव करने वाले डिवाइस से कहीं ज्यादा पसंद किया गया।

मल्टीप्लेयर या सोलो

'इवोल्व', 'रेनबो सिक्स : सीज' निंटेंडो का प्वाइंटबॉल कॉम्पिटिशन 'स्पलाटून', ऐसे कई सोलो गेम हैं, जिन्हें आप अकेले खेल सकते हैं। सोनी का 'द ऑर्डर' भी इसी प्रकार का रोचक गेम है। पर यदि आप कहीं ज्यादा रोमांचक और थ्रिलिंग एक्सपीरियंस के साथ वीडियो गेम खेलना चाहते हैं, तो बेहतर होगा इसके लिए आप अपने कुछ खास दोस्तों की तलाश करें। दरअसल, मल्टीप्लेयर गेम खेलने का आनंद ही कुछ और है। ई-3 में प्रशंसकों के बीच मल्टीप्लेयर वीडियो गेम का उत्साह ज्यादा दिखा और इसे भविष्य में सोलो गेम से ज्यादा पसंद किया जाएगा, गेम विशेषज्ञों ने यह भविष्यवाणी भी की। टॉप मल्टीप्लेयर गेम के तौर पर इवोल्व, रेनबो,

तीन हृदय वाली कटलफिश



मछलियों की हजारों प्रजातियां हैं लेकिन जो बात कटलफिश में है, वह दूसरी मछलियों में कहां! यह सेफलोपोडा वर्ग में आती है। यह समुद्री किनारों के उथले पानी में रहती है। इसकी लंबाई 1.8मीटर तक हो सकती है। कटलफिश कई मायनों में विचित्र है। जहां हर प्राणी के शरीर में एक ही हृदय होता है, वहीं इसके तीन हृदय होते हैं। गिलों के पास दो हृदय होते हैं जिनका काम अशुद्ध रक्त को गिलों में भेजना है। वहां से यह रक्त तीसरे हृदय में जाता है और फिर शरीर के विभिन्न हिस्सों में पहुंचता है। यह एकमात्र ऐसी मछली है जिसके रक्त का रंग लाल न होकर नीला होता है। इसका कारण इसके रक्त में हीमोग्लोबिन की बजाय हीमोसाइनिन नामक

कटलफिश कई मायनों में विचित्र है। जहां हर प्राणी के शरीर में एक हृदय होता है, वहीं इसके तीन हृदय होते हैं। गिलों के पास दो हृदय होते हैं जिनका काम अशुद्ध रक्त को गिलों में भेजना है। वहां से यह रक्त तीसरे हृदय में जाता है और फिर शरीर के विभिन्न हिस्सों में पहुंचता है...

पदार्थ होता है। हीमोग्लोबिन में लोहा होता है जबकि हीमोसाइनिन में तांबा। तांबे की वजह से इससे रक्त का रंग नीला होता है। आमतौर पर कटलफिश समुद्री किनारों पर उथले पानी में निवास करती है। कटलफिश बसंत या ग्रीष्म ऋतु में अंडे देती है जिनकी संख्या 100 से 300 तक होती है। इस मछली के शरीर का रंग कल्पित होता है तथा शरीर पर कुछ धारियां और धब्बे भी होते हैं। गिरगिट की भांति इनमें भी अपने शरीर का रंग बदलने की अद्भुत क्षमता होती है। जब सूर्य की रोशनी इन पर पड़ती है तो इनका रंग काफी चमकदार दिखता है। यह दो मीटर तक लंबी हो सकती है। दुश्मनों से अपनी रक्षा करने का इसका तरीका भी गजब का है। जब कोई शत्रु इन पर आक्रमण करने की कोशिश करता है तो ये अपने शरीर से काले रंग का एक पदार्थ उस पर छोड़ती हैं जो धुएँ के रूप में वातावरण में फैल जाता है। इस बीच वह दुश्मन की नजर से ओझल हो जाती है।

बेसबॉल प्लांट का डायमीटर अर्थात् व्यास 6सेमी. से लेकर 15 सेमी. तक होता है। इसका व्यास इसकी उम्र पर आधारित होता है। युवावस्था में इसकी आकृति गोल होती है, परंतु विकास के विभिन्न चरणों में इसका आकार बदलता जाता है



इसकी आकृति गोल होती है, परंतु विकास के विभिन्न चरणों में इसका आकार बदलता जाता है। जैसे-जैसे यह बड़ा होता जाता है इसकी आकृति बेलनाकार हो जाती है। इसकी दूसरी सबसे बड़ी खूबी यह है कि बेसबॉल प्लांट में जल को संरक्षित करने की अद्भुत क्षमता होती है। गर्मी के दिनों और सूखे के समय में यह जल इनके बहुत काम आता है। हालांकि इसे अपने विकास के लिए बहुत अधिक पानी की आवश्यकता नहीं होती। एक समय था जब यह पौधे बहुतायत मात्रा में पाए जाते थे लेकिन इसकी सुंदरता ही इसके लिए घातक सिद्ध हुई। इनकर अवैध शिकार और संग्रह शुरू हो गया जिसके चलते आज इसकी प्रजाति संकटग्रस्त है।

बॉल की तरह दिखने वाला पौधा

इनकी बची हुई संख्या के संरक्षण हेतु राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बहुत से कदम उठाए जा रहे हैं। एक अनुमान के मुताबिक, वर्तमान में केवल 500 मेच्योर बेसबॉल प्लांट ही शेष हैं। भले ही यह प्रजाति संकटग्रस्त हो लेकिन इसके पैतृक निवास स्थान पर बेसबॉल प्लांट की खेती करना लोगों के लिए आम बात है। बड़ी मात्रा में इस प्लांट की खेती, नर्सरी व बोटैनिकल गार्डन इस बात को सुनिश्चित करते हैं कि बेसबॉल प्लांट की खरीद-फरोख्त और संग्रह के बावजूद भी इसे विलुप्त होने से बचाया जा सकता है।

बागडे ने राजघाट में महात्मा गांधी और शहीदों को दी श्रद्धांजलि

एजेंसी नई दिल्ली। राजस्थान के राज्यपाल हरिभाऊ क्रिसनराव बागडे रविवार प्रातः यहां राजघाट पर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और देश के लिए अपने प्राण न्योछावर करने वाले शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित कर उन्हें नमन किया। बाद में श्री बागडे ने विजय घाट पर बनी पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की 'सदैव अटल' समाधि पहुंचकर उन्हें भी अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

रामपुर व आनी के क्षेत्र में आई प्राकृतिक आपदा से अथाह नुकसान: बिदल

शिमला। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के प्रदेश अध्यक्ष डॉ राजीव बिदल ने कहा कि रामपुर व आनी के क्षेत्र में आई प्राकृतिक आपदा से अथाह नुकसान हुआ है। समेज गांव का भयावह दृश्य जब हमने देखा तो दुख की सीमा न रही। डॉ. बिदल ने कहा कि एक हज़ार-भरा गांव जिसमें 22 मकान थे, सभी 22 मकान अर्द्धराशि में 12-00 बजे के बाद तुफानी गति से जो पानी, पत्थर, मलवा, बड़े-बड़े पेड़ बहते हुए आए और सभी मकानों को एक साथ अपने साथ बहाकर ले गए। हड़बड़ाहट में कुछ लोग दौड़ भागकर इधर-उधर अपनी जान बचा पाए परन्तु 36 जाने अभी भी लापता हैं। परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि उनके सुरक्षित होने की कोई संभावनाएं दूर-दूर तक दिखाई नहीं देती। तीन बालिकाएं ऐसी जो वॉलीबॉल में नेशनल खेलने वाली थी, लापता हैं। गांव का स्कूल, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, सामुदायिक भवन, पावर हाऊस सब समाप्त हो गए। ऐसी भयावह त्रासदी कल्पना से परे है।



हरियाणा के राज्यपाल दत्तात्रेय, आंध्र के मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू ने यामिनी कृष्णमूर्ति के निधन पर शोक व्यक्त किया

हैदराबाद। हरियाणा के राज्यपाल बंडारू दत्तात्रेय और आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन चंद्रबाबू नायडू उन राजनीतिक नेताओं में शामिल थे जिन्होंने भरतनाट्यम की दिग्गज यामिनी कृष्णमूर्ति के निधन पर अपनी संवेदना व्यक्त की। दत्तात्रेय ने यहां एक बयान में शास्त्रीय नृत्य की दुनिया में यामिनी कृष्णमूर्ति के योगदान को याद किया और प्रार्थना की कि भगवान दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें। यामिनी कृष्णमूर्ति के निधन पर दुख व्यक्त करते हुए, नायडू ने कहा कि 1940 में आंध्र प्रदेश के मदनपल्ली में पैदा हुई भरतनाट्यम की दिग्गज ने तिरुमाला तिरुपति देवस्थान (टीटीडी) की 'अष्टना नर्तकी' (निवासी नर्तकी) के रूप में काम किया था। उन्होंने एक्स पर कहा कि यामिनी कृष्णमूर्ति ने विदेशों में कुचिपुड़ी नृत्य को प्रसिद्धि दिलाई। उन्होंने कहा कि उनके निधन से जो शून्यता आई है, उसे भरा नहीं जा सकता। केंद्रीय गृह राज्य मंत्री बंदी संजय कुमार ने कहा कि शास्त्रीय नृत्य में यामिनी कृष्णमूर्ति का योगदान अविस्मरणीय है। उन्होंने कहा कि दिवंगत दिग्गज ने नृत्य विद्यालय की स्थापना करके कई लोगों को नृत्य का प्रशिक्षण दिया। भरतनाट्यम की दिग्गज यामिनी कृष्णमूर्ति का दिल्ली के अपोलो अस्पताल में निधन हो गया।

मौसम विभाग ने मध्य प्रदेश, मध्य महाराष्ट्र, गुजरात, कोंकण और गोवा में तेज बारिश का जारी किया रेड अलर्ट

नई दिल्ली। मौसम विभाग ने मध्य प्रदेश, मध्य महाराष्ट्र, गुजरात, कोंकण और गोवा में तेज बारिश का रेड अलर्ट जारी किया है। छत्तीसगढ़, पूर्वी राजस्थान, उत्तराखंड, तटीय कर्नाटक, पश्चिम बंगाल के तराई हिमालय क्षेत्र, सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश, असम, मेघालय, नागालैंड, मणिपुर, मिजोरम, त्रिपुरा और बिहार में भारी बारिश का अर्रिज अलर्ट जारी किया है। मौसम विभाग ने कहा कि पश्चिम बंगाल के गांगेय क्षेत्र और उससे सटे झारखंड में निम्न दबाव क्षेत्र बना हुआ है।

केन्द्र ने दिया हरसंभव मदद का भरोसा, चारधाम यात्रा जल्द शुरू : धामी

नैनीताल। उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि केंद्र सरकार आपदा की घड़ी में पूरी तरह से प्रदेश के लोगों के साथ खड़ी है और राज्य सरकार अभी तक 12000 श्रद्धालुओं को रेस्क्यू कर चुकी है। हल्द्वारी दौरे पर पहुंचे श्री धामी ने प्रकरारों से बात करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री, गृह मंत्री, सड़क परिवहन मंत्री और रक्षा मंत्री ने हर संभव मदद का भरोसा दिया है। राहत और बचाव कार्य के लिए केंद्र की तर्फ से चिन्तन और एमआई हेलीकाप्टर उपलब्ध कराया गया है। लगातार लोगों को रेस्क्यू करने का काम किया जा रहा है।



योगी सरकार में दोषी को कोई भी नहीं दे सकता संरक्षण - मंत्री स्वतंत्र देव सिंह

एजेंसी गाजीपुर। सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष और सांसद अखिलेश यादव ने अयोध्या रेप कांड पर डीएनए टेस्ट की मांग की है। उनकी इस मांग पर भाजपा नेता और योगी सरकार में जल शक्ति मंत्री स्वतंत्र देव सिंह की प्रतिक्रिया सामने आई है। उन्होंने कहा कि योगी के शासनकाल में जो भी दोषी पाया जाता है, उस पर कठोर कार्रवाई की जाती है। दोषी कोई भी नहीं बचा सकता है और न ही उसका कोई सहयोग कर सकता है। कोई भी व्यक्ति अगर कानून के साथ खिलवाड़ करता है, या फिर जनता के साथ बदसलूकी करता है, तो उसके खिलाफ हमारी सरकार कठोर कदम उठाती है। दरअसल समाजवादी पार्टी के एक्स अकाउंट से एक पोस्ट किया गया, इसके जरिए अखिलेश यादव ने



कहा है कि अयोध्या के भद्रसा मामले में बिना डीएनए टेस्ट के भाजपा का आरोप दुराहस पूर्ण माना जाएगा। कुकृत्य के मामले में जिस पर भी आरोप लगा है, उसका डीएनए टेस्ट कराकर इंसाफ का रास्ता

अयोध्या की घटना दुखद, पीड़िता व आरोपी के साथ भाजपा नेताओं का होना चाहिए नार्को टेस्ट - शिवपाल यादव

एजेंसी इटावा। उत्तर प्रदेश के अयोध्या के भद्रसा में 12 वर्षीय लड़की के साथ रेप की घटना को लेकर सपा के राष्ट्रीय महासचिव शिवपाल यादव ने बड़ा बयान दिया है। उन्होंने घटना की कड़े शब्दों में निंदा करते हुए पीड़िता, आरोपी व मामले को तूल दे रहे भाजपा के नेताओं के नार्को टेस्ट की मांग की। शिवपाल ने कहा कि अयोध्या में उप चुनाव होने वाला है, इसलिए मामले को हवा दी जा रही है। भाजपा से जुड़े लोग इस तरह की घटनाओं

को अंजाम करा सकते हैं। ऐसे में जहां-जहां उपचुनाव होने हैं, वहां-वहां सपा के नेताओं और कार्यकर्ताओं को सावधान रहना चाहिए। किसी एक वर्ग को बदनाम करना मुख्यमंत्री के लिए ठीक नहीं है। वो किसी एक खास वर्ग के नहीं, पूरे प्रदेश के सौंप हैं। रेप कांड से जुड़े लोगों पर ईमानदारी के साथ कार्रवाई होनी चाहिए। उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने एक्स पोस्ट का जवाब देते हुए शिवपाल यादव ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर लिखा, मैं अयोध्या की घटना की कड़े

चिकित्सा महाविद्यालयों में प्रदान की जाएगी विश्व स्तरीय स्वास्थ्य सेवाएं: मुख्यमंत्री

एजेंसी शिमला। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद सिंह सुक्खू ने आज यहां डॉ. राजेंद्र प्रसाद चिकित्सा महाविद्यालय टांडा, जिला कांगड़ा तथा इंदिरा गांधी चिकित्सा महाविद्यालय शिमला की समीक्षा बैठक की अध्यक्षता करते हुए कहा कि प्रदेश सरकार राज्य के चिकित्सा महाविद्यालयों को सशक्त करने के लिए साधन और संसाधनों को व्यापक स्तर पर सृजित और सुदृढ़ करेगी। उन्होंने कहा कि महाविद्यालयों में विशेषज्ञ चिकित्सकों और पर्याप्त स्टाफ की समुचित तैनाती सुनिश्चित की जाएगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि स्वास्थ्य संस्थानों को भविष्य की जरूरतों और तकनीक के आधार पर सुदृढ़ करने तथा संसाधन सृजन पर बल दिया। उन्होंने चिकित्सा महाविद्यालयों में स्नातकोत्तर विषयों की सीटों की संख्या बढ़ाने के लिए आवश्यक प्रक्रिया पूर्ण करने के निर्देश भी दिए। उन्होंने सभी स्वास्थ्य



संस्थानों में कमियों को चिह्नित कर उनका उचित समाधान सुनिश्चित करने के भी निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि गुणात्मक चिकित्सा देखभाल के लिए छह मरीजों के अनुपात पर एक स्टाफ नर्स तैनात की जाएगी। मुख्यमंत्री ने डॉ. राजेंद्र प्रसाद चिकित्सा महाविद्यालय टांडा की कार्यप्रणाली की समीक्षा करते हुए कहा कि अस्पताल में चिकित्सकों से परामर्श के लिए प्रतीक्षा अवधि कम

की जाएगी और परामर्श अवधि बढ़ाई जाएगी, जिसके लिए पर्याप्त संख्या में चिकित्सक तैनात किए जाएंगे।

मरीजों के पंजीकरण के लिए पंजीकरण कांस्ट्रक्चर की संख्या भी बढ़ाई जाएगी ताकि लोगों को चिकित्सक से परामर्श के लिए अधिक इंतजार न करना पड़े। बैठक में बताया गया कि टांडा चिकित्सा महाविद्यालय में वर्ष 2023 में मेडिसिन विभाग में 72,069 मरीजों,

राजद हमेशा से झूठ बोलना, धोखा देना, घपले घोटाले और विनाश की परिचयक रहें है : अरविन्द सिंह

एजेंसी पटना। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश प्रवक्ता अरविन्द कुमार सिंह ने कहा है कि कांग्रेस, राजद को अपनी विफलताओं को छिपाने के लिए लोगों को गुमराह करना बंद कर देना चाहिए। क्योंकि वे ही हैं जिन्होंने आजादी के बाद से बिहार पर शासन किया व मानव विकास सूचकांक में इसे सबसे निचले पायदान पर ला खड़ा किया। आरक्षण कानूनों को नौबत अनुसूची में शामिल करने की मांग भी धामक है। क्योंकि इस संबंध में सुप्रीम कोर्ट का पहले से ही स्पष्ट फैसला है। सर्वोच्च न्यायालय ने फैसला दिया है कि नौबत अनुसूची में शामिल किसी भी कानून को चुनौती भी दी जा सकती है।बीजेपी प्रवक्ता ने कहा कि न्यायमूर्ति वाई.के. सभरवाल की अध्यक्षता वाली संविधान पीठ ने यह आदेश दिया था जिसमें नौ न्यायाधीशों की पीठ ने 11 जनवरी, 2007 को को एल्हो बनाम तमिलनाडु राज्य व अन्य मामले में सर्वसम्मति से फैसला सुनाया था। जिसमें संविधान के 'मूल संरचना



सिद्धांत' को बरकरार रखा गया था, और न्यायाधीशों को ऐसे किसी भी कानून की समीक्षा करने का

वकालत की है। जबकि झूठ बोलना धोखा देना और किसी को ठगना यह राजद से सीखना चाहिए। जब 2023 में जातीय जनगणना मा मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार जी ने करवाया तो राजद इसमें कहां थी। इसके पहले बिहार में राजद के राष्ट्रीय अध्यक्ष लालू यादव जी के शासनकाल में और कांग्रेस के कार्यकाल में जातीय जनगणना बिहार में क्यों नहीं करवाया जब मा मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार जी ने जातीय जनगणना कराने का काम किया और भाजपा का भी समर्थन था। जब मा मुख्यमंत्री जी ने जब नौकरी, रोजगार देना चालू किया तो राजद, अपना पीठ अपने थपथपाने का काम कर रही है। जबकि जब से राजद सरकार से हटी है तब से बिहार में पुनः सुशासन का माहौल है। राजद जब जब शासन में रही है बिहार में बेसुराग अपराध बढ़ने का काम हुआ है क्योंकि राजद अपराध और अपराधियों, माफियाओं के संरक्षण के लिए जानी जाती है घपले घोटाले और नौकरी के बदले जमीन लेने के लिए राजद जानी जाती है।

पप्पू यादव ने साधा नीतीश कुमार पर निशाना, कहा- अब वे बूढ़े हो गए हैं

एजेंसी बेगूसराय। बेगूसराय में पुर्णिा के सांसद पप्पू यादव ने कहा कि नीतीश कुमार अब बूढ़े हो गए हैं। बिहार में माफिया और अधिकारी सरकार चला रहे हैं, इसलिए बिहार की यह स्थिति है। शनिवार शाम पटना से कटिहार जाने के दौरान बेगूसराय के पावर हाउस चौक पर पप्पू यादव का कार्यकर्ताओं ने गर्मजोशी से स्वागत किया। इस दौरान उन्होंने प्रकरारों से कहा, नीतीश कुमार बुजुर्ग हो गए हैं, उम्रदराज हो गए हैं। बिहार सरकार को माफिया और अधिकारी चला रहे हैं,



तो उसमें हम क्या करें। हम तो रोज कह रहे हैं कि अपराध को खत्म करने की जरूरत है। खास की खौफ खत्म हो चुका है। पुलिस प्रशासन नाम की कोई चीज बिहार में नहीं बची है। पूरा बिहार अपराधी और माफिया के भरोसे है। पप्पू ने भ्रष्ट अधिकारियों को वीडियो बनाने पर बचाने वाले का नाम गुप्त रखने और उस व्यक्ति को 25 हजार रुपए का इनाम देने की घोषणा की।

उन्होंने राहुल गांधी के बयान का समर्थन करते हुए कहा कि जो सत्ता में है, वे इंडी का उपयोग सही के लिए नहीं, बल्कि विपक्ष को परेशान करने के लिए करता है। राहुल गांधी ने इस संबंध में पूरी गंभीरता के साथ जो कहा है, वह सही कहा है। बेगूसराय में कांग्रेस के विधान परिषद सदस्य मदन मोहन झा ने भी बिहार में बढ़ते अपराध को लेकर नीतीश कुमार पर हमला बोलते हुए कहा कि बिहार में हर रोज हत्या, लूट बलात्कार की घटना हो रही है, लेकिन पुलिस प्रशासन इसे रोकने में विफल है। मदन मोहन झा बेगूसराय के एक दिवसीय दौरे पर पहुंचे थे और वहां लॉ कालेज के कार्यक्रम में शामिल हुए थे।

तमिलनाडु में हाथियों की संख्या 3,063, नवीनतम गणना का आकलन

चेन्नई। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम. के. स्टालिन Tamil Nadu Chief Minister M.K. Stalin ने कहा कि राज्य में हाथियों की संख्या में पिछले साल के मुकाबले 100 की बढ़ोतरी हुई है। एक बयान में मुख्यमंत्री ने कहा कि 2023 की हाथी जनगणना रिपोर्ट में तमिलनाडु के जंगलों में हाथियों की संख्या 2,971 थी, जबकि 2024 में जंगली हाथियों की संख्या 3,063 थी। केरल, कर्नाटक, तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश को मिलाकर तीन



दिवसीय समकालिक हाथी जनगणना 23,24 और 25 मई को आयोजित की गई थी। बयान में कहा गया है कि तमिलनाडु में 26 वन प्रभागों में फैले 681 ब्लॉकों में हाथियों की आबादी की जांच की गई। तमिलनाडु वन विभाग के अनुसार, तीन दिवसीय जनगणना के दौरान 8,652 वर्ग किलोमीटर वन भूमि को पैदल कवर किया गया। तीन दिवसीय जनगणना में वन निरीक्षकों, गाइडों, रेंजर्स और वन्यजीव गैर सरकारी संगठनों से लिए गए स्वयंसेवकों सहित 2,178 वन कर्मियों ने भाग लिया।

रीवा में स्कूल से घर जा रहे बच्चों के ऊपर गिरी मकान की दीवार, चार की मौत

एजेंसी रीवा। मध्य प्रदेश के रीवा जिले में एक दर्दनाक हादसा हो गया। एक इमारत की दीवार गिरने से चार बच्चों की मौत हो गई। यह घटना मध्य प्रदेश के रीवा जिले के गढ़ थाना क्षेत्र की है। जंजर इमारत की दीवार बच्चों पर उस समय गिर गई, जब वे स्कूल से घर लौट रहे थे। अधिकारियों के अनुसार, दीवार गिरने के बाद उसके मलबे में पांच बच्चे दब गए। स्थानीय लोगों ने सभी बच्चों को मलबे से बाहर निकाला और अस्पताल पहुंचाया। लेकिन इलाज के दौरान चार बच्चों की मौत हो गई। घटना के बाद मौके पर बड़ी संख्या में लोग जमा हो गए। रीवा जिले के पुलिस महानिरीक्षक महेंद्र सिंह सिंघरवार ने बताया कि बच्चे सनराइज पब्लिक स्कूल के थे और घर जा रहे थे, तभी दीवार उनके ऊपर गिर गई। मृतक बच्चों की पहचान

अंकिता गुप्ता (5), मान्या गुप्ता (7), सिद्धार्थ गुप्ता (5) और अनुज प्रजापति (5) के रूप में हुई है। भारी बारिश के बाद एक मकान ढहने से एक ही परिवार के तीन वर्षीय बच्चे सहित दो बच्चों की मौत हो गई



फिलहाल घटना की जांच जारी है। इससे पहले शुक्रवार रात मध्यप्रदेश के नरसिंहपुर जिले के एक गांव में और पांच घायल हो गए। यह घटना गाहखारा तहसील के रामपुरा गांव में हुई।

बिजली कटौती को लेकर कांग्रेस का प्रदर्शन, नहीं हुआ सुधार तो सड़क पार्टी सड़क पर उतरेगी

बस्ती। जनपद में पिछले कई दिनों से विद्युत कटौती से आम जनमानस पूरी तौर से त्रस्त है। बिजली कटौती ने न केवल लोगों की मुश्किलें बढ़ा दी हैं बल्कि बारिश न होने से किसानों की भी मुश्किलें बढ़ती नजर आ रही है। जनता के जनप्रतिनिधि इस मुद्दे पर भले ही मौन है। लेकिन कांग्रेस पार्टी बिजली कटौती को लेकर मुखर दिख रही है। जनपद में अघोषित विद्युत कटौती को लेकर आज कांग्रेस पार्टी द्वारा विरोध प्रदर्शन किया गया।बस्ती जिले के शास्त्री चौक से सरकार के खिलाफ नारेबाजी करते हुए कांग्रेस पार्टी के पदाधिकारी व कार्यकर्ता जिलाधिकारी कार्यालय पहुंचे और जापन सौंपा है। कांग्रेस जिला अध्यक्ष ज्ञानेंद्र पांडे ज्ञानू ने चेतानावी देते हुए कहा यदि बिजली व्यवस्था में सुधार नहीं हुआ तो पार्टी सड़कों पर उतरेगी।



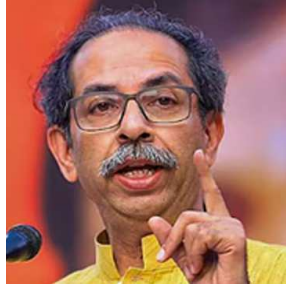
काशी विश्वनाथ मंदिर में फर्जी दरोगा पकड़ाया

वाराणसी। काशी विश्वनाथ मंदिर में पुलिस की वरद में एक फर्जी दरोगा पकड़ा गया है। वह पूजा के लिए लाइन में लगा हुआ था। आरोपी का नाम अभय सिंह है जो जालीन का रहने वाला है। उसने बताया कि आसानी से प्रवेश पाने और पूजा करने के लिए वह पुलिस की वरद में आया था। वाराणसी के संयुक्त पुलिस आयुक्त डॉ. के. एजीलरसन ने बताया कि फर्जी टू-स्टर इम्पेक्टर की वरद पहनकर मंदिर परिसर में एक युवक लाइन में खड़ा था। वहां मौजूद सुरक्षाकर्मियों को उसकी हरकतों पर शक हुआ और थोड़ी पूछताछ के बाद दरोगा ने जालीन बताया। उसने थाने का नाम नहीं बताया। इसके बाद थाने का बैच और नाम पूछा तो वह भी नहीं बता सका। फर्जी दरोगा को रोकने के बाद वहां उपस्थित दरोगा को मामले की जानकारी दी गई।

अहमद शाह अब्दाली के राजनीतिक वंशज हैं अमित शाह - उद्धव ठाकरे

एजेंसी पुणे। शिवसेना (यूबीटी) प्रमुख उद्धव ठाकरे ने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह पर लीखा हमला किया और उन्हें पानीपत की लड़ाई में मराठों को हराने वाले अफगान शासक अहमद शाह अब्दाली का 'राजनीतिक वंशज' करार दिया। पुणे में पार्टी कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए उन्होंने भाजपा पर सरकार पर नियंत्रण बनाए रखने के लिए राजनीतिक दलों में फूट डालकर 'पावर जिहाद' में लिस होने का भी आरोप लगाया। ठाकरे ने कहा, 'अहमद शाह अब्दाली भी शाह थे और अमित शाह भी। नवाज शरीफ के साथ केक खाने वाले हमें हिंदुत्व के बारे में सिखाएंगे।' ठाकरे ने भाजपा की आलोचना की और उन पर पार्टियों के भीतर विभाजन पैदा करने का आरोप

लगाया, उन्होंने शिवसेना और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) में विभाजन का हवाला दिया।



उन्होंने पार्टी कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा, अगर मुसलमान हमारे साथ हैं और हमने उन्हें अपना हिंदुत्व समझाया है, तो हम (भाजपा के अनुसार) औरंगजेब फैसल क्लब हैं, फिर आप जो कर रहे हैं वह सत्ता जिहाद है। इसके अलावा, ठाकरे ने एकनाथ शिंदे सरकार पर

पीएम मोदी के दौरे के बाद काजीरंगा में बड़े पर्यटक - असम के मुख्यमंत्री

एजेंसी गुवाहाटी। असम के मुख्यमंत्री हिमंत स्विसा सरमा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा मार्च में काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान और बाघ अभयारण्य (केएनपीटीआर) का दौरा करने के बाद यहां आने वाले पर्यटकों की संख्या में भारी वृद्धि हुई है। नरेंद्र मोदी मार्च में काजीरंगा

राष्ट्रीय उद्यान में रात बिताने वाले देश के पहले प्रधानमंत्री बने। अपनी यात्रा के दौरान उन्होंने हाथी और जीप सफारी का आनंद लिया और वन अधिकारियों को पर्यटकों की संख्या बढ़ाने के लिए सुझाव दिए। मुख्यमंत्री सरमा ने कहा, हम के दिनों में, असम में पर्यटकों की संख्या में रिकॉर्ड वृद्धि हुई है। बीच, असम सरकार ने काजीरंगा में एक लज्जरी होटल स्थापित करने के लिए टाटा समूह के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए।सरमा ने कहा कि राष्ट्रीय उद्यान में पर्यटकों की आमद बढ़ाने के लिए यह पहल की गई है। मुख्यमंत्री ने एक पोस्ट में कहा, क्षेत्र में पर्यटन को विकसित करने और राज्य में पर्यटकों और आगंतुकों को और अधिक आकर्षित करने के लिए प्रधानमंत्री के प्रयासों को ओगे बढ़ाते हुए, हमने काजीरंगा में 5-सितारा होटल की स्थापना के लिए एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। यह होटल आगंतुकों को विश्वस्तरीय अनुभव प्रदान करेगा और उन्हें असम में अधिक समय बिताने के लिए प्रोत्साहित करेगा।

घर की सीढ़ियों को प्लांट्स की मदद से कुछ इस तरह करें डेकोरेट हरा-भरा लगेगा घर



आज के समय में हर व्यक्ति अपने घर में प्लांट्स को जगह देने लगा है। भले ही उसका घर स्पेशियस हो या फिर छोटा, यह प्लांट्स किसी भी घर को बेहद खूबसूरत बनाते हैं। इतना ही नहीं, अमूमन लोग अपनी सुविधा व स्पेस को देखते हुए हैंगिंग गार्डनिंग से लेकर बालकनी व टेरेस में भी गार्डनिंग करना काफी पसंद करते हैं। लेकिन घर का एक एरिया ऐसा भी है, जहां पर अगर प्लांट्स लगाए जाएं तो पूरे घर का मेकओवर हो सकता है और फिर इसके बाद आपको अलग से किसी अन्य एरिया में प्लांट्स लगाने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

यह एरिया है आपकी सीढ़ियां। घर की सीढ़ियों को अक्सर नजरअंदाज कर दिया जाता है, लेकिन वास्तव में यही सीढ़ियां आपके पूरे घर का लुक बदल सकती हैं। अगर आप इन्हें एक नेचुरल व ब्यूटीफुल टच देना चाहती हैं तो वहां पर गार्डनिंग करना एक अच्छा आईडिया है। आप सीढ़ियों पर उन प्लांट्स को लगाएं, जिन्हें सीधी धूप या बहुत अधिक रख-रखाव की आवश्यकता ना हो। तो चलिए आज इस लेख में हम जानते हैं कि आप अपने घर में सीढ़ियों को प्लांट्स की मदद से किस तरह और भी अधिक खूबसूरत बना सकती हैं—

वर्टिकल गार्डनिंग

जब सीढ़ियों पर प्लांटिंग करने की बात हो तो ऐसे में वर्टिकल गार्डनिंग करना एक अच्छा आईडिया है। यह वास्तव में काफी कम स्पेस लेता है, लेकिन इस तरह आप अपनी सीढ़ियों के एरिया को पूरी तरह से ट्रांसफॉर्म कर सकती हैं। आप कोशिश करें कि सीढ़ियों की एक साइड की दीवार पर आप वर्टिकल गार्डनिंग के लिए स्टैंड को हेंग करें और उसमें बेहद ही खूबसूरत स्मॉल साइज के पौधे लगाएं। यह देखने में बेहद ही ब्यूटीफुल लगेगा।

यूं दें एलीमेंट लुक

अगर आप अपनी सीढ़ियों को एक बेहद ही एलीमेंट तरीके से सजाना चाहती हैं तो आप पॉटिंग प्लांट्स को सीढ़ियों पर रखें। खासतौर से, अगर आपकी सीढ़ियां वुडन की हैं तो आप कॉन्ट्रास्टिंग कलर के एक विंग साइज पॉट को सीढ़ी पर रख सकती हैं। हालांकि, अगर आप ऐसे अपनी सीढ़ियों को सजा रही हैं तो अन्य पॉट्स को घर के किसी दूसरे कोने में प्लेस करें।

स्नेकप्लांट्स लगेंगे बेहद खूबसूरत

यह भी एक तरीका है सीढ़ियों को सजाने का। इसके लिए आप कई पॉट्स में केवल स्नेकप्लांट्स ही लगाएं। अब आप इन पॉट्स को अपनी हर सीढ़ी के उपर रखती जाएं। यह ना केवल देखने में अच्छे लगते हैं, बल्कि आपके घर की हवा को भी नेचुरली प्युरिफाई करने में मदद करते हैं। इसके बाद आपको अलग से एयर प्युरिफायर खरीदने की जरूरत महसूस नहीं होगी।

रेलिंग पर करें फोकस

जब आप सीढ़ियों पर गार्डनिंग कर रही हैं तो सिर्फ उसकी साइड की दीवार या स्टेप्स के साथ ही आप क्रिएटिव नहीं हो सकती, बल्कि रेलिंग का लुक भी बदल सकती हैं। आप मनी प्लांट्स से लेकर अन्य कई प्लांट्स को रेलिंग पर लगा सकती हैं। हालांकि, आप रेलिंग के लिए ऐसे प्लांट्स को चुनें, जिनकी लताएं नीचे की ओर बढ़ती जाएं, ताकि यह आपकी पूरी रेलिंग को कवर कर सकें और देखने में भी खूबसूरत लगें।

सीढ़ियों के नीचे का स्पेस

अगर आपकी सीढ़ियां घर में कुछ इस तरह बनी हुई हैं कि उनके नीचे आपके पास काफी सारा स्पेस बचता है, तो वहां पर भी प्लांटिंग करना अच्छा आईडिया है। अगर आप चाहें तो इस एरिया में एक मिनी गार्डन तैयार कर सकती हैं। आप यहां पर तरह-तरह के खूबसूरत प्लांट्स रख सकती हैं। साथ ही कुछ पेबल्स व लाइटिंग के जरिए इस लुक को और भी खास बनाएं। यकीन मानिए, इस एरिया में जब आप कुछ फुरसत के पल बिताएंगी, तो आपको बेहद ही अच्छा लगेगा।



अगर आपका बच्चा भी ऐसा कर रहा है तो इससे आपको परेशान होने की जरूरत नहीं। इस समस्या को आप कुछ असरदार घरेलू नुस्खे से दूर कर सकते हैं। आइए जानते हैं किन उपायों द्वारा बच्चे की इस परेशानी को दूर किया जा सकता है।

बच्चों को बार-बार यूरिन आने के कारण

- ब्लैडर में इन्फेक्शन
- ब्लड शुगर के कारण
- प्रॉस्टेट ग्रंथि में यूरिन का बढ़ना
- ज्यादा कॉफी या चाय का सेवन
- पेट में कीड़े की समस्या
- मूत्राशय में पेशाब जमा करने की क्षमता कम होना

इसके घरेलू उपचार

अखरोट
2 अखरोट और 20 किशमिश को पीसकर चूर्ण बना लें। 13 हफ्ते तक बच्चे को इसका सेवन कराने से यह समस्या दूर हो जाएगी।

पिस्ता
5 काली मिर्च, 3 पिस्ता और मिनका पीस लें। दिन में दो बार बच्चे को यह चूर्ण खिलाने से उसकी यह परेशानी दूर हो जाएगी।

कई बार बच्चे 1 साल से बड़े होने के बाद भी बिस्तर पर ही पेशाब कर देते हैं। अक्सर पेटेंट्स बच्चे की इस आदत को लेकर परेशान रहते हैं लेकिन बच्चे का बार-बार ऐसा करना किसी परेशानी के कारण भी हो सकता है। कई बार तो बच्चे रात में डर के कारण बिस्तर गीला कर देते हैं लेकिन इसके अलावा बच्चे यूरिन इन्फेक्शन, तनाव, पुरानी कब्जा या असंतुलित हार्मोन के कारण ऐसा करते हैं।

...अगर आपका बच्चा भी करता है बिस्तर गीला



काले तिल
50 ग्राम काले तिल, 25 ग्राम अजवाइन और 100 ग्राम गुड़ को मिलाकर 8-8 ग्राम के लड्डू बना लें। बच्चे को रोजाना सुबह-शाम 1 लड्डू खिलाने से उसकी पेशाब की बीमारी ठीक हो जाएगी।

शहद का सेवन
रोजाना रात को सोने से पहले बच्चे को नियमित रूप से शहद चटा दें।

कुछ हफ्तों में ही बच्चे को बार-बार यूरिन आने की परेशानी से छुटकारा मिल जाएगा।

अजवाइन

1 चम्मच अजवाइन में नमक मिलाकर बच्चे को गर्म पानी से सात खिला दें। दिन में 2 बार इसका सेवन बार-बार यूरिन आने की समस्या से निजात दिलाता है।



जुड़वां बच्चे होने पर दिखते हैं ये लक्षण!

प्रेग्नेंसी हर महिला की जिंदगी का सबसे अहम पल होता है। जब किसी औरत को मां बनने की खुशी मिलती है तो उसके साथ पूरा परिवार खुश हो उठता है। हर औरत के मन में सबसे पहला सवाल उठता है कि उसका होने वाला बच्चा कैसा होगा, वहीं अगर गर्भ में जुड़वा बच्चों के पलने की खबर मिल जाए तो खुशी दोगुणा बढ़ जाती है। जुड़वा बच्चों के होने पर गर्भवती महिला के शरीर में कुछ लक्षण दिखाई देते हैं, जिनके बारे में अक्सर महिलाओं को नहीं पता होता। आज हम आपको उन्हीं लक्षणों के बारे में बताते जा रहे हैं, जिनसे पता चलता है कि गर्भ में जुड़वा बच्चे पल रहे हैं।

मॉर्निंग सिकनेस
गर्भवती महिला को मॉर्निंग सिकनेस रहना भी एक संकेत हो सकता है। 150 प्रतिशत से अधिक महिलाओं को गर्भवस्था के प्रारंभिक चरण में ही मतली और जी मिचलाना महसूस हो सकता है। जिन गर्भवती महिलाओं को जुड़वा बेबी होने वाले होते हैं उन्हींमें बाकी गर्भवती महिलाओं की तुलना में अधिक मॉर्निंग सिकनेस रहती है।

व्हीडिंग और स्पॉटिंग
जिस महिला को जुड़वा होने वाली होती है, उन्हें स्पॉटिंग और व्हीडिंग अधिक होती है। यदि व्हीडिंग के साथ बुखार और लाल खून के घबरे पड़ रहे हैं तो इसमें डरने की कोई बात नहीं है क्योंकि यह जुड़वा बच्चों की निशानी हो सकती है।

वजन बढ़ना
अगर वजन सामान्य गर्भवस्था

की तुलना से अधिक है तो भी जुड़वां बच्चे होने का संकेत हो सकता है। एक औसत गर्भवस्था में सामान्य वजन 25 पाउंड होता है, जबकि जुड़वा गर्भवस्था में वजन 30 से 35 पाउंड के बीच होता है।

अधिक भूख लगना
जुड़वां बेबी होने पर गर्भवती महिला को अधिक भूख लगती है। इसलिए जब आपको साथ भी ऐसा हो तो एक बार डॉक्टर से सलाह जरूर लें क्योंकि यह कोई और बात भी हो सकती है।

पेट में दर्द होना
जुड़वां गर्भवती महिला के सामान्य से ज्यादा पेट में दर्द रहने लगता है यह दर्द शरीर को अधिक वजन होने के कारण भी हो सकता है। इसलिए इस बात के बारे में एक बार डॉक्टर से जरूर बात करें।



बच्चे को घर की बनी चीजें खाने की आदत डालें

बच्चे और हैल्दी फूड तो मानों एक दूसरे से मेल ही नहीं खाते लेकिन बच्चों के विकास के लिए संतुलित भोजन बहुत जरूरी है। इससे न सिर्फ शारीरिक विकास होता है बल्कि भविष्य के लिए भी खाने की अच्छी आदतें फायदेमंद साबित होती हैं। जंक फूड, पिज्जा, बर्गर, चिप्स आदि बच्चे बहुत चाव से खाते हैं लेकिन खाने में ये टेस्टी तो होते हैं लेकिन सेहत को फायदे की जगह नुकसान पहुंचाने का काम करते हैं। जो आने वाले समय में मोटापा, डायबिटीज, हाई बीपी, स्ट्रोक, दिल की बीमारियां आदि होने का कारण बनते हैं। शुरू से ही अगर बच्चे को घर की बनी चीजें खाने की आदत डाल दी जाए तो उसके लिए बहुत अच्छा होगा।

बताएं हैल्दी चीजों का महत्व

बच्चे में अनुशासन, पढ़ाई के साथ-साथ खाने की अच्छी आदतों का होना भी बहुत जरूरी है। उन्हें बताएं कि घर का बना खाना खाना आपके लिए कितना अच्छा है। बाहर का खाना न तो हैल्दी होता है और न ही साफ-सुथरा। कभी-कभी बच्चों को उनकी पसंद का खाना घर पर ही बना कर खिलाएं।

एक जगह बिठा कर करवाएं भोजन
ज्यादातर बच्चों को खाना खाते समय घूमने की आदत होती है जो एक गलत आदत है। बच्चे को रोजाना एक ही जगह पर बिठा कर खाना खिलाएं और बार-बार की बजाए एक ही बार में खाना खाने को कहें लेकिन जबरदस्ती न करें।

टेस्ट में करें बदलाव

एक ही तरह का खाना खाकर बच्चे बोर हो जाते हैं, खाना का टेस्ट बरकरार रखने के लिए उनके डाइट प्लान में कभी स्नेक्स, जूस, सूप, फ्रूट सलाद आदि के साथ खाने में टि्वस्ट लाएं।

कामकाजी महिला हैं तो इस तरह रहें बच्चे के करीब

औरतों को घर और ऑफिस के काम एक साथ संभालने का हुनर बहुत अच्छी तरह से आता है। कई बार समय की कमी के कारण वह अपने बच्चों को उतना समय नहीं दे पाती, जितना कि उसके बच्चों को मां के साथ की जरूरत होती है। बच्चों के साथ समय बिताने का आप उनके दिल की बातों को अच्छी तरह से जान सकते हैं लेकिन आप भी काम के तनाव की वजह से परेशान हैं और बच्चों के कटी-कटी रहती हैं तो कुछ स्मार्ट टिप्स आपके काम आ सकते हैं जो बच्चे के साथ आपके रिश्ते को पहले से भी ज्यादा मजबूत बना देंगे।

बच्चों से करें दिनभर की बातें
रात को आपके पास परिवार के साथ समय बिताने के सबसे अच्छा बहाना होता है। दिन भर की समय पति और बच्चों के साथ ही खाना खाएं। दिन भर की बातें परिवार के साथ शेर करे और उनकी बातें सुनें। इससे बच्चों का आपके साथ प्यार बढ़ेगा और वह आपसे बातें करने के लिए बेताब रहेगा।

काम में लें बच्चों की मदद
बच्चे तब बहुत खुश होते हैं जब आप उनसे किसी बात के लिए मदद मांगते हैं। कभी-कभी प्यार से बच्चे को आपकी मदद करने के लिए कहें जैसे खाना बनकर तैयार है तो उसे डाइनिंग टेबल सजाने के लिए कह सकते हैं। उसकी पसंद की डिश बना रही है तो उससे परीचने के लिए मदद ली जा सकती है।

मस्ती भी जरूरी
बच्चों के करीब आने के लिए उनके साथ कभी-कभी खुद भी बच्चे बनना पड़ता है। आप परिवार के साथ कुछ ऐसे गेम्स खेल सकते हैं जिसे बच्चे पूरी तरह से एंज्वाय भी करें और उन्हें कुछ सीखने के लिए भी मिले। जैसे हॉट सीट, पर्वी पर सारे सदस्यों का नाम लिखें, जिसके नाम की पर्वी निकले वह हॉट सीट पर बैठे और बाकी के सदस्य उससे सवाल पूछें। जो सबसे ज्यादा सही जवाब दे उसे शॉपिंग या पिक्निक का गिफ्ट दिया जा सकता है।



बच्चों के मां-बाप नहीं दोस्त बनें

मोबाइल भी जरूरी
कुछ मां-बाप की सोच है कि मोबाइल फोन से बच्चों पर बुरा प्रभाव पड़ता है। यह पढ़ना-लिखना छोड़ देगे और पूरा दिन सिर्फ मोबाइल फोन पर ही लगे रहेंगे लेकिन बेटियों के पास मोबाइल फोन होना जरूरी है। वह कहीं बाहर गईं और घर वापसी में लेट हो जाएं तो आपको फोन करके बता सकती हैं। इसके अलावा अगर कभी कोई मुसीबत आती है तब भी वह आपको फोन कर सकती हैं। बच्चों का दोस्त बनना बहुत जरूरी है अगर आप उनके साथ दोस्तों जैसा व्यवहार करेंगे तो वह खुल कर आप से हर बात शेर कर पाएंगे। जब आपको उसके बारे में हर बात पता होगी तो आप अपनी बच्ची को परेशानियों से बचा सकते हैं।

थोड़ी दूरी भी बनाएं
बच्चों को स्पेस देना भी जरूरी है हर वक्त उनके पीछे परछाई की तरह लगने रहने से वह परेशान हो जाएगी। इससे आपका बच्चा धीरे-धीरे आप से दूर होता चला जाएगा और कभी आप पर भी भरोसा नहीं करेगा। खुद का भरोसा बच्चे पर बनाने के लिए कुछ समय उसे अकेले भी समय बिताने का मौका दें ताकि उन्हें पता चल सके कि क्या सही है और क्या गलत।

दोस्तों की जानकारी
आपको उनके दोस्तों के बारे में पता होना जरूरी है वह पूरा दिन कोन से दोस्तों के साथ रहती है इस बात की पूरी जानकारी होनी चाहिए। इस बात को सुनिश्चित करें की उसकी संगत अच्छी हो। अपने बच्चे ही नहीं बल्कि उनके दोस्तों से भी दोस्ती बनाएं।

आत्मरक्षा के तरीके
बेटियों को आत्मरक्षा करने के लिए तरीके बताएं। आजकल तो बहुत से स्कूलों और कॉलेजों में बच्चों को कराटे और बहुत-से ऐसे टिप्स बताए जाते हैं जिनसे वह अकेली होने पर अपनी पीछे परछाई की तरह लड़कियों को कभी भी कमजोर या अकेला महसूस न होने दें।

अपनी राय न थोपें
बच्चों को अच्छी बुरी के बातों के बीच फर्क बताना जरूरी है लेकिन उन पर अपनी राय थोपना गलत है। जब आप उनकी हर बात पर अपनी राय थोपेंगे तो वह बहुत-सी बातों को आप छिपाएगी। जो उसके लिए बाद में परेशानियां खड़ी कर सकती हैं।

हट-भाप चाहते हैं कि उनकी बेटियां पहल लिखकर जिंदगी में कामयाब बनें। बेटियों को आगे बढ़ाने के लिए पेटेंट्स उन्हें घर से बाहर दूसरे शहरों में भी पढ़ने के लिए भेजते हैं लेकिन दिन-प्रतिदिन लड़कियों के खिलाफ बढ़ते अपराधों को देखकर कुछ मां-बाप अच्छी लौकरी या पढ़ाई के लिए उन्हें बाहर भेजने से डरने लगे हैं। उन्हें हर पल यही फिक्र सताती है कि उनकी बच्ची सही चलावत है या नहीं। अगर आपके घर में लड़कियां हैं और वह पढ़ाई करने, लौकरी करने या किसी अन्य काम से रोजाना घर से बाहर जाती हैं या घर से दूर कहीं बाहर रहती हैं। तो माता-पिता होने के नाते आपको कुछ सावधानियां बरतने की खास जरूरत है ताकि वह हर छोटी से छोटी बात भी आपसे रोकर कर सके। तो आइए जानते हैं उन बातों के बारे में जो आपकी बच्ची को घर के बाहर भी सुरक्षित रख सकती हैं।

रवि शास्त्री ने जसप्रीत बुमराह की वसीम अकरम से की तुलना, कही यह बात

एजेंसी नई दिल्ली। भारत के पूर्व मुख्य कोच रवि शास्त्री का कहना है कि भारतीय तेज गेंदबाज टी20 विश्वकप में उस जगह पहुंच गए हैं जहां वह गेंद को जहां चाहे, वहां फेंक सकते हैं। उन्होंने बुमराह की तुलना पाकिस्तान के पूर्व तेज गेंदबाज वसीम अकरम से भी की। शास्त्री ने कहा कि उन्होंने (बुमराह) दुनिया को दिखाया कि इसके लिए क्या करना होता है... और आप जानते हैं, आपके करियर में ऐसा अकरम नहीं होता जब आपके हाथ में गेंद हो और आप कहें, 'ऐसा करो और गेंद वैसा करती है। मुझे लगता है कि भारत-पाकिस्तान (मैच) क्योंकि भारत को वहां लड़ने और यह महसूस करने के लिए बनाया गया था कि टूर्नामेंट में आगे बढ़ने के लिए सही संयोजन क्या होना चाहिए। बुमराह ने डेथ ओवरों में अच्छी तरह से सेट रिजवाज को आउट किया था। इस पर शास्त्री ने कहा कि मैं कहूंगा कि एक तो जसप्रीत (बुमराह) को मोहम्मद रिजवान का विकेट मिल गया क्योंकि यह बेहद महत्वपूर्ण था। इससे खेल का संतुलन भारत की ओर मुड़ गया और भारत हावी हो गया। इसके अलावा दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ फाइनल में बुमराह ने अहम समय में जॉन्सन को पवेलियन लौटाया जिससे भारतीय टीम को हावी होने का मौका मिल गया। शास्त्री ने इसे याद करते हुए कहा कि बुमराह ने रिवर्स गेंद फेंकी थी जो कि माको जेन्सन के बल्ले और पैड के बीच में घुस गई। यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण विकेट था।

पाठल 3000 मीटर स्टीपलचेज हीट रेस में 8वें स्थान पर रहीं

पेरिस। महिलाओं की 3000 मीटर स्टीपलचेज में राष्ट्रीय रिकॉर्ड धारक पाठल चौधरी रविवार को यहां पेरिस ओलंपिक में हीट रेस में आठवें स्थान पर रहने के बाद फाइनल राउंड के लिए क्वालीफाई करने में विफल रहीं। 29 वर्षीय पाठल ने 9 मिनट 23.39 सेकंड में दूरी पूरी की, जो उनका सीजन का सर्वश्रेष्ठ समय था, लेकिन 2023 बुधपेट्ट विश्व चैंपियनशिप में उनके राष्ट्रीय रिकॉर्ड 9:15.31 से काफी कम था। तीनों हीट रेस में से प्रत्येक में शीर्ष-पांच फाइनल के लिए क्वालीफाई करते हैं। मौजूदा ओलंपिक चैंपियन युगांडा के पेरथ चेमुताई ने 9:10.51 के साथ हीट नंबर एक जीता, केंया के फेथ चेटोटिच (9:10.57) और जर्मनी के गेसा फेलिसिटास क्राउसे (9:10.68) क्रमशः दूसरे और तीसरे स्थान पर रहे। इससे पाठल का अभियान समाप्त हो गया जो अंकिता ध्यान के साथ महिलाओं की 5000 मीटर दौड़ के लिए भी क्वालीफाई करने में विफल रहीं थीं। पाठल ने 9:23.00 के प्रवेश मानक को पार करने के बाद 3000 मीटर स्टीपलचेज अपने पसंदीदा इवेंट के लिए सीधे योग्यता प्राप्त की थी। ललित बाबर 2016 रियो ओलंपिक में अंतिम दौर के लिए क्वालीफाई करने वाली एकमात्र भारतीय महिला 3000 मीटर स्टीपलचेजर थीं, जहां वह अंतिम 10वें स्थान पर रहीं।

ओलंपिक मुक्केबाजी की विवादित स्कोरिंग ने निशांत से छीना पदक

नई दिल्ली। मुक्केबाजी में विजेता का फैसला एक दूसरे पर घुसों की बरतत से होता है लेकिन इसकी स्कोरिंग प्रणाली आज तक किसी को समझ में नहीं आई और ताजा उदाहरण पेरिस ओलंपिक में भारत के निशांत देव का क्वार्टर फाइनल मुक़ाबला है। निशांत 71 किलोग्राम के क्वार्टर फाइनल में दो दौर में बहादुर बनने के बाद मैक्सिको के मार्को वेरडे अलवारोज से 1-4 से हार गए तो सभी हैरान रह गए। हर ओलंपिक में यह बहस होती है कि आखिर जज किस आधार पर फैसला सुनाते हैं। निशांत का मामला पहला नहीं है और ना ही आखिरी होगा। लॉस एंजेलिस में 2028 ओलंपिक में मुक्केबाजी का होना तय नहीं है और इस तरह की विवादित स्कोरिंग से मामला और खराब हो रहा है। ताक्यो ओलंपिक 2020 में एम सी मेरीकोम प्रो क्वार्टर फाइनल मुक़ाबला हारने के बाद रिग से मायूसी में बाहर निकली थी क्योंकि उन्हें जीत का यकीन था। उन्होंने उस समय कहा था, 'सबसे खराब बात यह है कि कोई रिज्यू या विरोध नहीं कर सकते। मुझे यकीन है कि दुनिया ने इसे देखा होगा। इन्होंने हद कर दी है।' निशांत के हारने के बाद कल पूर्व ओलंपिक कांस्य पदक विजेता विजेंद्र सिंह ने एक्स पर लिखा, 'मुझे नहीं पता कि स्कोरिंग प्रणाली क्या है लेकिन यह काफी करीबी मुक़ाबला था। उसने अच्छा खेला। कोई ना भाई।' अमैच्योर मुक्केबाजी की स्कोरिंग प्रणाली बीते बरसों में इस तरह बदलती आई है और धीरे धीरे जजों ने अपनी विश्वसनीयता खो दी।

जूलियन अल्फ्रेड बनी पेरिस ओलंपिक की फर्टाटा क्वीन

सेंट डेनिस (फ्रांस)। सेंट लूसिया की जूलियन अल्फ्रेड ने प्रबल दावेदार शाकेरी रिचर्डसन को पीछे छोड़कर महिलाओं की 100 मीटर दौड़ का स्वर्ण पदक जीता और इस तरह से पेरिस ओलंपिक खेलों की फर्टाटा क्वीन बनने का गौरव हासिल किया। अल्फ्रेड ने 10.72 सेकंड में दौड़ पूरी करके अपने देश को ओलंपिक का पहला स्वर्ण पदक दिलाया। अमेरिका की रिचर्डसन 10.87 सेकंड का समय लेकर दूसरे जबकि अथायस ने उनकी साथी मैलिसा जेफरसन 10.92 सेकंड के साथ तीसरे स्थान पर रहीं। सेंट लूसिया की एथलीट को जर्मैका की शेली एन फेजर प्राइस के सेमीफाइनल से ठीक पहले हट जाने का भी फायदा मिला। ओलंपिक में 100 मीटर की दौड़ सबसे प्रतिष्ठित दौड़ मानी जाती है।

ओडिशा एफसी ने बीएसएफ एफटी पर जीत के साथ की अपने अभियान की शुरुआत

एजेंसी कोकराझार (असम)। ओडिशा एफसी (ओएफसी) ने 133वें इंडियन ऑयल इंड कप में अपने अभियान की शुरुआत यहां साई स्टेडियम में खेले गए ग्रुप ई मुक़ाबले में बीएसएफ फुटबॉल टीम (बीएसएफ एफटी) पर 5-0 की शानदार जीत के साथ की। मोइराथेम गिक्सन सिंह के दोहरे गोल और राहुल मुखी, अशोकबाम अपोबा सिंह और रोशन फना के दूसरे हाफ में किए गए गोलों ने ओडिशा को आसान जीत दिलाई, क्योंकि वे गोल अंतर के आधार पर नॉर्थ ईस्ट यूनाइटेड एफसी पर ग्रुप स्टैंडिंग में शीर्ष पर पहुंच गए।



मेडल की दौड़ में खिलाड़ियों ने दिखाया दमखम, प्रदेश टीम में बनाएंगे जगह

एजेंसी कानपुर। उत्तर प्रदेश ताइक्वांडो एसोसिएशन और द स्पोर्ट्स हब (टीएसएच) के संयुक्त तत्वाधान में राज्यस्तरीय ताइक्वांडो चैंपियनशिप 2024 का आगाज टीएसएच में हो गया। चैंपियनशिप के उद्घाटन के बाद से खिलाड़ियों ने अलग-अलग वर्ग की प्रतियोगिता में मेडल के लिये जोर आजमाया शुरू कर दी। इसी राज्यस्तरीय प्रतियोगिता से प्रदेश की टीम में जगह बनाने का रास्ता तय होगा। प्रतियोगिता का उद्घाटन टीएसएच के डायरेक्टर्स प्रणव अग्रवाल एवं दिव्याशी अग्रवाल ने किया। इस अवसर पर उत्तर प्रदेश ताइक्वांडो कमेटी के महासचिव व इंडिया ताइक्वांडो के कोषाध्यक्ष रजत आदित्य दीक्षित प्रमुख रूप से उपस्थित रहे। इसके बाद शुरू हुए पहले दिन के मुक़ाबलों

में 18 किलोग्राम भार वर्ग में नोएडा किलोग्राम भार वर्ग में कौशांबी के उल्कार ने गोल्ड, गोंडा के अयाश ने



नाम किया। 21 किलोग्राम भार वर्ग में आगरा के अविनाश ने गोल्ड, फर्रुखाबाद के प्रिंस ने सिल्वर, जौनपुर के श्रेयांश और नोएडा के नरेश ने कांस्य पदक जीता। 23

कैची धाम पहुंचे रिकू सिंह, बाबा नीब करौरी की पूजा-अर्चना कर लिया आर्शीवाद

एजेंसी नैनीताल। भारतीय क्रिकेट टीम के युवा बल्लेबाज रिकू सिंह नैनीताल स्थित कैची धाम पहुंचे। रिकू सिंह ने यहां बाबा नीब करौरी महाराज की पूजा-अर्चना कर आर्शीवाद लिया। रिकू उत्तराखंड मूल के क्रिकेटर आर्यन जुयाल के साथ कैची धाम पहुंचे और यहां आधे घंटे तक मंदिर में रहने के बाद लौट गये। कैची धाम पहुंचने पर मंदिर समिति के प्रबंधक प्रदीप साह और ग्राम प्रधान पंकज निगलिया ने उन्हें बाबा से जुड़े चमत्कारों और रोमांचक किस्सों से अवगत कराया। रिकू सिंह ने कहा कि बाबा के प्रति आस्था उन्हें कैची धाम ले



आई। यहां आकर उन्हें बहुत अच्छा लगा। इस दौरान रिकू सिंह को अपने बीच देख कैची धाम में मौजूद उनके प्रशंसक खुश हो गए और उन्होंने उनके साथ फोटो और सेल्फी ली।

पेरिस ओलंपिक : क्वार्टर फाइनल में हारकर बाहर हुई दीपिका कुमारी

एजेंसी पेरिस। भारतीय तीरंदाज दीपिका कुमारी को चल रहे पेरिस ओलंपिक में व्यक्तिगत महिला तीरंदाजी स्पर्धा के क्वार्टर फाइनल मैच में दक्षिण कोरिया की सुह्योन नाम के खिलाफ हार का सामना करना पड़ा। दीपिका को लेस इन्वेल्डिस में क्वार्टर फाइनल मैच में अपने दक्षिण कोरियाई प्रतिद्वंद्वी के खिलाफ 4-6 (2-0, 0-2, 2-0, 0-2, 0-2) से हार का सामना करना पड़ा पहले सेट में दीपिका कुमारी ने शानदार शुरुआत की और इसे 28-26 से जीत लिया। भारतीय के तीन हिट 9, 10 और 9 थे। दीपिका ने दूसरे सेट की शुरुआत 10 के स्कोर के साथ की, लेकिन बाद में वह निरंतरता बनाए रखने में असफल रही और अपने दूसरे प्रयास में 6 का स्कोर किया। भारतीय तीरंदाज दूसरा सेट 25-28 से हार गईं। महत्वपूर्ण तीसरे सेट में, दोनों तीरंदाजों ने 10 लगाकर शुरुआत की। हालांकि, दीपिका के पास आखिरी प्रयास था क्योंकि उन्होंने अपने आखिरी प्रयास में 10 मारकर तीसरा सेट 29-28 से जीत लिया। दीपिका ने चौथे सेट की अच्छी शुरुआत करते हुए 10 का स्कोर किया लेकिन अपने दूसरे प्रयास में उन्हें 7 पॉइंट से सतोषि कना पड़ा। हालांकि भारतीय तीरंदाज ने तीसरे प्रयास में 10 का स्कोर किया, लेकिन वह कोरियाई खिलाड़ी के खिलाफ 27-29 से सेट हार गईं। चौथे सेट की शुरुआत से पहले दोनों तीरंदाज 5-5 की बराबरी पर थे। दीपिका ने अपने तीन प्रयासों में 9 हिट की हैट्रिक बनाई और अंतिम सेट 27-29 से हार गईं।

चोट से जूझ रही श्रीलंका टीम को लगा एक और झटका, प्रमुख खिलाड़ी हुआ वनडे सीरीज से बाहर

एजेंसी पेरिस। भारत क्रिकेट टीम और श्रीलंका के बीच इन दिनों 3 वनडे मैचों की सीरीज खेली जा रही है। सीरीज के दूसरे मैच से पहले श्रीलंका टीम को बड़ा झटका लगा है। पहले ही चोट के कारण प्लेयर्स की अनुपलब्धता से जूझ रही श्रीलंका टीम का एक और खिलाड़ी चोटिल होकर सीरीज से बाहर हो गया है। ऐसे में टीम की मुश्किलें काफी बढ़ गई हैं। स्पोर्ट्स डेस्क, नई दिल्ली। भारत और श्रीलंका के बीच इन दिनों 3 वनडे मैचों की सीरीज खेली जा रही है। सीरीज का पहला मुक़ाबला टाई रहा था। दूसरे मैच से पहले श्रीलंका टीम को बड़ा झटका लगा है। पहले ही प्लेयर्स की अनुपलब्धता से जूझ रही श्रीलंका टीम का एक और खिलाड़ी सीरीज से बाहर हो गया है। ऐसे में टीम की मुश्किलें काफी बढ़ गई हैं। वाणिदु हरमंगा सीरीज से बाहर : श्रीलंकाई गेंदबाज वाणिदु हरमंगा भारत के खिलाफ वनडे के बाकी मैचों से बाहर हो गए हैं। सीरीज के पहले वनडे के दौरान वह तल्लिथ में नजर आए थे। पहले वनडे के दौरान 10वें ओवर की आखिरी गेंद डालते समय उन्हें बायों हेमिस्ट्रिया में दर्द का अनुभव हुआ। इसके बाद एमआरआई में चोट की पुष्टि हुई है। हरमंगा की जगह जेफरी वेंडर्स को टीम में शामिल किया गया है। सीरीज की शुरुआत से पहले श्रीलंका के तेज गेंदबाज मथीशा पथिराना और दिलशान मयूरुका वनडे सीरीज से बाहर हो गए थे। पथिराना जहां कंधे की चोट से जूझ रहे थे वहीं मयूरुका हेमिस्ट्रिया की चोट के कारण बाहर हो गए थे। उनकी जगह तेज गेंदबाज महम्मद सिराज और एहसान मल्लिगा को श्रीलंका टीम में जगह मिली थी।

नोएडा के प्रिंस और अंश ने जीता गोल्ड, वृंदावन की नंदिनी भी रहीं अव्वल

एजेंसी लखनऊ। साई नोएडा के प्रिंस व अंश चौधरी ने प्रथम नेशनल ट्राय थलॉन एवं एकाथलॉन प्रतियोगिता के पहले दिन हुई एकाथलॉन की प्रतियोगिता में पहले तैराकी की और फिर दौड़ में चुनौती के बाद गोल्डन सफलता हासिल की। उत्तर प्रदेश ट्रायथलॉन एसोसिएशन के भारतीय खेल प्राधिकरण क्षेत्रीय केंद्र, सरोजननगर, लखनऊ में पहले दिन एकाथलॉन की प्रतियोगिता आयोजित की गई। प्रिंस ने चाइल्ड रूप टू (15 से 16 वर्ष) में और अंश ने चाइल्ड रूप 3 (14 से 13 वर्ष) में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया।

सीएमएस रेंजिंट नगर प्रथम के अयान यादव ने 11 मिनट 4 सेकंड



के समय के साथ रजत पदक जीता। सीएमएस अलीनज के कृष्णा जोषी ने 12 मिनट 24 सेकंड के समय के साथ कांस्य पदक मिला। गैलरी रूप -2 (15 से 16 वर्ष, 250 मी.तैराकी, 2 कि.मी. दौड़) में साई नाऊल के प्रिंस ने 10 मिनट 6 समय के साथ मैराथन में स्वर्ण पदक जीता।

डीपीएस जानकीपुरम की अनुश्रुति सिंह ने 17 मिनट 9 सेकंड में रजत पदक जीता। रूप -3 (14 से 13 वर्ष, 250 मी. तैराकी, 1.5 कि.मी. दौड़) डी पी.एस. रूचनगर विस्तार की अनन्या सिंह ने 18 मिनट 8 सेकंड के समय के साथ स्वर्ण व इसी स्कूल की वान्या पालीवाल ने 21 मिनट 7 सेकंड के समय के साथ रजत पदक जीता। बस्ती रूप 1 (17 से 18 वर्ष, 350 मी.तैराकी, 2.5 कि.मी. दौड़) में सीएमएस रूही नगर प्रथम की प्रज्ञा ने स्वर्ण पदक जीता।

इससे पूर्व उद्घाटन समारोह के निदेशक रविन कपूर ने अंतर्राष्ट्रीय पदक विजेता क्रीत प्रकाश मिश्रा, लक्ष्मण अवाई तैराक सुमित प्रकाश उपस्थित रहे। आज के उद्घाटन के दौरान उत्तर प्रदेश ट्रायथलॉन एसोसिएशन के सचिव संदीप मिश्रा ने मेहमानों का स्वागत करते हुए कहा कि रविवार को 4 अगस्त को ट्रायथलॉन में छठे बच्चों (7 से 12 वर्ष) के साथ एकाथलॉन के खिलाड़ियों को शामिल किया जाएगा।

पेरिस ओलंपिक : भारतीय तीरंदाज भजन कौर व्यक्तिगत महिला तीरंदाजी स्पर्धा से बाहर

एजेंसी पेरिस। भारतीय तीरंदाज भजन कौर पेरिस ओलंपिक में इंडोनेशिया को दिव्यांदा चोहरनिसा से हारने के बाद राउंड ऑफ 16 में व्यक्तिगत महिला तीरंदाजी स्पर्धा से बाहर हो गईं। कौर 5-5 (0-2, 2-0, 0-2, 1-1, 2-0) से बराबरी पर थीं और मैच शूट ऑफ पर था। भारतीय तीरंदाज पूरे मुक़ाबले में अपनी इंडोनेशियाई प्रतिद्वंद्वी का पीछा कर रही थीं। निर्णायक चौथे सेट में भजन ने अपने अंतिम शॉट में महत्वपूर्ण 10 का तीर मारा जिससे शूट-ऑफ की नौबत आ गई। 18 वर्षीय तीरंदाज शूट-ऑफ में गेम हार गई क्योंकि वह चोहरनिसा के 9 के



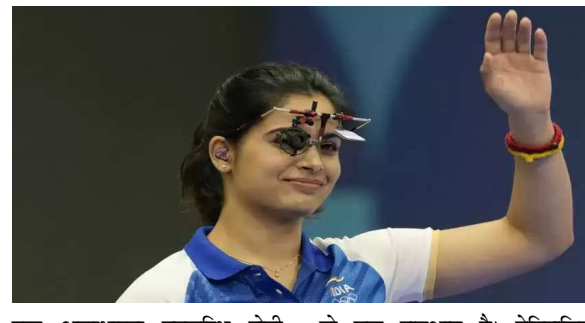
जवाब में 8 हिट करने में सफल रहीं। इस मुक़ाबले से पहले, दूसरी तीरंदाज दीपिका कुमारी जर्मनी की मिशेल

ऑफ 16 के मैच में अपनी जर्मन प्रतिद्वंद्वी के खिलाफ 6-4 (2-0, 1-1, 2-0, 0-2, 1-1) से जीत हासिल की। भारतीय तीरंदाज ने पहले सेट में 27-24 से जीत दर्ज करके शानदार प्रदर्शन किया। दूसरे सेट में दीपिका ने 10, 8 और 9 के हिट लगाए। जबकि उनकी जर्मन प्रतिद्वंद्वी ने लगातार अच्छा प्रदर्शन किया और लगातार तीन 9 हिट लगाए। दीपिका ने वापसी की और तीसरा सेट जीतकर मैच में 5-1 की बढ़त ले ली। भारतीय तीरंदाज लगातार अच्छा प्रदर्शन करने में विफल रही और चौथा सेट हार गईं। हालांकि दीपिका ने पांचवां सेट बराबर कर क्वार्टर फाइनल में जगह बनाई।

अभिनव बिंद्रा ने की मनु भाकर की तारीफ, कहा-आपने पहले ही एक उल्लेखनीय विरासत स्थापित कर ली है

एजेंसी नई दिल्ली। भारतीय निशानेबाज मनु भाकर ने चल रहे पेरिस ओलंपिक में महिलाओं की 25 मीटर पिस्टल निशानेबाजी स्पर्धा में चौथा स्थान हासिल किया, जिसके बाद ओलंपिक स्वर्ण पदक विजेता अभिनव बिंद्रा ने 22 वर्षीय खिलाड़ी की सराहना की। मनु भाकर ने कहा कि मनु भाकर ने पूरे देश को गौरवान्वित किया है, साथ ही उन्होंने उनकी 'अविश्वसनीय' उपलब्धि की सराहना की है। बिंद्रा ने एक्स पर लिखा, मनु, आपने पूरे देश को अपनी असाधारण

उपलब्धि के लिए खड़ा होने और तालियां बजाने पर मजबूर कर दिया है। तीसरा ओलंपिक पदक जीतना



एक असाधारण उपलब्धि होती, लेकिन पेरिस में आपने जो हासिल किया है, वह वास्तव में यादगार है। आपकी यात्रा अथक परिश्रम और

समर्पण का प्रमाण है। मात्र 22 वर्ष की उम्र में आपने एक उल्लेखनीय विरासत स्थापित कर ली है और यह करीब पहुंच गई थीं, लेकिन वह 25 मीटर पिस्टल शूटिंग स्पर्धा में चौथे स्थान पर रहने के बाद यह मौका चूक गई। मनु का सफर तब खत्म हुआ जब उन्हें हंगरी की पूर्व विश्व रिकॉर्ड धारक वेरोनिका मेजर के खिलाफ शूट-ऑफ में उतरना पड़ा, क्योंकि वे 28 अंकों पर बराबर थीं। दक्षिण कोरिया की जिन योंग ने शीर्ष स्थान हासिल कर स्वर्ण पदक जीता। फ्रांस की कैमिली जेड्जेवस्की को दूसरे स्थान से सतोषि करना पड़ा। इस बीच, हंगरी की वेरोनिका मेजर तीसरे स्थान पर रहीं। वर्तमान में, भारतीय दल ने पेरिस ओलंपिक में तीन कांस्य पदक जीते हैं और ये सभी निशानेबाजी में आए हैं।

पेरिस ओलंपिक : सात्विक-चिराग के कोच मैथियास बो ने कहा, 'कोचिंग के दिन यहीं खत्म'

नई दिल्ली। मैथियस बो, जिन्होंने पुरुष युगल जोड़ी को सात्विकसाइराग रंकीरड्डी और चिराग शेट्टी को कोचिंग दी थी, ने कहा है कि उनके कोचिंग के दिन खत्म हो गए हैं और वे कम से कम अभी के लिए कहीं और कोचिंग जारी नहीं रखेंगे। लंदन ओलंपिक में रजत पदक जीतने वाले बो ने टोक्यो ओलंपिक से पहले भारत की शीर्ष पुरुष युगल

जोड़ी के साथ अपना कार्यकाल शुरू किया था। डेमास्क के इस खिलाड़ी ने इंडीग्राम पर सात्विक-चिराग को एक भावपूर्ण संदेश लिखा, जब दोनों पेरिस 2024 ओलंपिक के क्वार्टर फाइनल में हार गए, साथ ही उन्होंने कोचिंग से संन्यास की घोषणा भी की। बो ने लिखा, 'मैं खुद भी इस भावना को अच्छी तरह से समझता हूँ। हर दिन खुद को सीमा तक धकेलना, अपने जीवन के सर्वश्रेष्ठ



आकार में रहना, और फिर चीजें वैसी नहीं होतीं जैसी आपने उम्मीद की होती है। मुझे पता है कि आप लोग निराश हैं, मुझे पता है कि आप भारत के लिए पदक जीतना कितना चाहते थे, लेकिन इस बार ऐसा नहीं हो सका। लेकिन आपके पास गर्व करने के लिए सब कुछ है, आपने इस ओलंपिक शिविर में कितनी मेहनत की है, चोटों से जूझते हुए, दर्द कम करने के लिए इन्जेक्शन भी लिए हैं, यह समर्पण है, यह जुनून है और यह बहुत बड़ा दिल है। 43 वर्षीय बो ने लिखा,

मेरे लिए, मेरे कोचिंग के दिन यहीं समाप्त हो जाते हैं, मैं भारत या कहीं और नहीं जा रहा हूँ, कम से कम अभी के लिए। मैंने बर्डमिंटन हॉल में बहुत अधिक समय बिताया है और कोच बनना भी काफी तनावपूर्ण है, मैं एक थका हुआ बूढ़ा आदमी हूँ। बो ने भारतीय खेल प्राधिकरण (साई) और भारतीय बैडमिंटन संघ (बाई) को उनके समर्थन के लिए धन्यवाद दिया।

दो बार की ओलंपिक चैंपियन फेजर चोट के कारण 100 मीटर दौड़ से हटी

एजेंसी सेंट डेनिस (फ्रांस)। ओलंपिक में महिलाओं की 100 मीटर दौड़ में दो बार की स्वर्ण पदक विजेता शेली एन फेजर प्राइस अज्ञात चोट के कारण पेरिस ओलंपिक खेलों की इस स्पर्धा से हट गई हैं। जर्मैका की फेजर प्राइस ने शनिवार को सेमीफाइनल से पहले हटने का फैसला किया। ओलंपिक अधिकारियों के अनुसार उनकी चोट अज्ञात है। टीम मैनेजर हेल्मुट्स वॉट्स ने जर्मैका ऑलिवर से कहा, 'हमें केवल इतनी जानकारी मिली है कि वह चोटिल है। टीम का एक डॉक्टर उनकी स्थिति पर नजर रखे हुए है। फेजर प्राइस ने बीजिंग ओलंपिक 2008 और लंदन ओलंपिक 2012 में 100 मीटर दौड़ में स्वर्ण पदक जीता था। उन्होंने कहा था कि यह उनका पांचवां और अंतिम ओलंपिक होगा। उन्होंने रविवार को सोशल मीडिया पर जारी अपनी पोस्ट में अपने समर्थकों का आभार व्यक्त किया लेकिन अपनी चोट के बारे में खास जानकारी नहीं दी। फेजर प्राइस ने कहा, 'मैं अपनी निराशा को शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकती। मैं जानती हूँ कि मेरी इस निराशा में मेरे समर्थक मेरे साथ हैं।

सुनिधि चौहान

ने बताया वो सच, जिसको कहने से डरती है इंडस्ट्री, खोली काले सच की पोल

कमली' और 'क्रेजी किया रे' से लेकर 'सामी-सामी' तक 2000 से ज्यादा गानों में अपनी आवाज देने वाली सिंगर सुनिधि चौहान, हिंदी म्यूजिक इंडस्ट्री की सबसे बेहतरीन प्लेबैक सिंगर्स में से एक हैं। सुनिधि ने इंडस्ट्री के और भी कई टैलेंटेड सिंगर्स के साथ काम किया है। हाल ही में उन्होंने सिंगिंग इंडस्ट्री में ऑटो-ट्यून के इस्तेमाल से लेकर रियलिटी शोज के सच तक के बारे में इस दौरान खुलकर बात की। उन्होंने रियलिटी शोज को लेकर एक ऐसा सच बताया, जो किसी को भी हैरान कर सकता है। सुनिधि चौहान म्यूजिक इंडस्ट्री की टॉप सिंगर्स में से हैं, जिन्होंने इंडस्ट्री को एक-दो नहीं कई हिट सांग्स दिए हैं। उन्होंने फिल्मों में कई गाने गाए हैं और साथ ही कई रियलिटी शोज में भी बतौर जज नजर आ चुकी हैं। अब इन सिंगिंग रियलिटी शोज को लेकर सुनिधि चौहान ने वो बात की, जिसको कहने की हिम्मत इंडस्ट्री से जुड़े लोग नहीं कर पाते।

रियलिटी शोज पर सुनिधि चौहान ने खुलकर की बात

सुनिधि ने राज शमानी के पॉडकास्ट में रियलिटी शोज को लेकर खुलकर चर्चा की। दरअसल, रियलिटी शोज पर पिछले कुछ सालों से आरोप लगाते आ रहे हैं कि अब ये शो स्क्रिप्टेड होते हैं और इनके विजेता पहले से ही फिक्स्ड होते हैं। शोज पर लगते आ रहे इन्होंने आरोपों को लेकर अब सुनिधि चौहान ने खुलकर बात की, जो पहले खुद भी चर्चित सिंगिंग रियलिटी शो की जज रह चुकी हैं।

बहुत बदल गए हैं रियलिटी शोज

सुनिधि से जब होस्ट ने कहा कि क्या आपको लगता है कि अब रियलिटी शोज अब रियल नहीं होते तो इस पर हामी भरते हुए सुनिधि कहती हैं- 'रियलिटी शो अब बहुत बदल गए हैं, लेकिन पहले ऐसा नहीं था। अगर आपको याद होगा तो पहले दो सीजन में कोई स्टोरी नहीं होती थी। मस्तिष्क होता था, कोई खराब सिंगर आता था, जिसे हम कहते थे आप अगले सीजन में आना। वो सब स्क्रिप्टेड होता था। लेकिन, जो आप वहां सुन रहे हो वही टीवी पर जाता था। वो रियल होता था।'

सब पहले से होता है स्क्रिप्टेड

सुनिधि आगे कहती हैं- 'लेकिन, अब जो आप टीवी पर देख रहे होते हैं वो सब स्क्रिप्टेड होता है। वह ये निश्चित करते हैं कि उनके शो में कोई भी बुरा सिंगर ना हो। फनी लगता है ना कि इसने इतना अच्छा गाया तो फिर ये एलिमिनेट क्यों हो गया। क्योंकि, इस पर तो आप खड़े भी हो गए थे, आप रो भी पड़े। आपने कहा कि आपने ऑरिजनल से भी अच्छा गाया, तो फिर वो अगले एपिसोड में एलिमिनेट कैसे हो गया? क्योंकि, ऑडियंस को आपके शब्दों पर बहुत भरोसा होता है। वह कभी-कभी ऊपर-नीचे हो सकता है, लेकिन उन्हें लगता है कि अगर ये बोल रहे हैं तो सही होगा। फिर जब ऐसे लोगों को निकाल दिया जाता है तो ऑडियंस भी शॉक हो जाती है कि हमने तो इसे वोट किया था, फिर ये कैसे चला गया।'



नंगे पैर 1000 मीटर दौड़ें जान्हवी कपूर, उलझ के क्लाइमैक्स के लिए करना पड़ा ये काम



जान्हवी कपूर इन दिनों अपनी फिल्म 'उलझ' को लेकर चर्चा में हैं। उनको ये फिल्म दो अगस्त को सिनेमाघरों में रिलीज हुई है। फिल्म में जान्हवी के अभिनय को सराहा जा रहा है। इस बीच अब पता चला है कि फिल्म के क्लाइमैक्स सीन के लिए जान्हवी कपूर को भोपाल में एक हजार मीटर तक नंगे पैर दौड़ना पड़ा। जान्हवी कपूर ने फिल्म उलझ में आईएफएस अधिकारी का रोल निभाया है। फिल्म के निर्देशक सुधांशु सरिया ने कहा कि फिल्म का ज्यादातर हिस्सा लंदन में ही फिल्माया गया, लेकिन इसके क्लाइमैक्स के सीन को मध्य प्रदेश के भोपाल में शूट किया गया है। उन्होंने कहा, जिस दिन सीन शूट करना था, उससे पहले ही बारिश के कारण पूरा सेट बर्बाद हो गया था। हमें दोबारा लोकेशन तैयार करना पड़ा और जरूरी सीक्वेंस को शूट करने के लिए हमें बेहद कम वक्त मिला था। सीन की शुरुआत से पहले मैंने और जान्हवी ने सीन के लिए सुहाना के माइंडसेट के बारे में चर्चा की थी।

नंगे पैर दौड़ें जान्हवी कपूर

सुधांशु सरिया ने बताया कि सीन के दौरान जान्हवी कपूर को नंगे पैर ही भागना था। ऊबड़-खाबड़ सड़कों और पतली गलियों में जान्हवी तेजी से दौड़ें और इस दौरान उनके पैर में चोट भी लग गई। पर उन्हें दर्द का एहसास तक नहीं हुआ। हालांकि जान्हवी ने अपना सीन वैसे ही पूरा किया। फिल्म में जान्हवी के किरदार का नाम सुहाना है।

उलझ में जान्हवी कपूर के अलावा गुलशन देवैया, रोशन मैथ्यू, राजेश तैलंग, आदिल हुसैन, मैयांग चैंग, राजेंद्र गुप्ता और जीतेंद्र जोशी जैसे कलाकार नजर आए हैं। फिल्म को सुधांशु ने परवेज शेख के साथ मिलकर लिखा है। फिल्म के डायलॉग्स अतिका चौहान ने लिखे हैं।

फिल्म ने कितने कमाए ?

मिस्टर एंड मिसिज् माही के बाद उलझ जान्हवी कपूर की इस साल दूसरी फिल्म है। हालांकि उलझ को बेहद खराब ऑपनिंग मिली है। फिल्म करीब 1.15 करोड़ रुपये की ही कमाई पहले दिन कर पाई है। बताया जा रहा है कि इस फिल्म का बजट करीब 50 करोड़ रुपये है। ऐसे में फिल्म को इस तरह की शुरुआत मेकर्स के लिए किसी बड़े झटके से कम नहीं है। अब फिल्म के लिए शनिवार यानी आज का दिन और रविवार काफ़ी अहम होने वाला है। अगर वॉकेंड को बेहतर बनाना है तो इन दो दिनों में फिल्म को अच्छा बिजनेस करना होगा।

फिनाले में फिर उठा अरमान और पायल के तलाक का मुद्दा, छलक पड़े दोनों बीवियों के आंसू



बिग बॉस ओटीटी 3 का ग्रैंड फिनाले काफ़ी चर्चा में रहा। इस शो को सना मकबूल ने अपने नाम किया। कुछ लोग उनकी जीत से खुश हैं तो कुछ काफ़ी निराश भी हैं। लेकिन ग्रैंड फिनाले में एक बार फिर से अरमान-कृतिका और पायल का रिश्ता सुर्खियां बटोरता हुआ नजर आया। बिग बॉस ओटीटी 3 में जब अरमान अपनी दोनों बीवियों के साथ आए, तो हर किसी ने उनपर सवाल उठाया। तीनों ने कई दफा अपने रिश्ते को लेकर जवाब दिए। लेकिन ये सिलसिला शो के अंत तक चलता ही रहा। कोई भी अरमान के फैसले सहमत नजर नहीं आया। शो से बाहर होने के बाद कृतिका मलिक से मीडिया बातचीत के दौरान अरमान मलिक और उनकी सबसे अच्छी दोस्त, अरमान की पहली पत्नी पायल मलिक के साथ उनके संबंधों के बारे में सवाल किया गया।

कृतिका ने जवाब के दौरान उस वक्त को भी याद किया जब पायल को तलाक लेने की बात शो के अंदर तक पहुंची थी। जिसे सुनने के बाद वो इमोशनली काफ़ी ब्रेकडाउन हो गई थीं। शो में उन्हें रोते हुए भी देखा गया था। जब उनकी मुलाकात उनकी मां से हुई तो उन्होंने पहले यही पूछा पायल ठीक है।

बिग बॉस ओटीटी 3 का ग्रैंड फिनाले काफ़ी चर्चा में रहा। इस शो को सना मकबूल ने अपने नाम किया। कुछ लोग उनकी जीत से खुश हैं तो कुछ काफ़ी निराश भी हैं। लेकिन ग्रैंड फिनाले में एक बार फिर से अरमान-कृतिका और पायल का रिश्ता सुर्खियां बटोरता हुआ नजर आया। बिग बॉस ओटीटी 3 में जब अरमान अपनी दोनों बीवियों के साथ आए, तो हर किसी ने उनपर सवाल उठाया। तीनों ने कई दफा अपने रिश्ते को लेकर जवाब दिए। लेकिन ये सिलसिला शो के अंत तक चलता ही रहा। कोई भी अरमान के फैसले सहमत नजर नहीं आया।

शो से बाहर होने के बाद कृतिका मलिक से मीडिया बातचीत के दौरान अरमान मलिक और उनकी सबसे अच्छी दोस्त, अरमान की पहली पत्नी पायल मलिक के साथ उनके संबंधों के बारे में सवाल किया गया। कृतिका ने जवाब के दौरान उस वक्त को भी याद किया जब पायल को तलाक लेने की बात शो के अंदर तक पहुंची थी। जिसे सुनने के बाद वो इमोशनली काफ़ी ब्रेकडाउन हो गई थीं। शो में उन्हें रोते हुए भी देखा गया था। जब उनकी मुलाकात उनकी मां से हुई तो उन्होंने पहले यही पूछा पायल ठीक है।



Chapter 2: सुष्मिता सेन के बाद अब आमिर खान करेंगे

रिया चक्रवर्ती

से दिल की बात, वायरल हुई थी दोनों की तस्वीर

रिया चक्रवर्ती ने हाल ही में पॉडकास्ट चलाना शुरू किया है। इस शो को उन्होंने 'चैप्टर 2' नाम दिया है। उनके शो की पहली गेस्ट सुष्मिता सेन थी, और अब आमिर खान उनके शो के दूसरे गेस्ट होंगे।

हाल ही में सुष्मिता सेन ने रिया चक्रवर्ती से दिल की बात की थी। सुष्मिता सेन के साथ रिया चक्रवर्ती का पॉडकास्ट खूब वायरल हुआ था और लोगों ने इसे खूब पसंद भी किया था। अब दूसरे गेस्ट के तौर पर मिस्टर परफेक्टनिस्ट आमिर खान नजर आने वाले हैं। कल ही आमिर खान को रिया चक्रवर्ती के साथ देखा गया था और लोग कन्स्यूज थे कि आमिर और रिया साथ में क्या कर रहे हैं। अब पता चला है कि आमिर और रिया साथ में नजर आने वाले हैं। खबरों के मुताबिक आमिर खान ने रिया के साथ रिकॉर्डिंग कर ली है और जल्द ही इस पॉडकास्ट को रिलीज किया जाएगा।

आपको बता दें, बॉलीवुड एक्ट्रेस रिया चक्रवर्ती ने अपने जन्मदिन के मौके पर अपने पॉडकास्ट की शुरुआत की थी। इसका नाम उन्होंने 'चैप्टर 2' रखा है। जिसका मतलब है नई शुरुआत या जिंदगी में आगे बढ़ना। लोग सुष्मिता सेन के बाद अब रिया के पॉडकास्ट में आमिर खान को देखने के लिए उत्साहित हैं।

वर्क फ्रंट की बात करें तो आमिर खान ने हाल ही में अपकमिंग सोशल कॉमेडी सितारे ज़मीन पर की शूटिंग पूरी कर ली है। वहीं, रिया अपने पॉडकास्ट के नए एपिसोड की तैयारी में जुट गई हैं।

